3 | राजधानी
सड़कों पर उमड़ा जनसैलाब

6 | अभिमत
खामियाजा भुगतता पाकिस्तान

11 | विदेश
केन्या में बांध टूटा, कम से कम 40 लोगों की मौत

12 | स्पोर्ट्स
नाइट राइडर्स ने दिल्ली कैपिटल्स को हराया

RNI NO.UPHIN/2010/36547
वर्ष 14 अंक 188
लखनऊ, मंगलवार, 30 अप्रैल, 2024
पृष्ठ 12 मूल्य ₹ 3
लखनऊ
नगर संस्करण

लखनऊ, नई दिल्ली, रायपुर और फरीदाबाद से प्रकाशित

पायनियर

www.dailypioneer.com

विकसित भारत का लक्ष्य पाने को स्थिर सरकार जरूरी

राष्ट्रीय-10

शाह फर्जी वीडियो केस में तेलंगाना के सीएम को समन

सौम्या शुक्ला। नई दिल्ली

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के छेड़छाड़ किए गए वीडियो पर मामला दर्ज करने के एक दिन बाद दिल्ली पुलिस ने सोमवार को तेलंगाना के मुख्यमंत्री ए रेवंत रेड्डी को 1 मई को जांच में शामिल होने और अपना बयान दर्ज करने के लिए कहा। इस बीच, असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने एक्स पर पत्र लिखकर असम पुलिस द्वारा रीतम सिंह की गिरफ्तारी की जानकारी दी। सिंह कथित तौर पर असम कांग्रेस के वॉर रूम समन्वयक हैं। बगलकोट (कर्नाटक) में एक सार्वजनिक रैली में इस मुद्दे को उठाते हुए, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि लोगों में विभिन्न प्लेटफार्मों पर आने वाली कुछ सूचनाओं को बिना सत्यापन के आगे बढ़ाने की आदत है। उन्होंने कहा, जो लोग चुनाव हार गए हैं या (चुनाव में रहते हुए) हार गए हैं, वे फर्जी वीडियो बनाने के लिए तकनीक का उपयोग कर रहे हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता का दुरुपयोग करते हुए उन्होंने सोशल मीडिया पर मेरी आवाज में गलत बातें डालीं – यह एक बड़ा खतरा पैदा कर रहा है। लोगों से अपील करते हुए कि वे ऐसे फर्जी वीडियो के बारे में पुलिस या भाजपा को सूचित करें और कानूनी कार्रवाई की जाएगी, पीएम ने कहा कि इस देश का कानून लोगों को किसी के साथ ऐसे गेम खेलने की अनुमति नहीं देगा।

भाजपा ने सोमवार को चुनाव आयोग में कांग्रेस के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई, जिसमें आरोप लगाया गया कि उसने चुनाव प्रक्रिया को पटरी से उतारने के लिए गृह मंत्री अमित शाह का एक फर्जी और छेड़छाड़ किया हुआ वीडियो प्रसारित किया और पार्टी के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की। केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव और पार्टी के राष्ट्रीय मीडिया विभाग के प्रभारी अनिल बलूनी सहित एक भाजपा प्रतिनिधिमंडल ने भी तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) के खिलाफ शिकायत की, आरोप लगाया कि मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के नेतृत्व वाली पार्टी हिंसा को हथियार के रूप में इस्तेमाल कर रही है और मांग की कि पोल पैनल राज्य में स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव सुनिश्चित कराए।

हैदराबाद में सोमवार को गृहमंत्री अमित शाह के फर्जी वीडियो मामले में गांधी भवन में कांग्रेस के सोशल मीडिया प्रभारी माने सतीश को नोटिस तामील कराने पहुंचे दिल्ली पुलिस कर्मी

तेलंगाना के मुख्यमंत्री ए रेवंत रेड्डी

दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल ने एक शिकायत के बाद भारतीय दंड संहिता और सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम की विभिन्न धाराओं के तहत मामला दर्ज किया था कि शाह के छेड़छाड़ किए गए वीडियो सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर प्रसारित किए जा रहे थे। सूत्रों के मुताबिक, दिल्ली पुलिस की एक टीम सोमवार शाम तक तेलंगाना में कांग्रेस कार्यालय का दौरा कर सकती है। सूत्रों ने कहा कि पुलिस ने रेड्डी सहित पांच लोगों को नोटिस दिया है, जिन्होंने एक्स पर वीडियो पोस्ट किया था। रेड्डी को अपने मोबाइल फोन के साथ पेश होने के लिए कहा गया है, जिसका इस्तेमाल कथित तौर पर एक्स पर फर्जी वीडियो पोस्ट करने के लिए किया गया था। सूत्रों के मुताबिक गृह मंत्रालय के शीर्ष अधिकारी गहन जांच कर रहे हैं। गृह मंत्री के छेड़छाड़ किए गए वीडियो के संबंध में दिल्ली पुलिस के शीर्ष पुलिस अधिकारियों के साथ उच्च स्तर की बैठकें। सूत्रों ने कहा कि रेड्डी ने वीडियो को एक्स (जिसे पहले ट्विटर के नाम से जाना जाता था) पर साझा किया था। उनसे अपने इलेक्ट्रॉनिक उपकरण लाने को कहा गया है, जिससे वीडियो पोस्ट किया गया था। इसमें उनका फोन भी शामिल है। छेड़छाड़ किए गए वीडियो साझा करने वाले कांग्रेस नेताओं सहित लगभग आधा दर्जन लोगों को भी दिल्ली पुलिस ने तलब किया है।

गृह मंत्रालय के अधीन आने वाले भारतीय साइबर अपराध समन्वय केंद्र द्वारा शाह के छेड़छाड़ किए गए वीडियो के बारे में शिकायत दर्ज करने के बाद स्पेशल सेल ने रविवार को एक एफआईआर दर्ज की थी, जिसमें वह मुस्लिम समुदाय के लिए कोटा खत्म करने की प्रतिबद्धता देते नजर आ रहे हैं। तेलंगाना में धार्मिक आधार पर बदलाव किए गए ताकि ऐसा लगे कि वह सभी आरक्षणों को खत्म करने की वकालत कर रहे थे।

भारतीय साइबर अपराध समन्वय केंद्र के डीसी सिंकू शरण सिंह द्वारा दायर की गई शिकायत में दावा किया गया है कि कुछ छेड़छाड़ किए गए वीडियो समुदायों के बीच वैमनस्य पैदा करने के इरादे से सोशल मीडिया पर प्रसारित किए जा रहे हैं, जिससे सार्वजनिक शांति और सार्वजनिक व्यवस्था प्रभावित होने की संभावना है। सिंह ने पुलिस के साथ वीडियो के लिंक भी साझा किए। स्पेशल सेल की इंटेलिजेंस फ्यूजन एंड स्ट्रैटेजिक ऑपरेशंस (आईएफएसओ) यूनिट ने अब वीडियो के स्रोत और इसे फैलाने वालों की पहचान करने के लिए सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म से संपर्क किया है। सूत्रों ने कहा, हमने मामले की ठीक से जांच करने और मुख्य दोषियों को गिरफ्तार करने के लिए कई अलग-अलग टीमों का गठन किया है। हमने वीडियो के संबंध में एक्स और अन्य सोशल मीडिया को लिखा है। हम वीडियो के स्रोत और इसके लिए जिम्मेदार लोगों दोनों की जांच कर रहे हैं।

सूत्रों के मुताबिक, पुलिस ने तेलंगाना के मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी को 1 मई को जांच में शामिल होने के लिए कहा है और वह राज्य की ओर रवाना हो रहे हैं। अधिकारियों ने रेड्डी सहित पांच लोगों को नोटिस दिया है, जिन्होंने एक्स पर वीडियो पोस्ट किया था। तेलंगाना के सीएम, जो कांग्रेस के तेलंगाना प्रमुख भी हैं, को अपने मोबाइल फोन के साथ पेश होने के लिए कहा गया है, जिसका इस्तेमाल कथित तौर पर एक्स पर फर्जी वीडियो पोस्ट करने के लिए किया गया था। पुलिस संभवत: तेलंगाना में सबसे पुरानी पार्टी के कार्यालय भी जाएगी। (शेष पेज 9)

कर्नाटक के बागलकोट में सोमवार को एक चुनावी रैली के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को सम्मानित किया गया।

देश में धर्म आधारित आरक्षण की योजना बना रही है कांग्रेसः मोदी

पायनियर समाचार सेवा। बागलकोट (कर्नाटक)

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सोमवार को कांग्रेस पर वोट बैंक की राजनीति के लिए देश में धर्म आधारित आरक्षण की योजना बनाने का आरोप लगाया और जोर देकर कहा कि वह किसी भी सूरत में ऐसा नहीं होने देंगे। यहां जिला मुख्यालय में एक चुनावी रैली को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि कांग्रेस का यह प्रस्ताव अल्पसंख्यकों को खुश करने के लिए है क्योंकि अनुसूचित जाति (एससी)अनुसूचित जनजाति (एसटी) और अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) समुदाय अब भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के साथ हैं। उन्होंने कहा, कर्नाटक में कांग्रेस ने संविधान बदलने और एससीएसटी और ओबीसी के अधिकार छीनने का अभियान शुरू किया है। हमारा संविधान धर्म आधारित आरक्षण को स्वीकार नहीं करता है। लेकिन कर्नाटक सरकार ने ओबीसी आरक्षण का एक हिस्सा मुसलमानों को दिया है। उन्होंने कहा, वे (कांग्रेस) इससे संतुष्ट नहीं होंगे। उन्होंने पहले भी अपने घोषणापत्र में धर्म आधारित आरक्षण प्रदान करने के लिए एक कानून लाने की बात कही थी। इस बार भी उनके घोषणापत्र में ऐसा ही संकेत है। मोदी ने कहा कि वह अपने दलित, एससीएसटी और ओबीसी भाई-बहनों को कांग्रेस के इरादों से अवगत कराना चाहते हैं। मोदी ने कहा, ये लोग धर्म के आधार पर, अपने वोट बैंक को सुरक्षित रखने के लिए, आपके उस अधिकार को लूटने की योजना बना रहे हैं जो बाबा साहेब आंबेडकर और संविधान ने आपको दिया है।

रैली में भाजपा के वरिष्ठ नेता बी एस एदियुरप्पा, बागलकोट (बागलकोट) से भाजपा उम्मीदवार पी सी गद्दीगौदर और बीजापुर (बीजापुर) से सांसद रमेश जिगाजिनागी भी मौजूद थे। संसद में एससी, एसटी और ओबीसी के अधिकतर सांसदों के भाजपा के साथ होने का जिक्र (शेष पेज 9)

लखनऊ में पर्चा दाखिल करते रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह। साथ में उप्र के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी

अमेठी संसदीय सीट से नामांकन करतीं केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी। साथ में मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव व अन्य वरिष्ठ नेता

राजनाथ और स्मृति ईरानी ने नामांकन किया दाखिल

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ, अमेठी

भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता एवं रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने सोमवार को लखनऊ संसदीय निर्वाचन क्षेत्र से अपना नामांकन पत्र दाखिल किया। वहीं केंद्रीय मंत्री और भाजपा उम्मीदवार स्मृति ईरानी ने भी आज अमेठी लोकसभा क्षेत्र से नामांकन दाखिल किया। ईरानी ने मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव और अन्य नेताओं के साथ, पर्चा दाखिल करने से पहले गौरीगंज में भाजपा कार्यालय से एक रोड शो किया।

सिंह ने भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के राज्य मुख्यालय से प्रमुख नेताओं और समर्थकों के साथ करीब दो किलोमीटर से अधिक दूरी पर स्थित कलेक्ट्रेट पहुंचकर अपना नामांकन पत्र दाखिल किया। जिला निर्वाचन अधिकारी सूर्यपाल गंगवार की मौजूदगी में नामांकन दाखिल किया गया। निर्वाचन अधिकारी के समक्ष सिंह ने उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी और राज्यसभा सदस्य सुधांशु त्रिवेदी की उपस्थिति में अपना नामांकन पत्र दाखिल किया। सिंह ने सबसे पहले 2014 में लखनऊ सीट से अपना नामांकन पत्र दाखिल किया और विजई हुए। इसके पहले 2009 में वह गाजियाबाद से निर्वाचित हुए थे। 2019 में यहां से उन्होंने समाजवादी पार्टी की उम्मीदवार पूनम शत्रुघ्न सिन्हा को हराकर अपनी जीत बरकरार रखी। रक्षा मंत्री तीसरी बार लखनऊसे अपनी किस्मत आजमा रहे हैं। पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई ने भी प्रतिष्ठित लखनऊ निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया था।

वहीं अमेठी भाजपा प्रत्याशी स्मृति ईरानी के रोड शो को जिलाधिकारी के आदेश पर कलेक्ट्रेट से करीब 200 मीटर पहले ही रोक दिया गया, जहां से ईरानी पर्चा दाखिल करने गईं। रोड शो में उत्तर प्रदेश के मंत्री मयंकेश्वर शरण सिंह और ईरानी के पति जुबिन ईरानी भी शामिल हुए। स्मृति ईरानी ने पिछले लोकसभा चुनाव 2019 में कांग्रेस नेता राहुल गांधी को हराकर गांधी परिवार और कांग्रेस का गढ़ मानी जाने वाली अमेठी सीट जीती थी। कांग्रेस ने अभी तक इस सीट से अपने उम्मीदवार की घोषणा नहीं की है।

इंदौर में सूरत के रिप्ले से कांग्रेस को लगा झटका

पायनियर समाचार सेवा। इंदौर

पिछले 35 साल से इंदौर लोकसभा सीट पर जीत की बाट जोह रही कांग्रेस के उम्मीदवार अक्षय कांति बम ने पार्टी को तगड़ा झटका देते हुए सोमवार को नामांकन वापसी के आखिरी दिन अपना पर्चा वापस ले लिया। उन्होंने भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) का दामन थाम लिया है और जल्द ही पार्टी में औपचारिक रूप से शामिल हो सकते हैं। चश्मदीदों ने बताया कि बम सोमवार को स्थानीय भाजपा विधायक रमेश मेंदोला के साथ जिलाधिकारी कार्यालय पहुंचे और अपना पर्चा वापस लिया। लौटते वक्त वह पत्रकारों के सवालों को अनसुना करते हुए मेंदोला के साथ गाड़ी में बैठकर खाना हो गए। जिलाधिकारी आशीष सिंह ने बम के नामांकन वापस लेने की पुष्टि की। उन्होंने संवाददाताओं को बताया, कांग्रेस उम्मीदवार बम समेत तीन उम्मीदवारों ने आज तय प्रक्रिया के तहत अपना नामांकन वापस लिया। इस प्रक्रिया की वीडियोग्राफी भी कराई गई है।

इंदौर सीट के उम्मीदवारों के लिए नामांकन वापस लेने की आखिरी तारीख 29 अप्रैल (सोमवार) थी। इस क्षेत्र में 13 मई को मतदान होगा और चार जून को मतगणना की जाएगी। इस बीच, प्रदेश के कैबिनेट मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने अपने एक्स खाते पर एक तस्वीर पोस्ट की जिसमें बम उनके साथ कार में बैठे नजर आ रहे हैं।

गाड़ी में उनके साथ भाजपा विधायक मेंदोला भी नजर आए। मेंदोला को विजयवर्गीय का विश्वस्त माना जाता है। विजयवर्गीय ने तस्वीर के साथ लिखा, इंदौर से कांग्रेस के लोकसभा प्रत्याशी अक्षय कांति बम का प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा, मुख्यमंत्री मोहन यादव और प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा के नेतृत्व में भाजपा में स्वागत है। अपना नामांकन वापस लेने के बाद बम भाजपा के स्थानीय कार्यालय पहुंचे। भाजपा की ओर से इस मौके पर एक तस्वीर भी जारी की गई जिसमें उनके साथ राज्य के उप मुख्यमंत्री जगदीश देवड़ा, कैबिनेट मंत्री कैलाश विजयवर्गीय और अन्य पार्टी नेता खड़े दिखाई दे रहे हैं। इस तस्वीर में बम को भाजपा के चुनाव चिह्न कमल वाला अंगवस्त्र पहने हुए देखा जा सकता है। भाजपा सूत्रों ने बताया कि बम जल्द ही औपचारिक रूप से पार्टी की सदस्यता लेंगे (शेष पेज 9)

खालिस्तानी नारे पर कनाडा के दूत को किया तलब

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

सोमवार को कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो की उपस्थिति में एक रैली में कथित तौर पर खालिस्तान के नारे लगाए जाने पर आपत्ति जताते हुए, भारत ने कड़ा विरोध दर्ज कराने के लिए यहां कनाडाई उप उच्चायुक्त को तलब किया। विदेश मंत्रालय के एक बयान में कहा गया है, कनाडा के उप उच्चायुक्त को एक कार्यक्रम में खालिस्तान पर अलगाववादी नारे लगाए जाने के संबंध में आज (सोमवार) विदेश मंत्रालय में तलब किया गया। कार्यक्रम को कनाडा प्रधानमंत्री व्यक्तिगत रूप से संबोधित कर रहे थे। इस आयोजन में इस तरह की परेशान करने वाली कार्रवाइयों को अनियंत्रित रूप से जारी रखने की अनुमति दिए जाने पर भारत सरकार की ओर से गहरी चिंता और कड़ा विरोध व्यक्त किया गया। यह एक बार फिर उस राजनीतिक स्थान को दर्शाता है जो कनाडा में अलगाववाद, उग्रवाद और हिंसा को दिया गया है।

विदेश मंत्रालय ने कहा, उनकी निरंतर अभिव्यक्तियाँ न केवल भारत-कनाडा संबंधों को प्रभावित करती हैं, बल्कि कनाडा में अपने नागरिकों के लिए हिंसा और आपराधिकता के माहौल को भी बढ़ावा देती हैं। यह कड़ी प्रतिक्रिया, टोरंटो से आई उस रिपोर्ट के बाद आई जिसमें कहा गया कि रविवार को खालसा दिवस समारोह में कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो और विपक्षी नेता पियरे पोइलीवरे की मौजूदगी में खालिस्तान समर्थक नारे लगाए गए। इस कार्यक्रम में खालिस्तान जिंदाबाद के नारे लगे, जिसमें एनडीपी नेता जगमीत सिंह और टोरंटो मेयर ओलिविया चाउ भी मौजूद थे। (शेष पेज 9)

टोरंटो में खालसा दिवस समारोह में कनाडा के प्रधान मंत्री जस्टिन ट्रूडो

गौड़ा के पोते पर आरोपों को लेकर घमासान

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

जद (एस) सुप्रीमो पूर्व प्रधानमंत्री एच डी देवेगौड़ा के पोते से जुड़े कथित सेक्स स्कैंडल ने देश भर में बड़े पैमाने पर सियासी हंगामा खड़ा कर दिया है। विपक्षी दलों ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से स्पष्टीकरण मांगा है जो सोमवार को कर्नाटक में थे। भाजपा ने लोकसभा चुनाव में जद (एस) के साथ गठबंधन किया है। हालांकि कथित आरोपी प्रज्वल रेवन्ना से जुड़े मामले में कोई प्रगति नहीं हुई है, लेकिन उनकी तत्काल गिरफ्तारी और उन्हें भारत वापस लाने की मांग की गई है। भाजपा ने अभी तक इस मुद्दे पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी है और कांग्रेस ने जानना चाहा है कि प्रज्वल रेवन्ना को जर्मनी भागने में किसने मदद की।

विपक्ष ने अपना हमला तेज कर दिया क्योंकि मोदी कर्नाटक में अपने चुनाव प्रचार कार्यक्रम में थे और इसलिए पूछा कि भाजपा जद (एस) के साथ अपने गठबंधन के साथ आगे क्यों बढ़ी, जबकि एक भाजपा नेता ने पार्टी की कर्नाटक इकाई के अध्यक्ष को पत्र लिखकर प्रज्वल रेवन्ना के अश्लील वीडियो से भरी पेन ड्राइव मौजूद होने के बारे में जानकारी दी थी। मामला उनकी रसोइये की शिकायत पर दर्ज किया गया था, जिसने आरोप लगाया था कि उनके लिए काम करना शुरू करने के चार महीने बाद रेवन्ना उसका यौन उत्पीड़न करने लगा और उसकी बेटी को वीडियो कॉल करता था तथा उसके साथ अश्लील बातचीत करता था। जद (एस) विधायक और पूर्व मंत्री एचडी रेवन्ना ने सोमवार को कहा कि वह अपने बेटे और हासन के सांसद प्रज्वल रेवन्ना और खुद से जुड़े यौन शोषण के आरोपों की जांच के लिए तैयार हैं और कहा कि अगर आरोप सिद्ध हो गया तो वे कानून के मुताबिक कार्रवाई का सामना करने के लिए तैयार हैं। यह आरोप लगाते हुए कि (शेष पेज 9)

जू के जानवरों को गर्मी से राहत दिलाने के किए जाएंगे उपाय

अर्चना ज्योति। नई दिल्ली

देश के विभिन्न हिस्सों में तापमान बढ़ रहा है और लू के थपेड़े असहनीय होते जा रहे हैं। तापमान के चढ़ते पारे के मद्देनजर केंद्रीय चिड़ियाघर प्राधिकरण (सीजेडए) ने देश भर के चिड़ियाघरों के लिए एक एडवायजरी जारी की है जिससे जानवरों को गर्मी से राहत रहे और वे शांत रहें। इसके तहत किए जाने वाले उपायों में कई प्रकार की निवारक और आपातकालीन कार्रवाइयां शामिल हैं, जिनमें इलेक्ट्रोलाइट युक्त तरल पदार्थ उपलब्ध कराने से लेकर ठंडे शेड, मिस्ट और स्प्रिंकलर स्थापित करना और बंदी जानवरों को बर्फ में फलों या सब्जियों के साथ जमे हुए व्यंजन पेश करना शामिल है। आने वाले दिनों में विभिन्न क्षेत्रों में गर्मी अत्यधिक बढ़ने की आशंका है। केंद्रीय पर्यावरण मंत्रालय के तहत एक स्वायत्त निकाय सीजेडए ने पहले से ही चेतावनी जारी कर दी है कि बढ़ती गर्मी से चिड़ियाघर के जानवरों को खतरा है। इससे उन्हें बेचैनी होना, गर्मी से तनाव, निर्जलीकरण तथा गर्मी से संबंधित अन्य बीमारियों का खतरा है।

अधिकारियों ने मौसम विज्ञान विभाग की नवीनतम सलाह का हवाला देते हुए कहा कि आने वाले दिनों में भीषण गर्मी से पूर्वी भारत के व्यापक क्षेत्रों और पश्चिम बंगाल के गंगा के मैदानी इलाकों के प्रभावित होने का अनुमान है। संभवत: यह 2023 में निर्धारित तापमान के रिकॉर्ड को पार कर जाएगा। कुछ अन्य राज्यों के अलावा बिहार, झारखंड और तेलंगाना

के साथ भी यही स्थिति है। अधिकारियों ने जोर देकर कहा, गरमी के चरम पर जाने की स्थिति में चिड़ियाघर के जानवरों के बचाव को प्राथमिकता देना जरूरी है। बंदी जानवरों की सुरक्षा और आराम सुनिश्चित करने के लिए उठाए जा रहे सक्रिय कदमों का उद्देश्य गर्मी की लहर के कारण होने वाले किसी भी संभावित नुकसान को कम करना है। पशुओं में गर्मी के तनाव को पशु कल्याण और अधिकारों का उल्लंघन माना जाता है। त्रिपुरा के सेपाहिजला जिले में सेपाहिजला प्राणी उद्यान के एक अधिकारी ने उल्लेख किया कि उन्होंने अपने पशुओं के बचाव के लिए पहले ही कई उपाय शुरू कर दिए हैं, जबकि दिल्ली चिड़ियाघर के एक अधिकारी ने कहा कि प्रजातियों के आधार पर अत्यधिक गर्मी जानवरों पर बेचैनी भरा तनाव पैदा कर सकती है और छोटे सरीसृपों से लेकर हाथी जैसे बड़े आकार के पशुओं पर भी लागू होती है। इसलिए, हम सभी जानवरों को अलग-अलग देखते हैं, उनके प्राकृतिक व्यवहार, उनके इतिहास और यहां तक ??कि अगर वे बहुत बूढ़े या जवान हैं तो यह निर्धारित करते हैं कि वे गर्मी को कैसे संभालेंगे और फिर हम इसे उनके लिए ठंडा बनाने के लिए समायोजन करते हैं।

सीजेडए ने छायादार क्षेत्रों में ताजा, ठंडे पानी के साथ कई जल स्रोत उपलब्ध कराने और निरंतर उपलब्धता बनाए रखने के लिए बार-बार रिफिल सुनिश्चित करने के महत्व पर जोर दिया है। सीजेडए के सदस्य सचिव संजय कुमार शुक्ला ने देश के सभी चिड़ियाघरों को जारी की गई एडवाइजरी में कहा है, जानवरों को संभालना दिन के ठंडे हिस्से तक ही सीमित होना चाहिए। रात के जानवरों को दिन के दौरान परेशान नहीं किया जाना चाहिए। पीने के पानी में इलेक्ट्रोलाइट्स मिलाना चाहिए, खासकर कमजोर जानवरों या प्रतिबंधित आहार पर रहने वाले जानवरों के लिए। अधिकारियों को सलाह दी गई है कि वे प्राकृतिक छाया के लिए छायादार (शेष पेज 9)

निष्पक्ष मतदान के लिए आयोग के निर्देशन में निरंतर हो रही ताबड़तोड़ कार्रवाई

अब तक कुल 32977.30 लाख रुपए की शराब, ड्रग्स, बहुमूल्य धातुएं व नकदी की गई जब्त

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

लोकसभा चुनाव-2024 को उत्तर प्रदेश में निष्पक्ष, शांतिपूर्ण व भयमुक्त कराने के लिए राज्य निर्वाचन आयोग की तरफ से निरंतर कार्रवाई की जा रही है। आयोग के निर्देशों का कड़ाई से अनुपालन किया जा रहा है। प्रवर्तन एजेंसियों, उड़नदस्तों की ओर से अवैध शराब, नकदी की जब्ती संबंधी कार्रवाई निरंतर जारी है। इसके तहत 1 मार्च से 28 अप्रैल तक कुल 32977.30 लाख रुपए की शराब, ड्रग्स, बहुमूल्य धातुएं व नकदी जब्त की गई हैद्य सिर्फ 28 अप्रैल की ही बात करें तो प्रदेश में 182.07 लाख रुपए की शराब, ड्रग्स व नकदी पकड़ी गई। उत्तर प्रदेश के मुख्य निर्वाचन अधिकारी नवदीप रिणवा ने बताया कि उत्तर प्रदेश में प्रलोभनमुक्त, समावेशी व सुरक्षित मतदान कराने के लिए आदर्श आचार संहिता प्रभावी है। ऐसे में आबकारी, आयकर, पुलिस, नारकोटिक्स विभाग एवं अन्य प्रवर्तन एजेंसियों की ओर से पहली मार्च से 28 अप्रैल तक कुल 32977.30 लाख रुपए की शराब, ड्रग्स, बहुमूल्य धातुएं व नकदी आदि जब्त की गई हैद्य इसमें 3211.02 लाख रुपए नकद, 4583.70 लाख रुपये की शराब, 21850.88 लाख रुपए की ड्रग्स, 2175.30 लाख रुपए कीमत की बहुमूल्य धातुएं एवं 1156.39 लाख रुपए की अन्य सामग्री जब्त की गई। आबकारी, आयकर, पुलिस, नारकोटिक्स विभाग एवं अन्य प्रवर्तन एजेंसियों द्वारा 28 अप्रैल को कुल 182.07 लाख रुपए कीमत की शराब, ड्रग्स व नकदी जब्त की गई। इसमें 4.39 लाख रुपए नकद, 51.58 लाख रुपए की 18989.75 लीटर शराब, 112.38 लाख रुपए की 441702.58 ग्राम ड्रग्स व 13.72 लाख रुपए कीमत की 5916 ग्राम बहुमूल्य धातुएं जब्त की गईं। 28 अप्रैल को प्रयागराज की फूलपुर विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र में अनुमानित 90.42 लाख रुपए की 361700 ग्राम (361.70 किलोग्राम) ड्रग्स तथा आगरा दक्षिण विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र में 13.71 लाख रुपए अनुमानित कीमत की 5916 ग्राम ड्रग्स पकड़ी गई।

सीआरपीसी के तहत निरोधात्मक कार्रवाई में अब तक पाबंद किए गए 2185577 लोग

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

प्रदेश के मुख्य निर्वाचन अधिकारी नवदीप रिणवा ने बताया कि उत्तर प्रदेश में कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए भारत निर्वाचन आयोग के दिशा-निर्देशों का कड़ाई से अनुपालन किया जा रहा है। मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने बताया कि भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशों के अनुपालन में पुलिस, आयकर, आबकारी, नार्कोटिक्स एवं अन्य विभागों द्वारा कार्यवाही की जा रही है। सघन जॉच के लिए 480 अंतर्राज्यीय चेक पोस्ट तथा 1821 चेक पोस्ट राज्य के भीतर संचालित हैं। 16 मार्च से 28 अप्रैल, 2024 तक पुलिस विभाग द्वारा अपराधिक व्यक्तियों के 535 लाइसेंसी शस्त्र जब्त किये गये। 4692 लाइसेंसी शस्त्रों के लाइसेंस निरस्त कर जमा कराये गये। इसी प्रकार शांति भंग की आशंका में सीआरपीसी के तहत निरोधात्मक कार्यवाही करते हुए 26,03,831 लोगों को पाबन्द किये जाने हेतु नोटिस प्रेषित किये गये है, जिनमें से 21,85,577 लोगों को पाबन्द किया जा चुका है। इसके अतिरिक्त पुलिस विभाग द्वारा 8068 बिना लाइसेंसी शस्त्र, 8168 कारतूस, 2900.32 किलोग्राम विस्फोटक व 439 बम बरामद कर सीज किये गये। पुलिस द्वारा अवैध शस्त्र बनाने वाले 3444 केन्द्रों पर रेड डाली गयी और 152 केन्द्रों को सीज किया गया।

28 अप्रैल, 2024 को पुलिस विभाग द्वारा अपराधिक व्यक्तियों के 04 लाइसेंसी शस्त्र का लाइसेंस निरस्त कर जमा कराया गया। सीआरपीसी के तहत निरोधात्मक कार्यवाही करते हुए 13,791 लोगों को पाबन्द किया गया। साथ ही 74 बिना लाइसेंसी शस्त्र, 61 कारतूस व 04 बम बरामद कर सीज किये गये। पुलिस द्वारा अवैध शस्त्र बनाने वाले 50 केन्द्रों पर रेड डाली गयी और 1 केन्द्र सीज किया गया।

रिणवा ने बताया कि आदर्श आचार संहिता का प्रभावी अनुपालन सुनिश्चित कराने में अब तक सार्वजनिक एवं निजी स्थानों से कुल 12798360 प्रचार-प्रसार सामग्री हटायी गयी। इसमें सार्वजनिक स्थानों से 78,25,064 तथा निजी स्थानों से 49,73,296 प्रचार-प्रसार सामग्री हटायी गयी। इस दौरान सार्वजनिक स्थानों से वालराइटिंग के 8,61,531, पोस्टर के 36,08,621, बैनर के 22,00,111 एवं अन्य 11,54,801 मामलों में कार्यवाही की गयी।

आज का जन सैलाब, 400 पार का प्रमाण: धामी

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने प्रदेश भाजपा अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह चौधरी के साथ भाजपा प्रदेश मुख्यालय में पत्रकार वार्ता को संबोधित करते हुए कहा कि आज जिस प्रकार से लखनऊ की सड़कों पर लोगों का उत्साह देखने को मिला, वह निश्चित रूप से 4 जून को जो परिणाम आने वाले हैं, वो स्पष्ट रूप से उसका प्रमाण है। उन्होंने कहा कि 400 पार का जो नारा है, वह निश्चित रूप से पूरा होगा।

पुष्कर सिंह धामी ने कहा कि अटल जी जब प्रधानमंत्री बने तब लखनऊ तेजी से विकास की ओर अग्रसर रहा और वह अनवरत रूप से जारी रहा। राजनाथ सिंह के कालखंड में जिस प्रकार से यहां हाइवे बने, ओवर ब्रिज बने, तमाम सड़कें बनी, जिस प्रकार से आज मेट्रो चली है वह दर्शाता है कि भाजपा काल में कितना काम हुआ है और यह पहले की तुलना में पूरी तरह से बदला हुआ लखनऊ है। पूरा उत्तर प्रदेश आज तेजी से विकास की ओर बढ़ा है। अयोध्या में आज प्रभु राम का मंदिर तैयार हो गया है तो भव्य और दिव्य काशी के दर्शन आज हमें हो रहे हैं। ऐसे अनेक काम हुए हैं। आज यहां इन्वेस्टमेंट का बूम आया है और ये इन्वेस्टमेंट हब बन गया है। पहले इस राज्य की गिनती बीमारू राज्य के रूप में होती थी लेकिन आज यह देश के उत्तम राज्यों में शुमार हो गया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि एक कालखंड वो था जब यहां गुंडे बदमाशों का राज था। सपा और बसपा की सरकारों में यहां माफियाराज था लेकिन आज उत्तर प्रदेश की कानून व्यवस्था बहुत अच्छी हो गयी है। प्रधानमंत्री के कालखंड में गरीब कल्याण की जो योजनाएं बनी हैं, उनका हर वर्ग को लाभ मिला। 2014 से पहले भी योजनाएं बनी लेकिन उनका लाभ चुनिंदा लोगों को मिलता था। आज जो योजनाएं बनती हैं, उनका हर किसी को लाभ मिल रहा है। कई ऐतिहासिक निर्णय लिए गए हैं जैसे मुस्लिम बहनों को तीन तलाक से मुक्ति मिली है, धारा 370 समाप्त हुआ है। सीएए का कानून बना है। उन्होंने कहा कि, मुझे यह बताते हुए खुशी है कि भाजपा का जो संकल्प पत्र है, उसमें पूरे देश में समान नागरिक सहिंता को देश में लागू करने का संकल्प लिया गया है। उन्होंने कहा कि उत्तराखंड में हम इसे लागू कर चुके हैं। देश की आजादी के बाद उत्तराखंड पहला राज्य है जिसने इसे लागू किया। उन्होंने कहा कि एक तरफ आज जहाँ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में पूरे देश को परिवार मानकर कार्य किया जा रहा है। वहीं दूसरी तरफ ऐसे दल हैं जो अपने परिवारों से बाहर नहीं आ पा रहे, भ्रष्टाचार में ये दल डूबे हुए हैं, तुष्टिकरण करने वाले दल हैं और आज भी वह यही बात कर रहे हैं। मैं कहना चाहता हूँ कि मोदी आरक्षण के बहुत बड़े पैरोकार और समर्थक हैं। जो कार्य आज हुए हैं वो कभी नहीं हुए। इसका उदाहरण है कि देश के राष्ट्रपति के रूप में आदरणीय कोविंद जी का कार्यकाल पूरा हुआ और देश के आदिवासी बहुल इलाके में पैदा हुई द्रोपदी मुर्मू जी देश की राष्ट्रपति हैं। उन्होंने कहा कि देश में एक ही माहौल है और पूरा देश मोदी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाना चाहता है और उसके लिए पूरी तरह से तैयार है। उन्होंने कहा कि लैंड जेहाद के तहत बहुत बड़ा अतिक्रमण था। हमने 5 एकड़ से ज्यादा भूमि अतिक्रमण मुक्त कराई है। यह देवभूमि के स्वरूप को खराब करने की साजिश थी, जिसे हमने रोका। उन्होंने कहा कि जनसंघ की स्थापना के समय से ही समान नागरिक सहिंता का संकल्प लिया गया था और हमने अपनी विधानसभा में पास कराने के बाद प्रदेश में आज लागू किया है। उत्तराखंड की देवतुल्य जनता ने हमें इसका मैनडेट दिया और हमने जनता से जो वादा किया था, उसे पूरा करके दिया है और एक गारंटी हमने पूरी की है। जैसे गंगोत्री से गंगा निकली है, उसी तरह से यूसीसी की गंगा से भी पूरा देश लाभान्वित होगा।

पीडीए की वास्तविक परिभाषा परिवार से बाहर नहीं: केशव

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता एवं प्रदेश के उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने सोमवार को जौनपुर में कहा कि सपा, कांग्रेस और बसपा के नेता घबराए हुए हैं। पीडीए (परिवार डेवलपमेंट अथॉरिटी) ने अभी तक परिवार के पांच सदस्यों को छोड़कर किसी यादव को प्रत्याशी नहीं बनाया है। यूं तो उनके पीडीए का मतलब पिछड़ा-दलित-अल्पसंख्यक होता है लेकिन उसकी वास्तविक परिभाषा परिवार से बाहर नहीं है, केवल परिवार का विकास ही है। उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने लोकसभा जौनपुर से भाजपा प्रत्याशी कृपा शंकर सिंह व मछलीशहर प्रत्याशी भोलानाथ सरोज (बीपी सरोज) के समर्थन में जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि 2014 में मोदी की हवा चल रही थी 2019 में आंधी चली तो 2024 में तूफान चल रहा है। विपक्षियों के हौसले ध्वस्त हैं, वे घरों से बाहर निकलने की हिम्मत नहीं कर पास रहे हैं। मौर्य ने कहा कि न तो संविधान को खतरा है और न ही लोकतंत्र को, खतरा सिर्फ सपा, कांग्रेस और बसपा को अपने भविष्य को लेकर है। इस चुनाव में विपक्षी पार्टियां आईसीयू में पहुंच गई है। कहीं से आक्सीजन नहीं मिल रही। यूपी की सभी 80 सीटें भाजपा जीत रही है। उन्होंने कहा कि हर बूथ से 370 वोट अधिक डलवाने का काम भाजपा कार्यकर्ताओं को करना है। इतना करने से भाजपा उम्मीदवार रिकॉर्ड वोट से जीत जाएंगे।

जो भगवान राम का न हुआ, वह जनता का क्या होगा: चौधरी

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष भूपेंद्र सिंह चौधरी ने सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव के एटा के बयान पर करारा पलटवार किया। उन्होंने कहा कि किसान विरोधी समाजवादी पार्टी को आज अन्नदाताओं की याद आ रही है। यह उस समय कहां थे, जब इनकी ही सरकार में किसान भाइयों की फसल खेतों में सड़ रही थी। उनको अपनी फसल का वाजिब दाम नहीं मिलता था। किसान आत्महत्या करने को मजबूर थे। भाजपा सरकार ने पिछले दस वर्षों में न केवल किसानों की आय में वृद्धि की है, बल्कि किसानों के मसीहा चौधरी चरण सिंह को देश का सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' देकर हर अन्नदाता को सम्मानित करने का काम किया है। विपक्षी दलों पर हमलावर भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि जो भगवान राम का न हुआ, वह जनता का क्या होगा।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि जिन्होंने चीनी मिलों में ताले लगा दिये। अपने फायदे के लिए उन्हें बेच दिया। ऐसे इंडी गठबंधन और सपा वाले भला किसानों का दर्द क्या जानें। इतना ही नहीं कांग्रेस ने बेशर्मी की सारी हदें पार कर दी थीं। इन्होंने किसान भाइयों का कर्ज माफ करने की जगह उनके साथ छलावा किया। भूपेंद्र सिंह चौधरी ने कहा कि जब किसान भाइयों के कर्ज माफ करने की बारी आई तो कांग्रेस ने दो-दो, तीन-तीन सौ रुपये का चेक थमा दिया। जनता चार जून को इंडी गठबंधन और सपा को उनके कर्मों का फल दे देगी। तब वह अपने परिवार के साथ घरों में कैद होने को मजबूर हो जाएंगे। उन्होंने कहा कि जिन्होंने देश में इमरजेंसी लगाकर हर नागरिक से उसका हक छिना, वह आज संविधान की बात करते हैं। यह उनके लिये शोभा नहीं देता है। देश और प्रदेश की जनता सब जानती है। देश की जनता जनार्दन चार जून को अपना फैसला बता देगी। यह वे लोग हैं, जो जनता के फैसले पर भी सवाल खड़ा करेंगे। जो प्रभु राम के अस्तित्व पर सवाल खड़ा कर सकता है, वह कुछ भी कर सकता है।

पायनियर वर्गीकृत

NOTICE

I (Gulab Chandra Dubey) have lost my original allotment & possession letter of property (Plot no. 3/496-R Vikalp Khand - 3 Gomti Nagar Yojna Gomti Nagar Lucknow) during photocopy. Gulab Chandra Dubey - 9453186010

सूचना

सूचित किया जाता है कि मेरे पूर्व में निर्गत पासपोर्ट संख्या A 3036365 में मेरा नाम वासिक मोहम्मद (Wasiq Mohammad) अंकित है जो गलत है। मेरा वास्तविक नाम मोहम्मद वासिक (Mohammad Wasiq) है। अब मुझे इसी नाम से जाना व पहचाना जाए। मोहम्मद वासिक पुत्र स्व. ऐनुल हक निवासी-सी 80 जी.टी.बी नगर, करैली, थाना करैली, परगना व तहसील सदर, प्रयागराज।

सूचना

मेरे हाईस्कूल प्रमाणपत्र में मेरे पिता का नाम त्रुटिवश राजीव कुमार हो गया है, जबकि उनका वास्तविक नाम राजीव कुमार सक्सेना है। जो कि उनके समस्त दस्तावेजों में पहले से दर्ज है। आस्था सक्सेना पुत्री राजीव कुमार सक्सेना, निवासी-33एफ, समर विहार कॉलोनी, आलमबाग, लखनऊ-226005।

सूचना

सूचित किया जाता है कि मेरे पूर्व में निर्गत पासपोर्ट संख्या R-884674 में मेरा नाम मोहम्मद वासिफ जाफरी (Mohammad Wasif jafari) व मेरी माता का नाम आसमा जाफरी (Asma jafari) और मेरे पिता का नाम स्व. ऐनुल हक़ (Einul haq) दर्ज है जो गलत है। सही नाम मोहम्मद वासिफ जाफरी (Mohd. Wasif jafri) व माता का नाम आसमा जाफरी (Asma jafri) पिता का नाम स्व. ऐनुल हक (Ainul haq) है अब मुझे इसी नाम से जाना व पहचाना जाए। मोहम्मद वासिफ जाफरी पुत्र स्व. ऐनुल हक निवासी सी 80 जी.टी.बी नगर, करैली, थाना करैली, परगना व तहसील सदर, प्रयागराज।

सूचना

आवश्यक सूचना

सूचित किया जाता है कि मेरी माता निशा राठौर पत्नी श्री राजाराम राठौर का 09 नवम्बर 2023 को आकस्मिक निधन हो गया था। मेरी माता जी के नाम पर पीरामल हाउसिंग फाइनेंस लिमिटेड बैंक से लोन लिया था। लोन का पूरा भुगतान कर दिया गया है। अब मकान की मूल रजिस्ट्री बैंक से वापस लेने के लिए सूचना देनी है। सचिन राठौर पुत्र स्व. निशा राठौर निवासी-मोहल्ला दुर्गापुरवा, तहसील व जिला-सीतापुर

सबसे झूठी पार्टी है भाजपा: अखिलेश

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने भाजपा सरकार पर किसानों, और नौजवानों के साथ हो रहे अन्याय और महंगाई, बेरोजगारी, पेपर लीक की घटनाओं को लेकर करारा हमला बोला। उन्होंने कहा है कि भाजपा ने किसानों, नौजवानों, मजदूरों, गरीबों सभी के साथ विश्वासघात किया है। उन्हें धोखा दिया है। भाजपा सबसे झूठी पार्टी है। समाजवादी पार्टी और विपक्षी दलों के खिलाफ झूठा प्रचार करती है। भाजपा ने देश के सारे भ्रष्टाचारियों और अपराधियों को अपनी पार्टी में शामिल कर लिया है। दूसरों पर झूठा आरोप लगाती है। किसानों की आय दोगुनी नहीं हुई। खेती का लागत मूल्य बढ़ गया, लेकिन फसलों का सही मूल्य नहीं मिल रहा है। गेहूं की सरकारी खरीद नहीं हो रही है। भाजपा सरकार ने किसानों की फसलों को एमएसपी का कानूनी अधिकार नहीं दिया। किसान आंदोलन को बदनाम किया। किसानों को अपमानित किया। भाजपा सरकार के दस साल के कार्यकाल में गरीबी और कर्ज से परेशान एक लाख किसानों ने आत्महत्या कर ली। इस सरकार ने पूंजीपतियों का 16 लाख करोड़ का कर्ज माफ कर दिया लेकिन किसानों का कर्ज माफ नहीं किया। भाजपा के दस साल की सरकार में किसी के जीवन में बदलाव नहीं हुआ।

अखिलेश यादव ने सोमवार को एटा, हाथरस एवं आगरा जनपद में समाजवादी पार्टी इंडिया गठबंधन के प्रत्याशियों के समर्थन में चुनावी जनसभाएं की। उन्होंने कहा कि भाजपा चुनाव हार रही है। इंडिया गठबंधन जीत रहा है। समाजवादी पार्टी व पीडीए इंडिया गठबंधन मिलकर भाजपा के एनडीए पर भारी है। जबसे समाजवादी पार्टी ने पीडीए बनाया है, भाजपा घबराई हुई है। पिछड़ा, दलित, अल्पसंख्यक, आधी आबादी और आदिवासी समाज एकजुट होकर इंडिया गठबंधन के पक्ष में वोट कर रहा है। जनता ने भाजपा को नकार दिया है। चुनाव हाथ से निकलता देख भाजपा नेताओं की भाषा बदल गयी है। भाजपा की दिल्ली और लखनऊ की सरकार ने महंगाई, बेरोजगारी बहुत बढ़ा दी है। भाजपा के नेता महंगाई, बेरोजगारी और पेपरलीक से नौजवानों को हुए नुकसान की बात नहीं करते है। भाजपा सरकार ने दस साल में नौजवानों की नौकरियां छीनी है। नौकरी, रोजगार नहीं दिया। सिर्फ झूठे वादे किये। यादव ने कहा कि यह लोकसभा चुनाव बेहद महत्वपूर्ण और सबसे अलग है। यह चुनाव लोकतंत्र संविधान और आरक्षण बचाने का चुनाव है। भाजपा बाबा साहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर के बनाए हुए संविधान को खत्म करना चाहती है। पिछड़ों, दलितों का आरक्षण समाप्त करना चाहती है। भाजपा के इरादे ठीक नहीं है। वह वोट का अधिकार छीनना चाहती है। भाजपा के अहंकार को खत्म करने का चुनाव है। अखिलेश यादव ने कहा कि वोट के जरिए सत्ता में आयी भाजपा तानाशाही पर उतर आयी है। विपक्षी नेताओं को झूठे मुकदमों में फंसाकर जेल भेज रही है। सरकारी एजेंसियों ईडी, सीबीआई, इनकम टैक्स का दुरूपयोग हो रहा है। भ्रष्टाचार और महंगाई बढ़ाई है। सरकारी एजेंसियों से दबाव डालकर हजारों करोड़ रूपये का चुनावी चंदा वसूला। इलेक्टोरल बांड ने भाजपा की पोल खोल दी है। उन्होंने कहा कि वोट से सत्ता में आयी भाजपा को वोट की ही ताकत से हटाना है। पहले दो चरणों के चुनाव में जनता ने भाजपा की बैंड बजा दी है। हवा और माहौल इंडिया गठबंधन के पक्ष में है।

यह चुनाव धर्म युद्ध के समान: पाठक

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता एवं प्रदेश के उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने सोमवार को बांदा में पार्टी के लोकसभा उम्मीदवार सांसद आरके पटेल के समर्थन में जनसभा की। जनसभा में बोलते हुए उन्होंने कहा कि यह चुनाव धर्म युद्ध के समान है। एक तरफ भारत को सुशासन और विकास की ओर ले जाने वाले मोदी जी हैं तो दूसरी तरफ अधर्म, अनाचार, भ्रष्टाचार में डूबे तमाम विपक्षी नेता हैं। जिन्हें भारत की उन्नति और प्रदेश के विकास से नफरत है। उन्होंने कहा कि अयोध्या में भव्य मंदिर बनाया गया, अब सरकार बनते ही मथुरा की बारी है। मथुरा में कृष्ण भगवान बांसुरी बजाकर इंतजार कर रहे हैं। आप मोदी जी के हाथों को मजबूत कीजिए।

उपमुख्यमंत्री बृजेश पाठक ने कहा कि यह चुनाव रामभक्त और रामभक्तों पर गोली चलाने वालों के बीच हो रहा है। रामभक्तों पर गोली चलवाने का काम सपाईयों ने किया था। इसके अलावा उन्होंने कहा कि जिन लोगों ने रामभक्तों पर गोलियां चलवाई उन्हें वोट देने या लेने का अधिकार नहीं है। यह चुनाव धर्म और अधर्म के बीच की लड़ाई का है। पाठक ने कहा कि जब देश में यूपीए और प्रदेश में सपा की सरकार थी तब ये लोग भ्रष्टाचार और अनाचार के दलदल में डूबे थे। घोटाले पर घोटाले कर रहे थे, दुनिया में नंबर 1 बनते जा रहे थे, गरीब और अमीर आदमी के बीच दूरी बढ़ती जा रही थी। कांग्रेस की जब सरकार थी तब आतंकवादी हमला हो रहे थे, लेकिन सरकार मुंबई में कसाब को बिरयानी खिलाने में जुटी हुई थी। अब मोदी सरकार में लोगों को सरकारी योजनाओं को लाभ मिल रहा है। मोदी जी ने इज्जत से महिलाओं को जीने का हक दिया है। उन्होंने कहा कि लोग कहते थे गाड़ी में जितना बड़ा लगा झंडा, उसमें बैठा उतना बड़ा गुंडा। इन्होंने प्रदेश में अराजकता फैलाई, लेकिन मुख्यमंत्री योगी के आते ही कानून व्यवस्था दुरुस्त हो गई। कहा कि बांदा में भाजपा प्रत्याशी के पक्ष में लाखों लोग आए हैं, जिससे लग रहा कि भाजपा प्रत्याशी बड़े अंतर के वोटों से जीत दर्ज करेंगे। हम पूरे प्रदेश में 80 की 80 सीट जीतेंगे।

सार्वजनिक सूचना

मेरे मुवक्किल तसद्दुक पुत्र मजीद एवं इसकी पत्नी मुन्नी दोनो निवासीगण पता-लक्ष्मण गंज, चंदौसी, संभल, उत्तर प्रदेश-2024112 ने अपने पुत्र अहसान हुसैन एवं उसकी पत्नी फहराना को उनके कृत्यो एवं गलत आचरण के कारण सम्बन्ध विच्छेद करते हुए अपनी चल-अचल सम्पत्ति से बेदखल करते है और भविष्य में उनके द्वारा किये गये किसी भी कार्य एवं वाद-विवाद के लिए मेरे मुवक्किल उत्तरदायी नही होगें।

राजु विजय (अधिवक्ता)
Ch. No. C-11A, C.L. Joseph Block
Tis Hazari Courts Delhi-110054

तीसरे चरण के चुनाव में करोड़पति उम्मीदवारों की भरमार

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

उत्तर प्रदेश इलेक्शन वॉच और एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफार्म्स ने उत्तर प्रदेश लोकसभा चुनाव 2024 के तीसरे चरण में 10 निर्वाचन क्षेत्रों से चुनाव लड़ने वाले सभी 100 उम्मीदवारों के शपथपत्रों का विश्लेषण किया है। जिसमें करोड़पतियों की भरमार है। इनमें जिन सीटों का विश्लेषण किया गया है उनमें आगरा, आवला, बदायूं, बरेली, एटा, फतेहपुर सिकरी, फिरोजाबाद, हाथरस मैनपुरी और संभल से चुनाव लड़ रहे है।

मुख्य संयोजक यूपी इलेक्शन वॉच एडीआर के संजय सिंह ने कहा कि तीसरे चरण के चुनाव में भी करोड़पति उम्मीदवारों कि भरमार हैं। हम करोडपति उम्मीदवारों की बात करे तो 100 में से 46 यानी 46फीसद उम्मीदवार करोड़पति हैं। भारतीय जनता पार्टी के 10 में से 10 (100 फीसद, समाजवादी पार्टी के 9 में से 9 (100 फीसद), बहुजन समाज पार्टी के 9 में से 9 (100 फीसद), पीस पार्टी के 3 में से 1 (33 फीसद), स्वराज भारतीय न्याय पार्टी के 2 में से 1 (50फीसद), और जन शक्ति एकता पार्टी के 1 में से 1 (100 फीसद) उम्मीदवार करोड़पति हैं। उत्तर प्रदेश लोकसभा चुनाव 2024 के तीसरे चरण के उम्मीदवारों की औसतन संपत्ति 6.94 करोड़ है। मुख्य दलों में भारतीय जनता पार्टी के 10 उम्मीदवारों की औसत संपत्ति लगभग 11.74 करोड़ है। समाजवादी पार्टी के 9 उम्मीदवारों की औसत संपत्ति 47.67 करोड़ है बहुजन समाज पार्टी के उम्मीदवारों की औसत संपत्ति 9.45 करोड़ है। वही पीस पार्टी के 3 उम्मीदवारों की औसत संपत्ति 1.13 करोड़ है। लोकसभा चुनाव के तीसरे चरण के प्रत्याशियों में बरेली से समजवादी पार्टी के टिकट पर चुनाव लड़ रहे प्रवीन सिंह एरन हैं, जिनकी संपत्ति लगभग 182 करोड़ है। इसी तरह से अक्षय यादव, फिरोजाबाद से समाजवादी पार्टी के टिकट पर चुनाव लड़ रहे हैं, जिनकी संपत्ति 136 करोड़ के आस पास है। वही मैनपुरी लोकसभा सीट से समाजवादी पार्टी के टिकट पर चुनाव लड़ रही डिम्पल यादव हैं, जिनकी संपत्ति 42 करोड़ के आसपास हैं। सबसे कम संपत्ति घोषित करने वाले शीर्ष तीन उम्मीद्वारो कि बात करे तो आगरा लोकसभा सीट से निर्दलीय चुनाव लड़ रहे हसनुराम अम्बेडकरी हैं जिनकी कुल सम्पत्ति 12 हज़ार हैं। दूसरे नंबर पर एटा से निर्दलीय चुनाव लड़ रहे कैलाश कुमार हैं जिनकी संपत्ति 19 हज़ार बताई गई हैं। तीसरे नंबर पर निर्दलीय चुनाव लड़ रहे रवि कुमार हैं, उन्होंने अपनी कुल संपत्ति 21 हज़ार रूपए बताई हैं।

यूपी इलेक्शन वॉच के राज्य संयोजक संतोष श्रीवास्तव ने कहा कि उम्मीदवारों द्वारा घोषित आपराधिक मामलो में 100 में से 25 (25 फीसद) उम्मीदवारों ने अपने ऊपर आपराधिक मामले घोषित किए हैं। इनमें से 20 (20 फीसद) उम्मीदवारों ने अपने ऊपर गंभीर आपराधिक मामले घोषित किए है। अपराधिक मामले घोषित करने वाले उम्मीदवारों का दलवार विवरण देखा जाये तो भारतीय जनता पार्टी के 10 में से 4 (40 फीसद), समाजवादी पार्टी के 9 में से 5 (56 फीसद), बहुजन समाज पार्टी के 9 में से 4 (44 फीसद), राष्ट्रीय शोषित समाज पार्टी के 2 में से 1 (50 फीसद) उम्मीदवारों ने अपने ऊपर अपराधिक मामले घोषित किए हैं। उम्मीदवारों द्वारा घोषित गंभीर आपराधिक मामलों में भारतीय जनता पार्टी के 30 फीसद समजवादी पार्टी के 33 फीसद, बहुजन समाज पार्टी के 44फीसद, राष्ट्रीय शोषित समाज पार्टी के 50फीसद, उम्मीदवारों ने अपने ऊपर गंभीर आपराधिक मामले घोषित किए हैं। आपराधिक मामलों में रामनाथ सिंह सिकरवार जो फतेहपुर सीकरी से कांग्रेस के उम्मीदवार है, उनके ऊपर 17 आपराधिक मामले दर्ज है।

शुभम् हाउसिंग डेवलपमेंट फाइनेंस कं. लि.

कॉर्पोरेट कार्यालय: 425, उद्योग विहार फेज IV, गुड़गांव-122015 (हरियाणा)
फोन: 0124-4212530/31/32, ई-मेल: customercare@shubham.co वेबसाइट: www.shubham.co

वित्तीय परिसंपत्तियों के प्रतिभूतिकरण और पुनर्निर्माण और सुरक्षा हित प्रवर्तन अधिनियम 2002 की धारा 13(2) के तहत नोटिस (इसके बाद इसे "अधिनियम" कहा गया)

इस नोटिस के द्वारा आपके ध्यान में लाया जाता है कि आपका ऋण खाता सुरक्षित ऋणदाता शुभम् हाउसिंग डेवलपमेंट फाइनेंस कंपनी लिमिटेड, जिसका पंजीकृत कार्यालय 608 - 609, 6 वीं मंजिल, ब्लॉक-सी अंसल इंपीरियल टॉवर, कम्युनिटी सेन्टर, नारायणा विहार, नई दिल्ली-110028 (इसके बाद इसे 'एसएचडीएफसीएल' कहा गया है) के द्वारा एनपीए घोषित कर दिया गया और आप एसएचडीएफसीएल को अपने ऋण के विरुद्ध कुल बकाया का भुगतान करने के लिए उत्तरदायी हैं। आप आकस्मिक खर्चों, लागत, शुल्कों आदि के साथ उपरोक्त राशि पर संविदात्मक दर पर भविष्य का ब्याज का भुगतान करने के लिए भी उत्तरदायी हैं, इसलिए, हम आपसे इस नोटिस की तारीख से 60 दिनों के भीतर एसएचडीएफसीएल के प्रति अपनी पूरी देनदारियों का निर्वहन करने का आह्वान करते हैं, ऐसा न करने पर एसएचडीएफसीएल को अधिनियम की धारा 13(4) के तहत शक्ति का प्रयोग करने का अधिकार होगा। **उधारकर्ताओं और सुरक्षित आस्तियां का विवरण इस प्रकार है:**

क्र. सं.	ऋण खाता नं. (कर्जदार का नाम)	आवेदक का पता	मांग सूचना की तिथि और राशि	सुरक्षित आस्तियां
1.	0ALB2102000005035226, अब्दुल गफूर, कनीज फातिमा	जी1/165 कालिंदीपुरम राजरूपपुर जागृति चौराहा इलाहाबाद उत्तर प्रदेश 211011	रु. 15,43,911/- & 25/04/2024	मकान नं. जी 1/165 बसेरा सेक्टर गोवर्धन प्रथम मौजा कालिंदीपुरम आवास योजना इलाहाबाद परगना एवं तहसील सदर इलाहाबाद उत्तर प्रदेश-211011
2.	0LKO2101000005034139, आशीष त्रिपाठी, प्रतिभा त्रिपाठी	566/525 ए/2, जय प्रकाश नगर, जय माता दी नर्सिंग होम के पास आलमबाग एलकेओ इंडियन पब्लिक स्कूल लखनऊ उत्तर प्रदेश-226005	रु. 2,92,197/- & 25/04/2024	आवासीय प्लॉट नं. 14 खसरा/गाटा सं. 539, ग्राम/मोहल्ला- भुहार, वार्ड-हैदरगंज, परगना, तहसील एवं जिला-लखनऊ उत्तर प्रदेश-226001
3.	0LKW1705000005006048, लक्ष्मी शरण अवस्थी, हर्ष नारायण अवस्थी	मकान नं. 19/890 इंद्रा नगर सेक्टर-19 रिंग रोड पानी की टंकी लखनऊ उत्तर प्रदेश 226016	रु. 15,41,608/- & 25/04/2024	दुकान नं. 03, साथ में भूमि, इस्माइलगंज सेक्टर-15 इंदिरा नगर योजना खसरा नं. 30 तहसील एवं जिला लखनऊ उत्तर प्रदेश-226012

स्थानः गुड़गाँव,
तिथि: 29.04.2024

प्राधिकत अधिकारी,
शुभम् हाउसिंग डेवलपमेंट फाइनेंस कंपनी लि.

सड़कों पर उमड़ा जनसैलाब, रक्षामंत्री ने दो मुख्यमंत्रियों के साथ किया नामांकन

रथ पर उत्तराखंड के सीएम पुष्कर धामी व प्रदेश अध्यक्ष चौधरी भूपेंद्र सिंह सहित भाजपा के दिग्गज नेता रहे मौजूद

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

केंद्रीय रक्षामंत्री व लखनऊ लोकसभा सीट से भाजपा प्रत्याशी राजनाथ सिंह के नामांकन को लेकर सोमवार को राजधानी की सड़कों पर जनसैलाब उमड़ पड़ा। अबकी बार-400 पार के नारे के बीच रक्षामंत्री कलेक्ट्रेट पहुँचे और नामांकन दाखिल किया। जिला निर्वाचन अधिकारी द्वारा रक्षामंत्री का नामांकन लिया गया। नामांकन के दौरान रक्षामंत्री के साथ उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री, मुख्यमंत्री उत्तराखंड, डिप्टी सीएम और रक्षामंत्री के प्रतिनिधि मौजूद रहे।

सोमवार को कलेक्ट्रेट नामांकन करने देश के रक्षामंत्री राजनाथ सिंह पहुंचे। जिला निर्वाचन अधिकारी सूर्यपाल गंगवार ने रक्षामंत्री का नामांकन ग्रहण किया। नामांकन की पत्रावलियां का अवलोकन करते हुए जिला निर्वाचन अधिकारी ने प्रस्तावकों का संज्ञान लिया। रक्षामंत्री के साथ उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, उत्तराखंड के सीएम पुष्कर सिंह धामी, डिप्टी सीएम ब्रजेश सिंह, रक्षामंत्री के प्रस्तावकों सहित अन्य गणमान्य लोग मौजूद रहे। नामांकन से पूर्व डेढ़ किमी लंबा गाड़ियों, कार्यकर्ताओं का काफिला रहा। काफिले में शहर के सभी धर्म और समुदाय के लोग रहे। नामांकन के दौरान रक्षामंत्री के प्रस्तावकों सहित अन्य गणमान्य नामांकन कक्ष में बैठकर नामांकन औपचारिकता पूरी होने की प्रतीक्षा करते रहे। इससे पहले इस सीट पर वह 2014 और 2019 में भारी जीत हासिल कर चुके हैं। उन्हें लगातार तीसरी बार लखनऊ लोकसभा सीट से प्रत्याशी बनाया गया है।

संसदीय सीट लखनऊ से भाजपा प्रत्याशी राजनाथ सिंह के पास वर्ष 2019 में कुल 5.14 करोड़ रुपये की संपत्ति थी। इनमें राजनाथ सिंह के पास कुल संपत्ति 3,11,32,962 और अचल संपत्ति की कीमत 3,34,80,580 है। यह जानकारी उनके द्वारा पेश किए गए चुनावी हलफ़नामे से मिली। वर्ष 2019 में नामांकन दाखिल करने के दौरान राजनाथ सिंह द्वारा घोषित संपत्तियों में कुल चल संपत्ति 1.64 करोड़ जबकि पत्नी के पास 53.03 लाख नगदी, बैंक जमा, निवेश इत्यादि के दर्शाए गए थे। उन्होंने तब खुद के पास 68 हजार की नगदी संग 1.90 लाख के स्वर्ण जेवरात व 3 लाख के कीमती रत्न दर्शाए थे। सोमवार को दाखिल किए गए नामांकन में उन्होंने अपने पास 75 हजार और पत्नी के पास 45 हजार नकदी बताई है।

32 बोर की रिवाल्वर और एक दो नाली बंदूक भी है: वह शस्त्र रखने के भी शौकीन हैं और उनके पास एक 32 बोर की रिवाल्वर और एक दो नाली बंदूक भी है। राजनाथ सिंह के पास चार लाख 20 हजार का सोना और चार लाख के रत्न हैं। वहीं उनकी पत्नी के पास 52 लाख 50 हजार का सोना और नौ लाख 37 हजार 500 की चांदी (12.50 किलो) है। राजनाथ सिंह के खिलाफ कोई आपराधिक मुकदमा दर्ज नहीं है।

सात प्रत्याशियों ने भरा पर्चा

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

कलेक्ट्रेट परिसर में लोक सभा सामान्य निर्वाचन व विधानसभा उप निर्वाचन 2024 की नामांकन प्रक्रिया में रक्षामंत्री सहित अन्य द्वारा नामांकन किया गया। ज़िला निर्वाचन अधिकारी सूर्य पाल गंगवार ने बताया गया कि लोकसभा लखनऊ में 4 नामांकन और मोहनलालगंज लोकसभा में 3 नामांकन दाखिल किए। सोमवार को लोक सभा के लिए भारतीय जनता पार्टी से राजनाथ सिंह, सरवर पार्टी से सरवर अली, मेरा अधिकार राष्ट्रीय दल से कपिल मोहन चौधरी, हिंदू समाज पार्टी से गौरव वर्मा ने पर्चा भरा। वहीं लोक सभा 34 मोहनलालगंज में भारतीय जनता पार्टी से कौशल किशोर, राष्ट्रीय समाज पक्ष बृजेश कुमार विक्रम, पीपुल्स पार्टी आफइंडिया (डेमोक्रेट) से श्याम लाल ने पर्चा भरा। इसके अतिरिक्त लोकसभा में 23 नामांकन पत्रों का वितरण किया। 34 मोहनलालगंज (अ.ज.) लोकसभा में कुल 10 नामांकन पत्रों का वितरण और 173 लखनऊ पूर्व विधानसभा में उप निर्वाचन के लिए 6 नामांकन पत्रों का वितरण किया।

सभी धर्मों के लोगों में दिखा उत्साह

लखनऊ। राजधानी लखनऊ में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह के नामांकन में लखनऊ वासियों में काफी उत्साह नजर आया। नामांकन के जुलूस में सभी धर्मों के लोगों ने बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया और राजनाथ सिंह के नामांकन को सफल बनाने में सहयोग दिया। सदर कैंट क्षेत्र के भाजपा नेता इमरान खान दर्जनों गाड़ियों का काफिला लेकर राजनाथ सिंह के नामांकन में पहुंचे। नामांकन के बाद उन्होंने कैंट, उदयगंज समेत कई इलाकों में रैली कर राजनाथ सिंह के लिए वोट मांगा। इस दौरान जीशान खान, कैंट मंडल अध्यक्ष रूपा देवी, उमैद रजा सिद्दीकी, अभिषेक, संतोष समेत सैकड़ों की संख्या में मुस्लिम समाज के लोग शामिल हुए। वहीं उत्तर प्रदेश अल्पसंख्यक आयोग के सदस्य सरदार परविंदर सिंह के नेतृत्व में 500 से अधिक सिखों के जत्थे ने राजनाथ सिंह के नामांकन कार्यक्रम में प्रतिभाग कर उनका स्वागत किया। इस दौरान मुख्य रूप से बलबीर सिंहए कमलजीत सिंह, ओंकार सिंह, निर्मल सिंह शाहाबाद, सुखदेव सिंह, हरजिंदर सिंह, राजेंद्र सिंह बग्गा लकी, जसकरण सिंह, ओंकार सिंह पनेसर, हरप्रीत सिंह आदि मुख्य रूप से उपस्थित रहे।

इसके अलावा सिंधी समाज सतीश आडवाणी सैकड़ों कार्यकर्ताओं के साथ नामांकन जुलूस में पहुंचे। हजरतगंज में स्टाल लगाकर राजनाथ सिंह का स्वागत किया। इस दौरान नानक चंद लखमानी, मुरलीधर आहूजा, गौतम राजपाल, विक्की दरयानी, हंसराज राजपाल, जय मिगलानी आदि मौजूद रहे। वही अखिल भारतीय भोजपुरी समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रभुनाथ राय के नेतृत्व मे राजनाथ सिंह नामांकन में स्वागत किया। भोजपुरी भेष भूसा, गाना बजाना, फूलो की वर्षा कर भोजपुरी अंदाज देखने लायक था। इस दौरान पारस नाथ तिवारी, वेद प्रकाश राय, मनीष पोद्दार, सुनील सिंह, हनुमान यादव, अवधेश, सुरेश कुशवाह, मनोज राय पंडित राजकुमार आदि शामिल हुए।

मोहनलालगंज लोकसभा सीट पर केंद्रीय मंत्री कौशल किशोर ने भरा पर्चा

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

मोहनलालगंज की लोकसभा सीट से भाजपा प्रत्याशी व केंद्रीय मंत्री द्वारा नामांकन किया गया। उप जिला निर्वाचन अधिकारी द्वारा नामांकन पत्र को ग्रहण किया गया। केंद्रीय मंत्री के साथ केंद्रीय मंत्री महेंद्रनाथ पांडेय, प्रदेश अध्यक्ष, डिप्टी सीएम मौजूद रहे। सोमवार को केन्द्रीय राज्य मंत्री व भाजपा उम्मीदवार कौशल किशोर ने सोमवार को मोहनलालगंज लोकसभा सीट से नामांकन दाखिल किया। उपनिर्वाचन अधिकारी अजय जैन ने केंद्रीय मंत्री का नामांकन पर्चा ग्रहण किया। इस मौके पर भारी संख्या में भाजपा कार्यकर्ता मौजूद रहे। इस दौरान कौशल किशोर ने कहा कि बीजेपी के समर्थन में देश की जनता उमड़ पड़ी है। इतना ही नहीं अपना दल, राष्ट्रीय लोक दल, सुभासपा पार्टी के लोग भी भाजपा को जीत दिलाने का काम करेंगे। बता दें कि सोमवार को राजधानी लखनऊ की सड़कों पर भारी जन सैलाब उमड़ा। भाजपा के विकास रथ में ही केन्द्रीय मंत्री कौशल किशोर भी सवार थे। उनके साथ प्रदेश अध्यक्ष चौधरी भूपेंद्र सिंह, केन्द्रीय मंत्री महेंद्र नाथ पांडेय, उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य सहित भाजपा कई वरिष्ठद्द नेता मौजूद रहे।

सिन्धी पंजाबी समाज ने दक्षिण मुखी हनुमान मंदिर में पूजा-अर्चना कर जीत की प्रार्थना की

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

● मन्दिर परिसर में राजनाथ सिंह का जोरदार स्वागत अभिनन्दन किया गया, भगवा रंग के गुब्बारे उड़ाए

सुबह ढोल नगाड़ों की धुन पर हजरत गंज में सिंधी, पंजाबी सिख वा राधा स्वामी सत्संग ब्यास के पदाधिकारियों ने खूब जोश खरोश के साथ अपने सांसद को 'प्रचंड बहुमत से जीतने के लिए' संकल्प लिया मतदान की अपील भी की गई बड़ी संख्या में हजरत गंज पहुंचे समाज के लोगो ने 'दक्षिण मुखी हनुमान मंदिर' में 'लगभग 10:30 बजे' पहले से तय कार्यक्रम के अनुसार मन्दिर में राजनाथ सिंह के आगमन के पश्चात सिंधी समाज, पंजाबी समाज, सिख समाज, राधा स्वामी सत्संग ब्यास एके प्रमुख प्रमुख लोगो ने राजनाथ सिंह के साथ मिलकर पूजा अर्चना और अरदास कर हनुमान से प्रचंड जीत के लिए प्रार्थना कर अपने सांसद जी का जोरदार स्वागत अभिनन्दन किया। फूलों की वर्षा कर भगवा रंग के 500 गुब्बारे उड़ाए सिंधु सभा के अध्यक्ष अशोक मोतियानी चेयरमैन श्याम कृष्नानी, सुरेश छबलानी, भारतीय पंजाबी पंजाबी समाज के अध्यक्ष अनिल बजाज सुनील कालरा, मुरली धर आहूजा, लखन आहूजा अकादमी के नानक चंद लखमानी अशोक चांदवानी तरुण संगवानी 'मेला कमेटी के अध्यक्ष रतन मेघानी महामंत्री संजय जसवानी तरुण संगवानी सिख समाज से गुरमीत सिंह, परमजीत सिंह ज्ञानी अमरजोत सिंह, रोमी सिंह अशोक अरोड़ा साहित सिन्धी समाज इंद्रा नगर पंचायत के अध्यक्ष हंसराज राज्यपाल, अन्नू खत्री, विक्की दरयानी, सुरज जसवानी, पार्षद पूजा जसवानी, घनश्याम दास, पुनीत लाल चंदानी, व्यापारी नेता प्रभु जालान साहित सभी ने सुबह 8 बजे से बड़ी तादात में पहंचे समाज के लोगो ने ढोल नगाड़ों की धुन पर कारक्रम से पूर्व सिन्धी डांडिया खेला, भांगड़ा करते हुए मतदान की भी अपील करते रहे। लखनऊ के सांसद जी नमाकन भरने से पहले हनुमान मंदिर परिसर स्थित दक्षिण मुखी हनुमान मंदिर में आरती पूजन कर भगवान का आशीवाद प्राप्त किया।

नामांकन से पूर्व बजरंग बली के दरबार में पहुंचे रक्षामंत्री, की पूजा-अर्चना

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

नामांकन से पूर्व कालिदास मार्ग स्थित आवास पर प्रात: 11 पंडितों के साथ राजनाथ सिंह ने विधि विधान से पूजा अर्चना की। पंडितों ने मंत्रोचार के साथ पूजन अर्चन संपन्न करा कर राजनाथ सिंह को ऐतिहासिक विजय के लिए आशीर्वाद प्रदान किया। आवास से निकलने के बाद लगभग 10 बजे हनुमान सेतु मन्दिर पहुंचकर गणेश भगवान की पूजा अर्चना की बजरंगबली का आशीर्वाद प्राप्त किया और शिवलिंग का जलाभिषेक करने के साथ ही सभी देवी देवताओं का पूजन कर आशीर्वाद लिया। हनुमान सेतु के उपरांत हजरतगंज पंचमुखी हनुमान मन्दिर में भी पूजा अर्चना की और उसके बाद प्रदेश कार्यालय पहुंचे जहां मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी, उप मुख्यमंत्री बृजेश पाठक, केशव मौर्य, प्रदेश अध्यक्ष भूपेंद्र सिंह के साथ लखनऊ विकास रथ पर सवार होकर मंत्री, विधायक, वरिष्ठ नेता गण और महानगर अध्यक्ष आनंद द्विवेदी के नेतृत्व में एकत्रित विशाल जन समूह के काफ्लि के साथ कलेक्ट्रेट की ओर बढ़े।

रथ पर साथ में सांसद कौशल किशोर, केंद्रीय मंत्री महेंद्र नाथ पांडे, राज्यसभा सांसद राष्ट्रीय प्रवक्ता सुधांशु त्रिवेदी, राज्यसभा सांसद डॉक्टर दिनेश शर्मा, एमएलसी लोकसभा संयोजक मुकेश शर्मा महापौर सुषमा खर्कवाल, क्षेत्रीय अध्यक्ष कमलेश मिश्रा, विधायक डॉ राजेश्वर सिंह, पूर्व मंत्री स्वाति सिंह, विधायक प्रत्याशी ओपी श्रीवास्तव सहित एक वरिष्ठ नेता उपस्थित रहे।

आकर्षण का केंद्र रहा भव्य रथ: प्रदेश कार्यालय से शुभारंभ से लेकर पूरे रास्ते विभिन्न स्थानों पर पुष्प वर्षा, ढोल नगाड़े, शंखनाद के साथ लोगों का स्वागत करने का जमावड़ा देखते ही बन रहा था। भारत सरकार रक्षा मंत्री एवं लखनऊ सांसद राजनाथ सिंह द्वारा 54 हजार करोड़ के विकास कार्यों की गाथा बयां कर रहा था। जिसमें चौधरी चरण सिंह एयरपोर्ट के टर्मिनल 3, ब्रह्मोस मिसाइल, डीआरडीओ लैब, आउटर रिंग रोड जैसी अनेक बहुउद्देशीय योजनाओं को दर्शाया गया था।

पंकज सिंह पैदल करते रहे उत्साह वर्धन: पूरे नामांकन यात्रा के दौरान प्रदेश उपाध्यक्ष नोएडा विधायक पंकज सिंह पैदल ही कार्यकर्ताओं का उत्साह वर्धन करते हुए साथ रहे। भाजपा वरिष्ठ नेता नीरज सिंह सबसे आगे चल रहे रथ पर माइक द्वारा कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करके कार्यकर्ताओं और उपस्थित जन समूह का उत्साह वर्धन कर रहे थे।

100 से अधिक प्रमुख स्थानों पर हुआ स्वागत

भारतीय जनता पार्टी प्रदेश कार्यालय से नामांकन जुलूस जैसे ही निकला स्वागत के क्रम में किन्नर समाज, उत्तर विधानसभा विधायक डॉ नीरज बोरा के साथ कार्यकर्ताओं ने पुष्पा वर्षा के साथ स्वागत किया। स्वागत के क्रम में पर्वतीय समाज, बंगाली समाज, सिख समाज, श्री श्याम परिवार, पूर्वी विधानसभा पदाधिकारी गण, अखिल भारतीय उद्योग व्यापार मंडल, आदर्श व्यापार मंडल, सिंधी समाज, अल्पसंख्यक समाज, क्रिश्चियन समाज, ईसाई समाज, साहू समाज, उत्तर प्रदेश आदर्श व्यापार मंडल, अंतराष्ट्रीय वैश्य महासम्मेलन, उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार मंडल, लखनऊ व्यापार मंडल, छंगामल चिकन के आगे लखनऊ चिकन हैंडीक्राफ्ट संगठन द्वारा मोती महल के आगे सिंधी समाज डांडिया नृत्य के साथ स्वागत, साहू सिनेमा के सामने साहू समाज के पदाधिकारीगण राम नारायण साहू, हजरतगंज जनपद मार्केट के आगे शिक्षक संघ, कपूर होटल के आगे हजरतगंज व्यापारियों द्वारा डीआरएम कार्यालय के सामने रेलवे कर्मचारी यूनियन द्वारा शालीमार बिल्डिंग पर भाजपा व्यापार प्रकोष्ठ और अन्य व्यापारियों के साथ बिल्डिंग पर, मेफेयर बिल्डिंग पर भी व्यापारियों द्वारा लालबाग मोड पर पश्चिम विधानसभा के कार्यकर्ता, हलवासियां कोर्ट के सामने सुधीर हलवासीयए मार्क्समैन के सामने अल्पसंख्यक समाज के शिया समुदाय द्वारा, जुगल किशोर ज्वैलर्स पर अनुचित समाज, मनकामेश्वर महंत दिव्या गिरी एचडीएफसी बैंक के बाहर अंबर फाउंडेशन, कायस्थ समाज, अनुसूचित मोर्चा, अधिवक्ता संघ, मोहनलालगंज कार्यकर्तागण और संगठनों आखिरी काउंटर पर बड़ी संख्या में युवा खिलाड़ी उत्तर प्रदेश ओलंपिक संघ महासचिव आनंदेश्वर पांडे, कलारीपयटटू प्रदेश सचिव प्रवीण गर्ग और आनंद पांडे के नेतृत्व में विभिन्न खेल संस्थाओं के पदाधिकारी और खिलाड़ी स्वागत के लिए उपस्थित रहे।

सामुदायिक भागीदारी, सबकी जिम्मेदारी:डॉ. सिंघल

● संयुक्त निदेशक डेंगू ने कहा कि इस बीमारी से सभी को ज्यादा सतर्क रहने की जरूरत

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

डेंगू का मौसम नजदीक है इस बात की गंभीरता को देखते हुए केजीएमयू और स्वयंसेवी संस्था ड्रग्स फॉर नेगलेक्टेड डिजीज इनीशिएटिव (डीएनडीआई) द्वारा साझा प्रयास कर विषय से जुड़े विशेषज्ञों, समुदाय व स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं को एक मंच पर लाने की पहल की गयी। इसी कड़ी में सोमवार को सरोजनीनगर ब्लॉक के रूरल हेल्थ ट्रेनिंग सभागार में डेंगू जनजागरूकता कार्यशाला ''सामुदायिक भागीदारी, सबकी जिम्मेदारी'' का आयोजन कर बीमारी, बचाव और सामुदायिक भूमिका के बारे में विस्तार से चर्चा की गयी।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि संयुक्त निदेशक मलेरिया व डेंगू डॉ. विकास सिंघल ने कहा कि डेंगू के बढ़ते मामले का बड़ा कारण जलवायु परिवर्तन है। इससे हम सभी को ज्यादा सतर्क होने की ज़रुरत है। उन्होंने इसके लिए सामुदायिक भागीदारी और सबकी ज़िम्मेदारी बढ़ाने पर ज़ोर दिया और बुखार में देरी, पड़ेगी भारी नारा देकर सभी से अपील की कि बुखार होने पर करीबी स्वास्थ्य केंद्र पर ज़रूर जाएं व घर के आसपास साफ-सफाई का बेहद ध्यान दें। डॉ. कल्पना बरुआ, वरिष्ठ सलाहकार और पूर्व अतिरिक्त निदेशक, नेशनल सेंटर फार वेक्टर बोर्न डिजीज कंट्रोल (एनसीवीबीडीसी) ने कहा कि डेंगू को एनसीवीबीडीसी के तहत एक कार्यक्रम के रूप में शामिल होने के बाद इसके बारे में काफी रिपोर्टिंग की जा रही है। अब हमारे पास इसकी रोकथाम और इलाज पर काम करने के लिए सही डेटा भी है। उन्होंने बताया कि डेंगू की समय से पहचान और चिकित्सक से सम्पर्क बेहद जरूरी है। इस बीमारी की प्रसार दर हमेशा से चिंता का विषय रही है। इससे बचाव के उपाय में स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के साथ-साथ समाज के सभी हितधारकों की अहम भूमिका है। डॉ मोनिका अग्रवाल, कम्युनिटी मेडिसिन विभागाध्यक्ष, केजीएमयू ने बताया कि गाँव के इलाकों में बीमारियों को खत्म करने में लिए महिलाओं को ध्यान में रखकर गतिविधियों की योजना बनाई जा रही है ताकि इसका पूरे परिवार के स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़े। आईसीएमआर-आरएमआरसी के पूर्व निदेशक डॉ रजनीकांत ने कहा कि डेंगू का कोई इलाज नहीं होता है। इसका सिर्फ लाक्षणिक उपचार संभव है। संभावित डेंगू की समय से पहचान कर चिकित्सकीय हस्तक्षेप किया जाना मरीज की जीवनरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

नेशनल वेक्टर बोर्न डिजीज कंट्रोल प्रोग्राम के पूर्व निदेशक डॉ पीके श्रीवास्तव ने प्रस्तुति के जरिए डेंगू के कारण और बचाव के उपायों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि डेंगू से बचाव के लिए लोगों तक सही जानकारी पहुंचाना बहुत जरूरी है। डेंगू मादा मच्छर के काटने से होता है। यह मच्छर दिन के समय काटता है और इसे पनपने के लिए एक बूँद भर साफ़ पानी भी पर्याप्त है। तेज बुखार और जोडों में दर्द इस बीमारी के प्रमुख लक्षण हैं। डेंगू मरीज का समय से सही जगह पर संदर्भन, इससे होने वाली जटिलताओं को रोकने में कारगर है।

कार्यशाला के अंत में पैनल डिस्कशन के माध्यम से सभी प्रतिभागियों ने बीमारी से जुड़े सवालों के जवाब विषय विशेषज्ञों से जाने। इस मौके पर केजीएमयू से डॉ. अविनाश अग्रवाल- क्रिटिकल केयर डिपार्टमेंट के हेड, डॉ. सुरुचि शुक्ला- डिपार्टमेंट ऑफ़ माइक्रोबायोलॉजी, ड्रग्स फॉर नेग्लेक्टेड डिजीज इनिशिएटिव संस्था से सुकृति चौहान, लखनऊ की जिला मलेरिया अधिकारी रितू श्रीवास्तव समेत आशा व आशा संगिनी कार्यकर्ता मौजूद रहीं।

जहां भ्रष्टाचार, वहीं पहुंच रही ईडी, सीबीआई: डॉ. राजेश्वर

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

राजनाथ सिंह लखनऊ को नयी ऊँचाइयों पर लेकर जा रहे हैं, उनके प्रयासों से लखनऊ में ब्रह्मोस का प्लांट लग रहा है। लखनऊ में आउटर रिंग रोड बनवा रहे हैं, फ्लाई ओवर बनवा रहे हैं, लखनऊ की जनता को उनसे विशेष लगाव है, राजनाथ सिंह अभूतपूर्व मतों से लोकसभा चुनाव जीतेंगे। ये बाते सोमवार को सरोजनीनगर से भाजपा विधायक डॉ. राजेश्वर सिंह ने कही। मौका था सोमवार को लखनऊ संसदीय क्षेत्र से भाजपा प्रत्याशी राजनाथ सिंह और मोहनलालगंज से भाजपा प्रत्याशी कौशल किशोर के नामांकन का।

सोमवार को राजधानी लखनऊ पूरी तरह से भगवामय नजर आ रही थी, सुबह से ही प्रदेश भाजपा कार्यालय पर कार्यकर्ताओं का हुजूम और बैनर पोस्टर से पटी सड़कें, प्रशासन ने भी इस मौके पर चाक चौबंद तैयारी कर रखी थी। सरोजनीनगर विधायक राजेश्वर सिंह भी सुबह ही अपने हज़ारों समर्थकों और कार्यकर्ताओं के साथ प्रदेश भाजपा मुख्यालय पहुँच गए। राजनाथ सिंह उत्तर प्रदेश के सीएम योगी और उत्तराखंड के सीएम पुष्कर सिंह धामी, दोनों डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक और केशव प्रसाद मौर्य, मोहनलालगंज संसदीय क्षेत्र से प्रत्याशी कौशल किशोर, लखनऊ की महापौर सुषमा खर्कवाल और राजधानी लखनऊ के सभी विधायकों के साथ भगवा रथ पर सवार होकर नामांकन करने लखनऊ कलेक्ट्रेट पहुंचे, इस बीच पूरे रास्ते भर कार्यकर्ताओं ने अपने नेताओं पर पुष्प वर्षा कर स्वागत किया। इस अवसर पर मौजूद रहे सरोजनीनगर विधायक डॉ. राजेश्वर सिंह ने मीडिया से बात करते हुए कहा कि विपक्ष के पास पिछली बार से भी कम सीटें आएगी क्योंकि उनके पास न विकास की कोई बात है, न सुशासन का कोई मुद्दा, न नीतियां हैं न कोई नीयत है, वो सिर्फ जातिवाद की बाते करते हैं। विपक्ष के लोग केवल भ्रम फैलाते रहे हैं, कांग्रेस राम को काल्पनिक कहती रही, उनके पास अयोध्या जाने का समय नहीं है। ईडी, सीबीआई से जुड़े मीडिया के सवालों का जवाब देते हुए कहा कि जहाँ पर भ्रष्टाचार है वहां पर ईडी, सीबीआई है, ईडी स्वतंत्रता पूर्वक अपना कार्य कर रही है।

मुख्तार अंसारी से जुड़े सवालों का जवाब देते हुए डॉ. सिंह ने कहा कि माफियाओं का कोई समर्थन नहीं होना चाहिए, मुख्तार के खिलाफ 80 से ज्यादा मुकदमे, 10 से ज्यादा हत्या के मुक़दमे थे, अखिलेश यादव द्वारा उनके घर जाना और समर्थन देना ठीक नहीं है। पहले और दूसरे चरण में गिरते वोटिंग परसेंटेज के सवाल पर डॉ. सिंह ने कहा कि विपक्षी की सीटें इस बार 2019 के मुकाबले और ज्यादा घटेंगी क्योंकि उनका वोटर भी जान गया है की विपक्ष कहीं जीत नहीं रही, इसीलिए वो वोट देने घर से नहीं निकला रहा।

एकेटीयू में इंडस्ट्री की मांग के अनुसार इंजीनियर्स तैयार करने पर होगा मंथन

लखनऊ। डॉ एपीजे अब्दुल कलाम प्राविधिक विश्वविद्यालय के ट्रेनिंग एंड प्लेसमेंट सेल और एएसएमई इंजीनियरिंग की मैकेनिकल इंजीनियरिंग शिक्षा (एमईईडी) के तत्वावधान में मंगलवार को एक दिवसीय संगोष्ठी एम्पावरिंग दी नेक्स्ट जेनेरेशन इंजीनियर्स का आयोजन किया जा रहा है। संगोष्ठी में नये उभरते उद्योगों की मांग के अनुसार इंजीनियरिंग के छात्रों को तैयार करने पर विशेषज्ञ मंथन करेंगे। इंजीनियरिंग शिक्षा और उद्योगों के बीच की दूरी को कम करने पर विचार किया जाएगा। जिससे कि छात्र उद्योगों के अनुसार तैयार हो सके। कार्यक्रम का शुभारंभ सुबह दस बजे होगा। संगोष्ठी की अध्यक्षता कुलपति प्रो जेपी पांडेय करेंगे, जबकि बतौर मुख्य अतिथि आईएएस दीपक गुप्ता होंगे। वहीं विशिष्ट अतिथि के तौर पर ऑनलाइन माध्यम से एआईसीटीई के मेंबर सेक्रेटरी राजीव कुमार जुड़ेंगे। इसके अलावा पैनल डिस्कशन के साथ ही अन्य सत्र भी आयोजित किया जाएगा।

चिनहट में अवैध रूप से निर्मित होटल व गोमती नगर में कॉमर्शियल कॉम्पलेक्स सील

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

चिनहट, गोमतीनगर में एलडीए द्वारा अवैध होटल,काम्पलेक्स को सील किया गया। विहित प्राधिकारी द्वारा अवैध होटल, कामर्शियल काम्पलेक्स पर नोटिस भेजकर सील करने का आदेश दिया गया। आदेश पर प्रवर्तन टीम द्वारा अवैध होटल को सील कर दिया गया।

सोमवार को एलडीए ने गोमती नगर व चिनहट क्षेत्र में कार्यवाही की। इस दौरान अवैध रूप से निर्मित होटल फेर सीजन व एक व्यावसायिक कॉम्पलेक्स को सील किया गया। प्रवर्तन जोन.1 की जोनल अधिकारी वन्दना पाण्डेय ने बताया कि सुलभ ग्रोवर व अन्य द्वारा गोमती नगर के विनय खण्ड में भूखण्ड संख्या.3/27 पर लगभग 300 वर्गमीटर क्षेत्रफल में अवैध रूप से व्यावसायिक कॉम्पलेक्स का निर्माण कराया जा रहा था। इसके अलावा चिनहट के सेमरा में अयोध्या राष्ट्रीय राजमार्ग पर होटल फेर सीजन के प्रबंधक द्वारा लगभग 500 वर्गमीटर क्षेत्रफल में चार मंजिला बिल्डिंग का निर्माण कराकर होटल संचालित किया जा रहा था। प्राधिकरण से मानचित्र स्वीकृत कराये बिना किये गये इन दोनों अवैध निर्माणों के विरूद्ध विहित न्यायालय द्वारा वाद दर्ज करते हुए सीलिंग के आदेश पारित किये गये थे। जिसके अनुपालन में सहायक अभियंता शिवा सिंह, अवर अभियंता सत्यवीर सिंह द्वारा सोमवार को प्राधिकरण पुलिस व स्थानीय थाने के पुलिस बल के सहयोग से दोनों अवैध निर्माणों को सील कर दिया गया।

लखनऊ मेट्रो ने क्रिकेट प्रेमियों को एलएसजी खिलाड़ियों से मिलने का दिया सुनहरा मौका

● इकाना स्टेडियम में अपने पसंदीदा खिलाड़ियों से मिले 5 मेट्रो-एलएसजी कान्टेस्ट विजेता

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

लखनऊ मेट्रो ने आईपीएल क्रिकेट प्रेमियों का सपना मेट्रो.एलएसजी कान्टेस्ट के माध्यम से पूरा किया। मेट्रो. एलएसजी शायरी प्रतियोगिता के 5 विजेताओं को अटल बिहारी वाजपेई इकाना क्रिकेट स्टेडियम में एलएसजी खिलाड़ियों का लाइव अभ्यास सत्र देखने और उनसे मिलने का सुनहरा मौका मिला।

सोमवार को लखनऊ मेट्रो इस बार आईपीएल में क्रिकेट प्रेमियों की सुविधा के लिए एलएसजी के साथ मिलकर रात 12:30 बजे तक मेट्रो सेवाएं उपलब्ध करा रहा है। लखनऊ मेट्रो और एलएसजी की साझेदारी पर लखनऊ मेट्रो ने 19 अप्रैल 2024 को मेट्रो-एलएसजी कान्टेस्ट नाम से शायरी प्रतियोगिता की शुरुआत की।

इस प्रतियोगिता में उत्साहित सैकड़ों क्रिकेट प्रेमियों ने एक से बढ़ कर एक रचनात्मक शायरी लिख कर लखनऊ मेट्रो को भेजी। इन तमाम शायरियों में से 5 सबसे बेहतरीन मेट्रो.एलएसजी कान्टेस्ट विजेताओं को आज सैळ खिलाड़ियों से मिलने एवं इकाना में उनका अभ्यास सत्र देखने का खास मौका मिला। विजेता अंशुमान मिश्रा, कीर्ति, सुमित कुमार गुप्ता, निरंकार रस्तोगी और आदर्श चतुर्वेदी अपनी पसंदीदा एलएसजी टीम से मिलने के लिए उत्साहित दिखे। विजेताओं ने जीवन भर याद रहने वाले अनुभव के लिए लखनऊ मेट्रो का हार्दिक आभार व्यक्त किया। यूपीएमआरसी के एमडी सुशील कुमार ने कहा कि मैं उन सभी विजेताओं को बधाई देता हूं जिन्होंने इस विशेष अभ्यास सत्र देखना का मौका जीता। लखनऊ मेट्रो न केवल आपका परिवहन माध्यम है बल्कि ट्रांसपोर्टिंग हैप्पीनेस का पर्याय भी है। आईपीएल मैच के दिनों में हम जिन आधी रात की मेट्रो ट्रेनों का संचालन कर रहे हैं, वे लखनऊ के लोगों को विश्व स्तरीय यात्रा अनुभव प्रदान करने के हमारे लगातार प्रयासों का प्रमाण हैं।

डीजीपी ने किया साइबर सुरक्षा मार्गदर्शिका का विमोचन

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

डीजीपी प्रशांत कुमार ने सोमवार को साइबर क्राइम मुख्यालय उत्तर प्रदेश द्वारा प्रकाशित साइबर सुरक्षा मार्गदर्शिका, साइबर सुरक्षा पैम्फलेट व साइबर अपराध विवेचना-हस्तपुस्तिका का पुलिस महानिदेशक साइबर अपराध एवं अपर पुलिस महानिदेशक स्थापना की उपस्थिति में विमोचन किया। साइबर अपराधों के क्षेत्र में लगातार परिवर्तित हो रही तकनीक एंव अपराध करने के तरीके के सम्बन्ध में आम जनमानस को जागरूक करने के लिए साइबर क्राइम मुख्यलय द्वारा 'साइबर सुरक्षा मार्गदर्शिका' व साइबर सुरक्षा पैम्फलेट के माध्यम से साइबर अपराध के प्रकार, बचाव के उपाय और सुरक्षित आन लाइन रहने के तरीकों के बारे में जानकारी प्रदान की गयी है। 'साइबर अपराध विवेचना-हस्तपुस्तिका' के माध्यम से साइबर

अपराधों के अनुसंधान की दिशा में पुलिस अधिकारी व कर्मचारियों को मार्ग दर्शन देने का प्रयास किया गया है। उक्त हस्तपुस्तिका साइबर अपराध एवं अपराधियों पर अंकुश लगाने एवं अन्वेषण करने में काफी मददगार साबित होगी तथा पुलिस कार्मिकों को तकनीकी रूप से दक्ष बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगी।

स्मृति ईरानी अमेठी में किए गए अपने पांच काम गिनाएं फिर चुनाव में जाएं: अभय दुबे

● कांग्रेस प्रवक्ता ने कहा देश-प्रदेश रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह से पूछ रहा सवाल

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के प्रवक्ता अभय दुबे ने कहा है कि आज उत्तर प्रदेश में केन्द्रीय मंत्री द्वय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और स्मृति ईरानी ने लोकसभा चुनाव के लिए अपना नामांकन दाखिल किया। उनके पर्चा दाखिल करने पर समूचे देश एवं प्रदेश के लोग उनसे कुछ सवालों के जवाब चाहते है। दुबे सोमवार को प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय पर प्रेस कांफ्रेंस कर रहे थे। उनके साथ प्रदेश कांग्रेस कमेटी मीडिया विभाग के चेयरमैन पूर्व मंत्री डॉ. सीपी राय, वाइस चेयरमैन मनीष श्रीवास्तव हिदंवी, प्रदेश पैनलिस्ट प्रदीप सिंह, सचिन रावत, डॉ. सुधा मिश्रा, आदि मुख्य रूप से उपस्थित रहे।

दुबे ने कहा कि देश के रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह से सवाल है कि रक्षा मंत्री रहते हुए भारत मां की भूभागीय अखण्डता और अस्मिता से समझौता क्यों किया? चीन की सेना लद्दाख में भारत की सीमा में घुसकर बैठी है। 52 पेट्रोलिंग प्वाइंट में से 26 पेट्रोलिंग प्वाइंट पर हमारी सेना को पेट्रोलिंग नहीं करने दी जा रही है। विश्व की सबसे ऊंची हवाई पट्टी दौलत बैंग ओल्डी के नीचे वाई जंक्शन पर पेट्रोलिंग प्वाइंट 10 से 13 तक चीन की सेना बैठी है। हमारे फिंगर एरिया 4 से 8 तक नया बफर जोन बना दिया गया है, जहां हमारी सेना को जाने की इजाजत नहीं है। चुशुल के काउंसलर खोन्चोक स्टॉनजिन ने बताया कि भारतीय सेना के 13वीं कुमाऊ रेजीरेंट के मेजर शैतान सिंह की प्रतिमा चीनी सेना द्वारा तोड़ दी गई। अरुणाचल प्रदेश के भाजपा सांसद तापिर गाओ ने सदन में कई बार कहा कि चीन की सेना अरुणाचल प्रदेश में चालीस किलोमीटर अंदर तक घुस कर हमारे नागरिकों का अपहरण कर रही है। चीन ने अपने नक्शे में अरुणाचल प्रदेश के 30 स्थानों के नाम बदले और ऐसा चीन चौथी बार कर रहा है। अरुणाचल प्रदेश और भूटान में पूरा गांव बसा दिया है। भूटान की सरकार का कहना है कि वह गांव हमारी जमीन पर नहीं हैं तब फिर वह गांव किसकी भूमि पर बसाये गये हैं। भारत मां की भूभागीय अखंडता एवं अस्मिता से समझौता करने वाले देश के रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह को उत्तर प्रदेश और लखनऊ की जनता अब स्वीकारने वाली नहीं है और उपरोक्त सवालों के जवाब भी देश एवं प्रदेश की जनता चाहती है।

भ्रष्टाचार के इंजन से चल रही हैं भाजपा की डबल इंजन सरकारें: राजेंद्र चौधरी

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय सचिव राजेन्द्र चौधरी ने कहा है कि भाजपा की डबल इंजन सरकारें भ्रष्टाचार के ईंधन से ही चल रही है। बड़ी सरकार इलेक्टोरल बांड की वसूली करके मुंह छुपा रही है तो भाजपा की राज्य सरकार स्मार्टमीटर में चीनी उपकरण लगाने के घपले में सफाई नहीं दे पा रही है।

अखिलेश यादव ने समाजवादी पार्टी की सरकार में बिजली व्यवस्था में प्रभावी सुधार किए थे, जबकि भाजपा सरकार ने एक भी यूनिट बिजली उत्पादन नहीं किया बल्कि बिजली बिल महंगा करके जबरन वसूली कर रही है। भाजपा सरकार ने बिजली उपभोक्ताओं का शोषण करने और उन्हें अपमानित करने का रिकार्ड बना दिया है।

चौधरी ने कहा कि अखिलेश यादव ने अपने मुख्यमंत्रित्वकाल में उत्तर प्रदेश में विद्युत व्यवस्था को दुरूस्त करने के लिए कई बिजली घर बनवाये तथा अण्डरग्राउण्ड तार बिछाने और आपूर्ति की निरन्तरता के सम्बंध में भी कदम उठाए थे। ग्रामीण क्षेत्रों में 14 से 16 घंटे और शहरी क्षेत्रों में 22 से 24 घंटे तक विद्युत आपूर्ति की गई। कई लाख गांवों तथा मजरों में विद्युतीकरण का कार्य पूर्ण किया गया था। भाजपा सरकार का चीन से बढ़ता प्रेम आश्चर्यजनक है। उत्तर प्रदेश में स्मार्ट मीटरों में चीनी कम्पोनेंट लगाने में जो धांधली हुई है उसकी सीबीआई से जांच होनी चाहिए क्योंकि इसमें कई आशंकाएं हैं। उन्होंने कहा कि वैसे भी भाजपा सरकार को प्रदेश की जनता के हितो की कतई परवाह नहीं है। अभी गर्मी की तपिश शुरू हुई है कि बिजली फाल्ट, ट्रांसफार्मर फुंकने की घटनाएं सामने आने लगी है। हाईटेंशन तारों से छिटकी चिंगारियों से हजारों एकड़ फसल नष्ट हो चुकी है।

इन दिनों फसल की मढ़ाई में बाधा पड़ रही है, किसान परेशान है। खेतों और खलिहानों में पड़ी फसल के आग की चपेट में आने की आपदा पर भी सरकार किसानों को मुआवजा नहीं दे रही है। यूपी के मतदाता इन लोकसभा चुनावों में भाजपा को सबक सिखाने के लिए तत्पर है।

लोहिया संस्थान में देश की पहली 22 हेडर माइक्रोस्कोप स्थापित

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

डॉ. राम मनोहर लोहिया आयुर्विज्ञान संस्थान में सोमवार को देश की पहली 22 हेडर माइक्रोस्कोप स्थापित की गयी, जिसका उद्घाटन संस्थान के निदेशक डॉ. सीएम सिंह ने किया। इस अवसर पर संस्थान के डीन प्रो प्रद्यूम्न सिंह, एक्ज़ीक्यूटिव रजिस्ट्रार, प्रो ज्योत्सना अग्रवाल, मुख्य चिकित्सा अधीक्षक, प्रो अजय कुमार सिंह, संस्थान की वित्त नियत्रक रागिनी सिंह एवं प्रो नुज़हत हुसैन, विभागाध्यक्ष, संकाय सदस्य, छात्र एवं कर्मचारी आदि उपस्थित रहे।

22-हेडर माइक्रोस्कोप की सुविधा उत्तर प्रदेश में ही नहीं वरन पूरे भारत में पहली बार स्थापित की गई है। इसकी लागत लगभग 50 लाख है। 22-हेडर माइक्रोस्कोप की क्रय प्रक्रिया वित्तीय वर्ष 2023 में हुई थी, जिसका स्थापना हाल ही मे हुई। 22-हेडर माइक्रोस्कोप में एक बार में 22 व्यक्ति एक साथ माइक्रोस्कोपी मूल्याकंन कर सकते है। साथ ही इसे कई स्क्रीनो से भी जुड़ा है एंव इसमें आनलाइन टेली कॉन्फ्रेंसिंग के द्वारा शिक्षण रिकॉर्डिग की भी सुविधा उपलब्ध है। इस 22-हेडर माइक्रोस्कोप में एचडीएमआई मल्टी आउटपुट फोटोग्राफिक कैमरा के साथ-साथ हाई एंड ऑप्टिक्स है। पैथोलॉजी विभाग में इस सुविधा का उपयोग फैकल्टी सदस्यों के द्वारा स्नातकोत्तर छात्रों के शिक्षण हेतु नियमित कार्यशालाए एंव लाइव माइक्रोस्कोपी सेशन आयोजित करने में किया जायेगा।

बता दें कि डा राम मनोहर लोहिया आयुर्विज्ञान संस्थान का पैथालॉजी विभाग राज्य ही नही वरन देश के सबसे उच्च स्तरीय पैथोलॉजी विभागो में से एक है जिसमें विश्व स्तरीय जाँचें की जा रही है। यह विभाग पूरे प्रदेश का एक मात्र स्टेट रेफरल सेन्टर है जिसमें पूरे प्रदेश के दूर दराज़ क्षेत्रों के मरीज अपनी जाँच के लिए सेम्पल जमा करा सकते है।

बसपा ने जारी की दसवीं सूची, अमेठी से नन्हे होंगे प्रत्याशी

लखनऊ। लोकसभा चुनाव को देखते हुए बहुजन समाज पार्टी की तरफ से सोमवार शाम को प्रत्याशियों की दसवीं सूची जारी कर दी गयी है। जारी सूची में प्रदेश की हाई प्रोफाइल सीटों में शामिल अमेठी से पार्टी ने नन्हे सिंह चौहान को प्रत्याशी बनाया है। वहीं प्रतापगढ़ से प्रथमेश मिश्रा और झांसी से रवि प्रकाश कुशवाहा को पार्टी ने टिकट दिया है।

शाहजहांपुर व खीरी में भाजपा की हैट्रिक को रोकने में जुटा विपक्ष

सतीश सिंह। लखनऊ

लोकसभा चुनाव के चौथे चरण में यूपी के अंतर्गत आने वाली शाहजहांपुर व खीरी संसदीय सीट पर इस बार भाजपा के हैट्रिक रथ को रोकने के लिए विपक्ष जी-जान से लगा हुआ है। इन दोनों सीटों पर भाजपा लगातार दो चुनावों से काबिज है। ऐसे में आने वाले दिनों में यह तस्वीर साफ होगी कि भाजपा हैट्रिक बनायेगी या फिर विपक्ष के खाते में जीत नसीब होगी।

शाहजहांपुर लोकसभा सीट

शाहजहांपुर जिले में एक ही लोकसभा सीट है। इस बार यहां से भाजपा ने अपने सांसद अरूण कुमार सागर पर भरोसा जताया है। वहीं सपा से ज्योत्सना गौंड और बसपा से दोदराम वर्मा मैदान में हैं। पिछले लोकसभा चुनावों की बात करें तो वर्ष 2019 के चुनाव में भाजपा के अरूण कुमार सागर ने बीएसपी के अमरचंद जौहर को हराया था। वहीं 2014 के चुनाव में भाजपा के कृष्णाराज ने बसपा के उम्मेद कश्यप को हराया था। जबकि 2009 के लोकसभा चुनाव में सपा की मिथिलेश ने बसपा की सुनीता सिंह को हराया था। शाहजहांपुर लोकसभा सीट में करीब 22 लाख मतदाता हैं। साल 2019 के चुनावी आंकड़ों के मुताबिक, इस सीट पर 80 फीसदी हिंदू और करीब 20 प्रतिशत मुस्लिम वोटर हैं। यहां पर मौर्य, कुशवाहा, कश्यप, सैनी समेत अति पिछड़ी जातियों का वर्चस्व है। यही वजह है कि उम्मीदवारी की जंग भी इन्हीं जातियों में सिमटी रहती है।

राजनीतिक अहमियत से महत्वपूर्ण सीट

राजनीतिक अहमियत राजनीतिक दृष्टिकोण से शाहजहांपुर काफी समृद्ध रहा। सरसंघ चालक रज्जू भैया भी इसी जिले से थे। कांग्रेस के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष रहे स्व. जितेंद्र प्रसाद उर्फ बाबा साहब यहीं से थे। वो पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी और पीवी नरसिम्हा राव के राजनीतिक सलाहकार रहे थे। उनके बेटे जितिन प्रसाद यूपीए सरकार में दो बार केंद्रीय राज्यमंत्री रहे हैं। स्व. बाबू सत्यपाल सिंह यादव भी केंद्र सरकार में राज्यमंत्री रहे। प्रदेश सरकार में कैबिनेट मंत्री सुरेश कुमार खन्ना के पास अहम जिम्मेदारी हैं।

6 विधानसभा सीट शामिल

शाहजहांपुर लोकसभा क्षेत्र के तहत 6 विधानसभा सीटें कटरा, जलालाबाद, तिलहर, पुवायां, शाहजहांपुर और ददरौल आती हैं। जिले में अब तक लोकसभा चुनाव में कांग्रेस का दबदबा रहा है। 1952 और 57 के चुनावों में शाहजहांपुर व फर्रुखाबाद संयुक्त लोकसभा सीट थी। यहां से दो सांसद चुने जाते थे। यहां से अब तक नौ बार कांग्रेस के सांसद चुने जा चुके हैं।

भाजपा तीन बार चुनाव जीती है, जबकि दो बार सपा के खाते में सीट आई है। 1980 और 1984 में जितेंद्र प्रसाद कांग्रेस से जीते। 1989 में सत्यपाल सिंह यादव कांग्रेस जगजीवन राम से सांसद बने। 1991 में सत्यपाल सिंह यादव जनता दल से सांसद बने। 1996 में राममूर्ति सिंह वर्मा कांग्रेस से जीते। 1998 में भी सत्यपाल सिंह यादव भाजपा से सांसद बने। इसी तरह 1999 में जितेंद्र प्रसाद कांग्रेस से जीते। 2001उपचुनाव में जितेंद्र प्रसाद का निधन होने से सपा से राममूर्ति सिंह वर्मा जीते। 2004 में कांग्रेस से जितिन प्रसाद जीते। 2009 में सपा से मिथिलेश कुमार को जीत मिली। 2014 में भाजपा से कृष्णाराज जीती थीं। 2019 में भाजपा के अरुण कुमार सागर ने जीत दर्ज की।

खीरी लोकसभा सीट

प्रदेश का एकमात्र नेशनल पार्क दुधवा नेशनल पार्क, लखीमपुर खीरी जिले में ही है। खीरी संसदीय सीट से केंद्रीय मंत्री अजय मिश्रा टेनी सांसद हैं। इस बार चुनाव में भाजपा ने फिर टेनी पर दांव लगाया है। वहीं सपा से उत्कर्ष वर्मा मधुर और बसपा से अंशय सिंह कालरा मैदान में अपनी जीत के दावे ठोक रहे हैं। बता अगर पिछले लोकसभा चुनाव की करें तो बीजेपी के अजय कुमार मिश्र ने सपा की डॉ. पूर्वी वर्मा को हराया था। वहीं 2014 के लोकसभा चुनाव में भाजपा ने बसपा के अरविंद गिरी को हराया था। वहीं 2009 के चुनाव में कांग्रेस के जफर अली नकवी ने बीएसपी के इलियास आजमी को हराया था।

पांच विधानसभा सीट शामिल

लखीमपुर खीरी सीट के तहत 5 विधानसभा सीटें पलिया, निघासन, गोला गोरखनाथ, लखीमपुर और श्रीनगर सीटें आती हैं। 2022 के विधानसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी को इन सभी सीटों पर जीत मिली थी। 2017 के चुनाव में भी बीजेपी ने सभी पांचों सीटों पर क्लीन स्वीप किया था।

ज्यादातर कांग्रेस का रहा है कब्जा: पहले आम चुनाव से अब तक सबसे ज्यादा नौ बार कांग्रेस, चार बार भाजपा, तीन बार सपा, एक-एक बार जनता पार्टी और प्रजा सोशलिस्ट पार्टी (प्रसोपा) ने जीत दर्ज कराई है। 1952 में पहले आम चुनाव में कांग्रेस के रामेश्वर प्रसाद नेवरिया सांसद निर्वाचित हुए। 1957 में प्रसोपा से कुंवर खुशवंत राय सांसद चुने गए। 1962, 1967 व 1972 तक लगातार कांग्रेस के बाल गोविंद वर्मा जीते। 1977 में जनता पार्टी के सुरथ बहादुर शाह ने जीत दर्ज की। 1980 में फिर कांग्रेस के बाल गोविंद वर्मा जीते, मगर कुछ दिन बाद उनका निधन हो गया। उनकी पत्नी ऊषा वर्मा कांग्रेस के टिकट पर तीन बार 1980, 1985 और 1989 में सांसद चुनी गईं। 1991 और 1996 में लगातार दो बार भाजपा के जीएल कनौजिया सांसद बने। बाल गोविंद वर्मा के पुत्र रवि प्रकाश वर्मा ने सपा से लगातार तीन बार 1998, 1999 व 2004 में जीत दर्ज कराई। 2009 में कांग्रेस प्रत्याशी जफर अली नकवी ने अजय कुमार मिश्रा टेनी को हराया था। 2014 व 2019 में टेनी सांसद बने।

मतदान राष्ट्र के विकास के लिए आवश्यकः न्यायमूर्ति अजीत कुमार

पायनियर समाचार सेवा। प्रयागराज

मतदान एक पूजा है जिसे करने से राष्ट्र के विकास की दशा और दिशा तय होती है और अपेक्षित परिणाम भी मिलते हैं। हो सकता है की मौसम एवं सुविधाएं प्रतिकूल हों फिर भी पूरे जोश खरोश से मतदान करने से अनुकूल राष्ट्रीय परिणाम मिलते हैं। यह बातें इलाहाबाद उच्च न्यायालय के न्यायाधीश न्यायमूर्ति अजीत कुमार ने कमला प्रसाद सोसायटी ऑफ इंडस्ट्रियस फैमिलीज द्वारा कमला नेहरू रोड स्थित शंकर लाल मेमोरियल सभागार में आयोजित जागरूक मतदाता विकसित राष्ट्र विषयक विचार गोष्ठी में कहीं। न्यायमूर्ति अजीत कुमार ने कहा कि नागरिकों को केवल मतदाता ही नहीं होना चाहिए बल्कि जागरूक मतदाता बनकर राष्ट्र के आर्थिक और सामाजिक स्वतंत्रता हेतु न केवल स्वयं मतदान करना चाहिए। साथ ही दूसरों को भी प्रोत्साहित करना चाहिए तभी राष्ट्र अपने विकास के समग्र उद्देश्यों को प्राप्त कर सकेगा। मुख्य अतिथि ने दीप प्रज्वलन कर गोष्ठी की शुरुआत की। कमला प्रसाद सोसाईटी की अध्यक्ष रतन श्रीवास्तव ने सोसाइटी द्वारा किए गए कार्यों पर विस्तार से प्रकाश डाला और मतदान हेतु अपनी भूमिका बढ़ाने की का संकल्प लिया। गोष्ठी का विषय प्रवर्तन करते हुए वरिष्ठ पत्रकार डॉ प्रदीप भटनागर ने लोकतंत्र एवं मतदान के आलोक में जागरुक एवं सतर्क रहने पर बल दिया। वरिष्ठ पत्रकार स्नेह मधुर ने सामान्य मतदान करने और जागरुक मतदान करने के अंतर के परिणामों से अवगत कराया। कायस्थ पाठशाला के अध्यक्ष डॉ सुशील सिन्हा ने अनेक सरकारी एवं गैर सरकारी प्रयासों के बावजूद मतदान प्रतिशत न बढ़ने और इसके गिरने पर चिंता व्यक्त की। डॉ सिन्हा ने सघन जनसंपर्क कर मतदान प्रोत्साहन का प्रयास करने के लिए उपस्थित जन का आवाहन किया। अवकाश प्राप्त आईएएस राम शरण वर्मा ने अपने कार्यकाल के अनुभवों को साझा किया। इस अवसर मुख्य स्थाई अधिवक्ता कुणाल रवि सिंह मुख्य स्थाई अधिवक्ता प्रथम जे एन मौर्य अरविंद श्रीवास्तव अर्चना श्रीवास्तव सुनील श्रीवास्तव यश सिंघल आलोक नारायण श्रीवास्तव को विधि के क्षेत्र में बृजेश श्रीवास्तव को अध्यापन के क्षेत्र में कुंदन श्रीवास्तव एवं पवन द्विवेदी को पत्रकारिता के क्षेत्र में तथा विद्यार्थी विवेकिता रंजन श्रीवास्तव को अध्ययन के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए सम्मानित किया गया।कार्यक्रम की अध्यक्षता कायस्थ पाठशाला के पूर्व अध्यक्ष एवं वरिष्ठ अधिवक्ता टी पी सिंह एवं संचालन कायस्थ पाठशाला के उपाध्यक्ष संपत्ति एवं समन्वय धीरेंद्र श्रीवास्तव ने किया अतिथियों का स्वागत कमला प्रसाद सोसाइटी के उपाध्यक्ष गोविंद खरे एवं धन्यवाद ज्ञापन कार्यक्रम संयोजक वैभव श्रीवास्तव ने किया।गोष्ठी में अनूप श्रीवास्तव अभिनव श्रीवास्तव अनीता श्रीवास्तव शिव नारायण सुराही हिमांशु श्रीवास्तव राकेश कुमार अजय कुशवाहा उदय कुमार गोपी कृष्ण श्रीवास्तव आदि रहे।

भाजपा के दोनों प्रत्याशी डिप्टी सीएम की मौजूदगी में कल करेंगे नामांकन

प्रयागराज। फूलपुर एवं इलाहाबाद लोकसभा सीट से भाजपा के प्रत्याशी प्रवीण पटेल और नीरज त्रिपाठी एक मई को अपना पर्चा दाखिल करेंगे। महानगर अध्यक्ष राजेंद्र मिश्र ने बताया कि एक मई को चंद्रशेखर आजाद पार्क से सुबह दस बजे पार्टी के दोनों प्रत्याशी पार्टी कार्यकर्ताओं पदाधिकारियों के साथ नामांकन दाखिल करेंगे। इस दौरान पार्टी के वरिष्ठ नेता और डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य उपस्थित रहेंगे। महानगर अध्यक्ष राजेंद्र मिश्रा ने बताया कि दोनों प्रत्याशी पार्टी कार्यकर्ताओं के साथ चंद्रशेखर आजाद पार्क से कर्नलगंज नेतराम चौराहा होते हुए कचहरी प्रधान डाकघर पहुंचेंगे। उसके बाद नामांकन दाखिल करेंगे। इस दौरान पार्टी के वरिष्ठ नेता विधायक पार्टी पदाधिकारी कार्यकर्ता उपस्थित रहेंगे। नामांकन की तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। नामांकन को लेकर लोकसभा प्रभारी बालेंदु मणि त्रिपाठी महानगर अध्यक्ष राजेंद्र मिश्र विधायक गुरु प्रसाद मौर्य गंगापार जिलाध्यक्ष कविता पटेल ने बैठक कर रूपरेखा तैयार की एवं चंद्रशेखर आजाद पार्क के पास स्थलीय जायजा भी लिया। जहां दोनों प्रत्याशियों एवं कार्यकर्ताओं को पहुंचना है। मीडिया प्रभारी विवेक मिश्र ने बताया कि नामांकन को लेकर कार्यकर्ताओं में उत्साह का माहौल है। भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी नीरज त्रिपाठी अपना नामांकन एक मई को नामांकन करेंगे। भाजपा जिला मीडिया प्रभारी दिलीप कुमार चतुर्वेदी ने बताया कि सभी कार्यकर्ता एक मई को सुबह दस बजे चन्द्रशेखर आजाद पार्क के सामने एकत्रित होंगे। उसके बाद जुलूस कचहरी के लिए प्रस्थान करेगा। इस अवसर पर प्रदेश सरकार के उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्या सांसद प्रयागराज प्रो रीता बहुगुणा जोशी जिला प्रभारी और काशी क्षेत्र महामंत्री सुशील त्रिपाठी लोकसभा प्रभारी मनोज जायसवाल लोकसभा संयोजक शिवदत्त पटेल जिलाध्यक्ष यमुनापार विनोद प्रजापति जिलाध्यक्ष महानगर राजेन्द्र मिश्र आदि रहेंगे। मीडिया प्रभारी राजेश केशरवानी ने बताया कि नीरज त्रिपाठी और प्रवीण पटेल एक मई को संयुक्त रूप से लोकसभा चुनाव के लिए अपना नामांकन करेंगे। नामांकन के अवसर पर उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य शामिल रहेंगे और दोनों प्रत्याशी अपने समर्थकों और पार्टी कार्यकर्ताओं के साथ चंद्रशेखर आजाद पार्क से एक मई को सुबह सुबह बजे नामांकन पदयात्रा अंतर्गत अपनी शक्ति का प्रदर्शन करते हुए नामांकन स्थल जिला कलेक्ट्रेट पहुंचेंगे। इसके अलावा सांसद डा रीता बहुगुणा जोशी सांसद केशरी देवी पटेल महापौर गणेश केसरवानी विधायक हर्षवर्धन बाजपेई सिद्धार्थ नाथ सिंह पियूष रंजन निषाद वाचस्पति राजमणि कोल जिला पंचायत अध्यक्ष डा वी के सिंह एमएलसी निर्मला पासवान सुरेंद्र चौधरी के पी श्रीवास्तव महानगर अध्यक्ष राजेंद्र मिश्रा जिलाध्यक्ष यमुनापार विनोद प्रजापति एवं गंगापार कविता सिंह पटेल देवेंद्र नाथ मिश्रा उपस्थित रहेंगे।

100000 से ऊपर के संदिग्ध अंतरणों की बैंकों को प्रतिदिन देनी होगी सूचना

अंबेडकर नगर। जनपद के व्यय प्रेक्षक राजा भट्टाचार्जी ने निर्वाचन में होने वाले व्यय पर निगरानी रखने वाली संबंधित टीमों के साथ बैठक किया। उसमें मुख्य रूप से लेखा समिति टीमए मीडिया मॉनिटरिंग टीमए वीडियो अवलोकन समितिए सहायक व्यय प्रेक्षक ए मीडिया मॉनिटरिंग कमेटीए कॉल सेंटर के सहायक प्रभारी एआबकारी टीम एलीड बैंक मैनेजरएआयकर अधिकारीए जीएसटी अंबेडकर नगर के अधिकारियों के साथ बैठक किया और आवश्यक निर्देश दिए। बैंकों को ?100000 से ऊपर के संदिग्ध अंतरणों के लेनदेन की सूचना प्रतिदिन मॉडल कोड ऑफ़कंडक्ट के प्रभारी के साथ.साथ प्रेक्षक को भी उपलब्ध कराएंगे। पेड न्यूज और फेक न्यूज़ पर सतत नजर रखने का निर्देश दिया।आयकर विभाग को 10 लाख से ऊपर के ट्रांजैक्शन की सूचना देने का निर्देश दिया। समस्त सहायक व्यय प्रेक्षको को निर्वाचन व्यय से संबंधित बारीक जानकारी से अवगत कराया। बैठक में समस्त प्रभारी अधिकारी के साथ.साथ से व्यय के नोडल वरिष्ठ कोषाधिकारी बृजलालए लाइजनिंग अफ़सरए प्रेक्षकके नोडल अधिकारी अविनाश पांडेय तथा जिला सूचना अधिकारी श्री संतोष द्विवेदी उपस्थित थे।

पन्ना प्रमुखों के माध्यम से केंद्र व प्रदेश सरकार की विकास कार्यों की चर्चा

मीरजापुर भारतीय जनता पार्टी बरौंधा कचार भाजपा जिला कार्यालय के सभागार में जिला उपाध्यक्ष दिनेश प्रताप सिंह जी की अध्यक्षता में लोकसभा सदस्य ;करनालए हरियाणा ध् लोकसभा चुनाव 2024 के प्रदेश सह प्रभारी मा0 संजय भाटिया जी ने मुख्य अतिथि ध् मुख्य वक्ता के रूप में लोकसभा चुनाव के कोर कमेटी व प्रबंधन की समिति की बैठक लिया । जिसमें लोकसभा प्रभारी रविन्द्र नाथ पाठक जी आये हुए मुख्य अतिथि व प्रबंधन समिति के सदस्यों का स्वागत अभिनंदन कर आभार व्यक्त किया । तत्पश्चात मुख्य वक्ता कोर कमेटी के सभी सदस्यों से उनके दिये हुये जिम्मेदारियों की दैनिक रिपोर्ट पूछा तथा आगामी कार्यक्रमों की विस्तृत जानकारी दी । प्रबंधन समिति के सभी सदस्यों से लगाए गये जिम्मेदारियों के कार्यो की समीक्षा बैठक लिया तथा दैनिक रिपोर्ट की मॉनिटरिंग किया साथ में उन्होंने बूथ प्रबंधन समिति के बारे में विस्तृत चर्चा करते हुए कहा कि बूथ अध्यक्ष व उनके साथ लगाये गये पन्ना समिति को मजबूत करना है । इन्ही पन्ना प्रमुखों के माध्यम से केंद्र व प्रदेश सरकार की विकास कार्यों की चर्चा जनता तक पहुँचाया जायेगा । साथ में आगामी संगठनात्मक योजनाओं को बताया । बैठक का संचालन लोकसभा संयोजक ध् जिला महामंत्री दिनेश वर्मा ने किया । उक्त बैठक में मुख्य रूप से जिला प्रभारी सरोज कुशवाहाए मड़िहान विधायक रमाशंकर सिंह पटेलए जिला पंचायत अध्यक्ष राजू कन्नौजियाए नगर पालिका अध्यक्ष अहरौरा ओम प्रकाश केशरीए चेयरमैन डीसीबी डॉ0 जगदीश सिंह पटेलए चेयरमैन डीसीएफ विजय कुमार वर्माए जिला उपाध्यक्ष अमित कुमार पाण्डेयए जिला महामंत्री हरिशंकर सिंह पटेलए रवि शंकर पाण्डेयए जिला मीडिया प्रभारी ज्ञान प्रकाश दूबेए प्रणेश प्रताप सिंह के साथ दृ साथ सभी प्रबंधन समिति के सदस्यगण उपस्थित रहे ।

रीप्रिज्म के अंतर्गत किया गया पॉलीहाऊस का शुभारंभ

सोनभद्र। हिण्डाल्को रेणुकूट द्वारा रीप्रिज्म के अंतर्गत विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन कर अपने विनिर्माण को उत्सव के रूप में मनाया जा रहा है। इसी क्रम में संस्थान के ग्रामीण विकास विभाग सी.एस.आर द्वारा आदित्य बिड़ला रूरल टेक्नोलॉजी पार्क म्योरपुर में आजीविका संवर्धन के लिए विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इस अवसर पर हिण्डाल्को रेणुकूट के मुखिया एन. नागेश एल्युमिना प्लांट हेड एन.एन. रॉय स्मेल्टर प्लांट हेड जे.पी. नायक वित्त एंव वाणिज्य प्रमुख उज्जल केश सी.एस.आर. प्रमुख अविजित प्रोजेक्ट हेड राजेश कपूर प्रोजेक्ट विभाग के तापस चौधरी सुरक्षा प्रमुख कर्नल से.नि. रोहित शर्मा आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम के प्रारम्भ में एन. नागेश द्वारा विधिवत पॉलीहाऊस का शुभारंभ किया गया। पॉलीहाऊस उद्यानिकी विषय पर आधारित नवीनतम प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए समर्पित है जिसमें उन्नत तकनीक का प्रयोग करते हुए गैर मौसमी फल एवं सब्जियों के उत्पादन हेतु कृषकों को प्रशिक्षण प्रदान किया जायेगा। पॉलीहाऊस में स्वचालित वातानुकुलन प्रणाली का प्रयोग किया गया है जिसमें हाइड्रोफोनिक कृषि, ग्रो बैग द्वारा जैविक खेती तथा टपक पद्धति द्वारा सिंचाई आदि का प्रशिक्षण कृषकों को दिया जायेगा। तत्पश्चात् कंपनी के वरिष्ठ अधिकारियों की उपस्थिति में कौशल विकास प्रशिक्षुओं के लिए आयोजित वार्षिक कार्यक्रम की शुरूआत की गई जिसके अंतर्गत हिण्डाल्को ग्रामीण विकास विभाग द्वारा विगत वर्ष 447 प्रशिक्षुओं को कम्प्यूटर हैण्डीक्राफ्ट ब्यूटी पार्लर एवं टेलरिंग आदि विषयों में प्रशिक्षण प्रदान किया गया व नये सत्र में 211 प्रशिक्षुओं ने विभिन्न ट्रेड में अपना नामांकन दर्ज कराया। कार्यक्रम के अंतर्गत वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा विगत वर्ष के प्रशिक्षुओं को प्रशिक्षण प्रमाण पत्र वितरण किया गया साथ ही कम्प्यूटर हैण्डीक्राफ्ट ब्यूटी पार्लर टेलरिंग आदि विषय के सभी नवप्रवेषी प्रशिक्षुओं को प्रशिक्षण किट एवं टेलरिंग प्रशिक्षण प्राप्त महिलाओं को सिलाई मशीन वितरित किया गया। इस अवसर पर एन. नागेश ने कहा कि हमारा संस्थान समुदाय के विकास हेतु प्रतिबद्ध है। आजीविका संवर्धन के क्षेत्र में सी.एस.आर. द्वारा आयोजित कौशल विकास प्रशिक्षण एवं महिलाओं में उद्यमिता विकास द्वारा आर्थिक सशक्तिकरण को बढ़ावा मिलता है। अंत में रीप्रिज्म के अंतर्गत ग्रामीण विकास विभाग के सभी कार्यकर्ताओं को पुरस्कृत कर सम्मानित किया गया।

पहले मतदान करें फिर दूजा काम करें

प्रयागराज। सिविल लाइंस स्थित एक होटल में प्रयागराज सीनियर सिटीजन कौंसिल के तत्वावधान में मतदाता जागरूकता अभियान के अंतर्गत गोष्ठी आयोजित की गई। जिसका शुभारंभ राष्ट्रगान के साथ हुआ। कार्यक्रम का विषय परवर्तन नरेश राय ने किया। जबकि अध्यक्षता राजीव महेश्वरी ने की। मुख्य अतिथि डीआईओएस पी एन सिंह का परिचय नरेश राय ने दिया। डीआईओएस पी एन सिंह ने कहा कि आप सब वरिष्ठ नागरिकों को मत देने का पूर्व अनुभव है। आप केवल स्वयं का ही मत नहीं जरूरतमंद की सहायता करके उनसे मत दिलवाने के लिए जागरूक करने का प्रयास करना चाहिए। प्रत्येक नागरिक को अपने मत का प्रयोग अवश्य करना चाहिए। 25 मई को प्रयाग में पहले मतदान करें फिर दूजा काम करें। उन्होंने स्वीप एप की सहायता लेने का भी अनुरोध किया। जिससे आपको बहुत सहायता मिलेगी। ऐसा आपका कथन था। धन्यवाद प्रस्ताव के साथ पूर्व न्यायमूर्ति राजेश कुमार ने कहा कि हमें स्वयं जागरूक होकर अपने विवेक के अनुसार मतदान राष्ट्रहित के लिए करना चाहिए। कार्यक्रम में इसी संदर्भ में सतपाल गुलाटी ने कहा की आधुनिक टेक्नोलॉजी का प्रयोग भी करना चाहिए। जो आगे चलकर बहुत जरूरी होगा। कार्यक्रम में सीए डॉ नवीन अग्रवाल रविंद्र गुप्ता दिनेश रस्तोगी वी के मित्तल सुनील धवन देव दीपक आर्य आर बी सिंह डॉ पी के सिन्हा ललित कुमार नीशीत जौहरी रमेश वेश जी के खरे राकेश मित्तल आदि उपस्थित थे।

जनता की सेवा के लिए दिया पद से इस्तीफाः नीरज त्रिपाठी

प्रयागराज। भारतीय जनता पार्टी अपना दल एवं निषाद पार्टी के संयुक्त प्रत्याशी नीरज त्रिपाठी ने करछना विधानसभा के क्षेत्र में बी एस गेस्ट हाउस में आयोजित सामाजिक समरसता की बैठक और प्रत्याशी जनसंपर्क जन संवाद कार्यक्रम के अंतर्गत पार्टी कार्यकर्ता एवं जनता से संवाद स्थापित किया। इस मौके पर कहा कि पूर्व राज्यपाल पंडित केसरी नाथ त्रिपाठी ने राजनीति की लख लंबी पारी खेली लेकिन उनके दामन में एक भी भ्रष्टाचार के दाग नहीं लगे। उन्हीं के मार्गदर्शन पर चलते हुए जनता की सेवा का व्रत लिया हूं और जनता की सेवा के लिए अपने पद से इस्तीफ़ा दिया है। प्रयागराज के विकास के लिए लोकसभा चुनाव के मैदान में उतरा हूं। कहा कि देश और प्रदेश के विकास के लिए हमें मोदी और योगी के हाथों को मजबूत करना होगा। मीडिया प्रभारी राजेश केसरवानी ने बताया कि आज रामपुर बाजार करछना बाजार घटवा चौराहा बरदवा अकोढ़ा बाजार पुराधीसन चौराहा पुरवा राजपूत मार्केट हथिगन बारादरीकर्मा छरिबना क्षेत्र में जनसंपर्क किया गया। इस अवसर पर विधायक पीयूष रंजन निषाद जिलाध्यक्ष यमुनापार विनोद प्रजापति राजेश केसरवानी दिलीप कुमार

मतदाता जागरूकता साइकिल यात्रा निकली

चन्दौली। पण्डित दीन दयाल उपाध्याय नगर उप जिलाधिकारी अधिकारी विराग पाण्डेय के निर्देशन में मतदाता जागरूकता कार्यक्रम के अन्तर्गत आज पण्डित दीन दयाल उपाध्याय जंक्शन के सर्कुलेटिंग एरिया में मतदान जागरूकता साईकिल यात्रा निकाला गया जिसका एसडीएम विराग पाण्डेय द्वारा हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया जो नगर भ्रमण करते हुए जीटी रोडए कैलाशपुरीए रवि नगरए आर्य समाज मंदिरए सब्जी मंडीए लाठ नम्बर 2ए गल्ला मंडीए धर्मशाला होते हुए अथा स्थान पर पहुंचकर विराम किया। पूरे साईकिल यात्रा की निगरानी और सुरक्षा निरज चतुर्वेदी नायब तहसीलदार पीडीडीयू नगर कवच कुण्डल की भाती किया।कार्यक्रम में नीरज चतुर्वेदी नायब तहसीलदार पीडीडीयू बच्चों द्वारा शत प्रतिशत मतदान करने हेतू बुलंद आवाज में नारा लगाते हुए लोगों को 1 जून को शत प्रतिशत मतदान के लिए समाज और अन्य सभी लोगों से अपील किया गया।इस दौरान ष्पहले मतदानएफिर जलपानष् के स्लोगन के साथ लोगों को जागरूक किया गया।इस अवसर पर राजेश कुमार सिंहएसचिन सिंहएनागेन्द्र कुमार मिश्राएजीआरपी डीडीयूएआनन्द कुमार श्रीवास्तवएआरपीएफडीडीयू द्वारा सामूहिक तौर पर मतदान करने के लिए लोगों से अपील की गईएसाथ ही उपस्थित लोगों द्वारा मतदाता शपथ भी कराया गया।

चुनाव में प्रतिभाग के लिए प्रेरित करना व हिंदू विषयों पर हुई चर्चा

गाजीपुर। सौ प्रतिशत मतदान को लेकर बैठक संघ कार्यालय पर सोमवार को सम्पन्न हुयी। जिसमें स्वदेशी जागरण मंच के क्षेत्रीय संयोजकए श्री अनुपम काशी प्रान्त के सह.समन्वयकएस्वावलम्बी भारत अभियान अजय आनन्दए जिला संरक्षक राम प्रसाद गुप्ताए संघ के जिला संघचालक जय प्रकाशए नगर संघचालक दीनदयाल एवं भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ कार्यकर्ता व पदाधिकारी किरण सिंहए वंदना रायए साधना रायए भारत विकास परिषद से अनिल उपाध्याय आदि उपस्थित रहे। इस बैठक में लोकमत परिष्कार को लेकर विस्तृत चर्चा हुई। चुनाव में प्रतिभागी लोकतंत्र को प्रेरित करना व सौ प्रतिशत को सुनिश्चित करना हिंदू विषयों पर चर्चा केंद्रित रही। अधिकारियों ने मतदान को प्रेरित करने की तैयारियों का जायज़ा लिया व आवश्यक सुझाव भी दिए। इस अवसर पर अनुपम श्रीवास्तव ने कहा कि प्रतिभागी लोकतंत्र का कोई दूसरा विकल्प नहीं हो सकता। किसी भी विकसित समाज में लोकतंत्र एक आदर्श व्यवस्था है हमें उसी को प्राप्त करने की चेष्टा करनी चाहिए। संघचालक जयप्रकाश ने कहा कि राष्ट्र इस समय अंतर्राष्ट्रीय चुनौतियों के समक्ष प्रस्तुत है हमें अपना मतदान व्यापक दृष्टि के तहत करना चाहिए जिससे कि राष्ट्र की स्थिति अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था में उत्तरोत्तर दृढ़ होती जाए। मतदान के संबंध में प्रान्त सह.समन्वयक अजय आनन्द ने कहा कि हमें मतदान के व्यावहारिक कमियों को दूर करते हुएए ज्यादा से ज्यादा सहभागिता से अधिक से अधिक लोगों को प्रेरित करने पर बल देना होगा। हमें छोटे.छोटे बहुत सारे समेकित प्रयासों को समय रहते पूरा कर लेना होगा।

बच्चों ने निकाली पर्यावरण जागरूकता रैली

सोनभद्र। रेनूपावर प्राथमिक पाठशाला रेनूसागर की प्रधानाध्यापिका डॉक्टर पूनम वार्ष्णेय के मार्गदर्शन में पर्यावरण जागरूकता अभियान के अंतर्गत पृथ्वी को बचाने हेतु रेनूपावर प्राथमिक पाठशाला रेनूसागर के बच्चो द्वारा एक विशाल रैली निकाली गई। विद्यालय के बच्चों ने हाथ में पोस्टर एवं बैनर लेकर कॉलोनी परिसर के विभिन्न मार्गो से होते हुए बिरला मार्केट रेनूसागर तक एक विशाल रैली निकाली। बच्चों द्वारा बिरला मार्केट के सभी छोटे एवं बड़े दुकानदारों को कागज के थैले वितरित किए गए तथा उनसे प्लास्टिक के थैलो का उपयोग न करने की अपील की। सभी दुकानदारों ने बच्चों के इस कार्य की मुक्त कंठ से सराहना करते हुए प्लास्टिक का उपयोग न करने की बात कही। रैली के उपरांत बच्चो व अध्यापको ने सभी सम्बोधित करते हुए कहा कि जहरीली गैस सें वैसे ही पृथ्वी का भी दम घोटती हैं जैसे बुखार होने पर हमें सांस लेने में दिक्कत होती हैं। हम संकल्प लें कि हम किसी भी हाल में प्लास्टिक का उपयोग नहीं करेंगे प्रदूषण नहीं फैलाएंगें बल्कि हम पेड़ पौधों पशु पक्षी जल जंगल जमीन की हिफाजत करेगे और आने वाली पीढ़ी को बेहतर भविष्य देगें। कार्यक्रम के अंत में बच्चों का उत्साह वर्धन करते हुए जय श्री आर्नामेंट के प्रोपराइटर नीलकमल सोनी एवं नरेश शर्मा द्वारा सभी बच्चों में मिष्ठान्न वितरण कराया।

इस चुनाव में एक तरफ सुहाग लूटने वाले और दूसरी तरफ रक्षा करने वालेः जायसवाल

गाजीपुर। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी व मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में देश व प्रदेश की सरकारो ने प्रदेश मे विकास की गति को तेज करते हुए राजनीति मे विश्वास पैदा किया है। यह बात आज नगर के एक मैरेज हाल में भाजपा शोसल मीडिया लोकसभा गाजीपुर के वालंटियर्स सम्मेलन मे उ प्र सरकार के मा मंत्री रविन्द्र जायसवाल ने साइबर योद्धाओं को सम्बोधित करते हुए कही उन्होंने कहा कि अपराधिक गतिविधियों के कारण गाजीपुर में कोई आना नहीं चाहता था। जिस मिथक को भाजपा ने नये स्वरूप मे परिवर्तित कर जिले को नयी पहचान दिलाई है?। उन्होंने कहा कि लोकतंत्र में परिवार वाद के कारण देश की राजनीति बदनाम हुई जिससे देश का विकास प्रभावित हुआ और ऐसी राजनीति से गाजीपुर भी वंचित नहीं रह पाया और उस आतंक को रोकने का काम भाजपा ने किया है। उन्होंने साइबर योद्धाओं का आह्वान करते हुए कहा कि गाजीपुर की राजनीति को अपराध से दूर रखना आप लोगों का काम है। उन्होंने कहा कि लोकतंत्र के इस चुनाव में एक तरफसुहाग लूटने वाले और एक तरफसुहाग की रक्षा करने वाले लोग हैं यह बताना होगा। उन्होंने कहा कि देश में तुष्टिकरण की राजनीति न हो यह हमारा प्रयास होना चाहिए। उन्होंने कांग्रेस पर निशाना साधते हुए कहा कि पूर्व की सरकारों ने देश के साथ बहुत अन्याय किया है उनको सबक सिखाना होगाए शिक्षा और अपराध दोनों में अंतर करना होगा। उन्होंने कार्यकर्ताओं से राष्ट्रवाद के लिए एक माह का समर्पण मांगा और प्रत्येक बुथो पर मतदान बढे इसका आह्वान किया। राज्यसभा सांसद डा संगीता बलवंत ने कहा कि चुनाव के इस रण में सबसे मजबूत धारदार व हृदयस्पर्शी शस्त्र साइबर योद्धाओं के पास है और उन्होंने कहा कि इसमें कोई शक नहीं है कि भाजपा अगर आज विश्व की सबसे बड़ी पार्टी बनी है तो वह साइबर योद्धाओं के बदौलत है। उन्होंने कहा कि भ्रष्टाचारियों के भ्रष्टाचार को उजागर करना और भाजपा की बात लोगों तक पहुंचाना नैतिक जिम्मेदारी है।

एक मई से चलेगी मार्निंग कोर्ट

सोनभद्र। जनपद न्यायाधीश रवींद्र विक्रम सिंह ने अवगत कराया है कि एक मई से मार्निंग कोर्ट चलेगी। उच्च न्यायालय इलाहाबाद के दिशा निर्देश के अनुपालन में न्यायालय का समय प्रातः 7.00 बजे से दोपहर बाद 1.00 बजे तक किये जाने हेतु प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया है। उच्च न्यायालय इलाहाबाद द्वारा जारी आदेश के क्रम में माह मई व जून हेतु जनपद न्यायालय सोनभद्र का समय सुबह 7.00 बजे से अपराह्न 1.00 बजे तक निर्धारित किया गया है। उन्होने बताया कि उच्च न्यायालय इलाहाबाद एवं सोनभद्र बार एसोसिएशन सोनभद्र व डिस्ट्रिक्ट बार एसोसिएशन सोनभद्र के प्रस्ताव के अनुरूप माह मई व जून 2024 में जनपद न्यायालय सोनभद्र के मुख्यालय एवं बाह्य न्यायालय अनपरा स्थित ओबरा दुद्धी तथा ग्राम न्यायालय घोरावल में न्यायालय का समय प्रातः 7.00 बजे से अपराह्न 1.00 बजे तक एवं कार्यालय का समय प्रातः 6.30 बजे से अपराह्न 01.30 बजे मध्यावकाश 10.30 बजे से 11 बजे तक होगा। वहीं बेल पर सुनवाई सुबह 8.30 बजे से होगी।

चुनावी तैयारियों को लेकर हुआ मंथन

अंबेडकरनगर । जिला निर्वाचन अधिकारी अविनाश सिंह की अध्यक्षता में समस्त नोडल अधिकारी एअपर नोडल अधिकारी ध्सहायक प्रभारी अधिकारी के साथ कलेक्ट्रेट सभागार में लोकसभा सामान्य निर्वाचन. 2024 की तैयारी के संबंध में बैठक आयोजित किया गया। जिला निर्वाचन अधिकारी द्वारा समस्त नोडल अधिकारियों से चुनाव संबंधी अब तक किए गए कार्यों के बारे में विस्तार पूर्वक पूछा गया। जिस पर नोडल अधिकारियों द्वारा अब तक चुनाव संबंधित तैयारी के बारे में विस्तृत रूप से अवगत कराया गया। बैठक के दौरान जिला निर्वाचन अधिकारी द्वारा समस्त नोडल अधिकारीएअपर नोडल अधिकारी ध्सहायक प्रभारी अधिकारी को निर्देशित किया गया कि लोकसभा सामान्य निर्वाचन 2024 में लगाए गए समस्त कार्मिक दिए गए दायित्वों का जिम्मेदारी पूर्वक निर्वहन करें जिससे लोकसभा निर्वाचन 2024 सकुशल एवं शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न कराया जा सके। निर्वाचन के दौरान वाहन की व्यवस्थाए आकस्मिक चिकित्सा सुविधाए कार्मिकों का प्रशिक्षणए मतदान रवानगी की स्थल पर पेयजल सहित अन्य सुविधाओं के बारे में संबंधित को निर्देशित किया गया तथा चुनाव संबंधित तैयारियो के बारे में एआरओ को आवश्यक दिशा निर्देश दिए गए। जिला निर्वाचन अधिकारी द्वारा संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया गया कि संबंधित कार्मिकों को प्रशिक्षण दिलाएं।

जंगलों में आग

उत्तराखंड प्रभावित

जंगलों में आग से उत्तराखंड का संवेदनशील परिस्थितिकी तंत्र प्रभावित हुआ है और नैनीताल इसका केवल एक उदाहरण है। ऐतिहासिक रूप से भारत के अन्य पहाड़ी राज्यों की तुलना में उत्तराखंड जंगलों में आग की विभीषिका से ज्यादा प्रभावित होता है। अपने मनोहारी सौंदर्य तथा हरे-भरे परिवेश के लिए लोकप्रिय यह राज्य एक बार फिर जंगलों में आग की समस्या झेल रहा है। स्थिति की गंभीरता इस बात से स्पष्ट होती है कि जनवरी से जंगलों में आग की 500 से अधिक घटनायें सामने आई हैं और पिछले चौबीस घंटो में लगभग हर घंटे आग की खबर आई है। नवीनतम घटना नैनीताल के बसे क्षेत्रों के बहुत निकट हुई है। इसमें 108 एकड़ वन भूमि नष्ट हो गई है तथा इसने निवासियों और अधिकारियों में भय पैदा कर दिया है। स्थिति खराब होने पर सेना और भारतीय वायुसेना को नियंत्रण प्रयासों में सहायता के लिए लगाया गया है। जंगलों में लगने वाली ऐसी आग अक्सर लोगों द्वारा सूखे पेड़ों-झाड़ियों को हटाने में होने वाली गलतियों या सूखी वनस्पतियों में प्राकृतिक रगड़ से पैदा हो जाती है और तेज हवाओं से फैलती है। इससे संवेदनशील परिस्थितिकी तंत्र को भारी खतरा पैदा होता है। आग बुझाने और उसे फैलने से रोकने के प्रयासों के बावजूद वह मानव बस्तियों के निकट पहुंच गई है। भारतीय वायुसेना के हेलीकाप्टर पानी छिड़क कर आग बुझाने के प्रयास कर रहे हैं और इनसे दुर्गम क्षेत्रों तक पहुंचने में सहायता मिली है। इसके साथ ही सेना के जवान जमीन पर आग बुझाने तथा इसे और फैलने से रोकने के प्रयास कर रहे हैं। इस चुनौती का सकारात्मक पक्ष यह है कि जंगलों की आग बुझाने में अधिकारियों के साथ सभी लोग भाग ले रहे हैं।

आग और उससे पैदा दमघोंटू धुंए के बीच लोगों में सामुदायिक भावना पैदा हुई है और वे आपदा से निपटने का प्रयास कर रहे हैं। स्थानीय लोग, स्वयंसेवकों तथा एनजीओ के साथ एकजुट होकर आग बुझाने के प्रयासों में सहायता करने के साथ इससे प्रभावित लोगों की भी सहायता कर रहे हैं।

भोजन व शरणस्थल प्रदान करने के साथ पीड़ित लोगों को बाहर निकालने में हो रहे सामूहिक प्रयास विपरीत स्थितियों में समुदाय की सामूहिक प्रतिक्रिया का प्रदर्शन है। लेकिन जंगलों की आग के गंभीर पर्यावरणीय प्रभाव होते हैं। बहुमूल्य वनस्पतियों और जीवों के नष्ट होने के साथ ही इनसे वातावरण में खतरनाक प्रदूषक भी फैलते हैं। इससे भविष्य में जंगलों में आग लगने की घटनायें रोकने की तात्कालिक आवश्यकता उजागर होती है। इसके लिए वन प्रबंधन व्यवहारों को मजबूत करने, शीघ्र चेतावनी व्यवस्थाओं का प्रयोग तथा सामुदायिक जागरूकता पैदा करना सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। इससे क्षेत्र की जैव-विविधता को सुरक्षा मिलती है तथा जंगलों में विनाशकारी आग का जोखिम कम होता है। समय आ गया है कि जंगलों में आग की विभीषिका से निपटने के लिए एक समग्र रणनीति तैयार की जाए। उत्तराखंड सरकार को कैलीफोर्निया में अमेरिकी अनुभवों से भी समुचित सबक सीखने चाहिए जहां ऐसी आग अक्सर लगती है, लेकिन उस पर शीघ्र चेतावनी व्यवस्था के कारण बहुत अच्छी तरह व तेजी से नियंत्रण कर लिया जाता है। नैनीताल के जंगल में लगी आग हमारे प्राकृतिक परिस्थितिकी तंत्र की संवेदनशीलता के साथ ही अदम्य मानव भावना भी प्रकट करती है। अधिकारियों, सशस्त्र बलों तथा स्थानीय समुदायों के संयुक्त प्रयासों से आग को जल्दी ही बुझा दिया जाएगा। लेकिन यह संकट उत्तराखंड तथा अन्य क्षेत्रों में ज्यादा मजबूत व टिकाऊ व्यवस्था बनाने की दिशा में प्रेरक की भूमिका निभाने वाला भी होना चाहिए।

खामियाजा भुगतता पाकिस्तान

पाकिस्तानी राजदूत आसिफ दुर्रानी ने अफगानिस्तान की स्थिति से निपटने में पाक सरकार की गलतियां स्वीकार की हैं। इस प्रकार उन्होंने इस्लामाबाद की विदेश नीति का यथार्थ रेखांकित किया है।

भोपिंदर सिंह
(लेखक, सेवानिवृत्त सेनाधिकारी हैं)

पाकिस्तानी राजदूत राजदूत आसिफ दुर्रानी ने अफगानिस्तान की स्थिति से निपटने में पाक सरकार की गलतियां स्वीकार की हैं। इस प्रकार उन्होंने इस्लामाबाद की विदेश नीति का यथार्थ रेखांकित किया है। अफगानिस्तान में पाकिस्तान के विशेष प्रतिनिधि एवं उसके राजदूत आसिफ दुर्रानी ने अफगानिस्तान में पाकिस्तानी सरकार की भयानक विफलता का कठोर यथार्थ स्वीकार किया है। 'पाकिस्तान इन द इमर्जिंग जिया-पालिटिकल लैंडस्केप', यानी उभरते भू-राजनीतिक परिदृश्य में पाकिस्तान की स्थिति पर आयोजित एक सम्मेलन में बोलते हुए राजनयिक ने स्वीकार किया कि अफगानिस्तान-पाकिस्तान सीमा ड्यूरंड रेखा के दोनों ओर भड़के तनावों का खामियाजा भारत के साथ हुए सभी युद्धों के कुल मानवीय व वित्तीय खामियाजों से भी अधिक है। इस्लामाबाद वर्ष 2001 में कथित 'आतंक के खिलाफ युद्ध' में शामिल हुआ था। इसके सटीक व डरा देने वाले आंकड़ों के अनुसार, 80,000 से अधिक लोगों की जानें गई हैं।

इनमें लगभग 8,000 सुरक्षा बलों के जवान शामिल हैं। इसके साथ ही लगभग 150 बिलियन डालर का आर्थिक नुकसान भी हुआ है। इतना भारी नुकसान पाकिस्तान के लिए चिन्ता का विषय होना चाहिए। इससे परंपरागत 'नियंत्रण रेखा' या 'ड्यूरंड रेखा' के पार से होने वाला नुकसान स्पष्ट हो जाता है। इस्लामाबाद के लिए स्थिति इस तथ्य से और खराब होती है कि उसकी समस्यायें जल्दी समाप्त होती नहीं दिख रही हैं। तहरीके तालिबान पाकिस्तान-टीटीपी द्वारा होने वाले घातक हमलों में 65 प्रतिशत तथा उससे जुड़े आत्मघाती हमलों में 500 प्रतिशत वृद्धि हुई है। ऐसे परिदृश्य में भारत को 'दुश्मन नंबर एक' मानते रहने की भावना एक प्रकार से कूपमंडूकता का उदाहरण है। इस दृष्टिकोण के कारण पाकिस्तान अपने चारों ओर स्वयं द्वारा किए जाने वाले 'कर्मों' के कठोर विनाशकारी परिणामों को स्वीकारने से भी इनकार करता है।

भारत के प्रति पाकिस्तान के संकुचित दृष्टिकोण का संबंध विभाजन के घावों से है। इसके साथ ही वह अपने नागरिकों की नजर में स्वयं को वैध ठहराने के लिए एक 'दुश्मन' की कल्पना में लगा रहता है। पाकिस्तान के विभिन्न संस्थान इसी काम में लगे रहते हैं जिनमें धर्मगुरु, सेना, राजनेता, आदि शामिल हैं। इसके साथ ही पाकिस्तान विफल हो चुके 'द्विराष्ट्र सिद्धान्त' को भी वैध ठहराने में लगा रहता है क्योंकि इसी आधार पर वह अपने अस्तित्व को तार्किक बताता है। लेकिन 1971 में बांग्लादेश के जन्म ने उस देश की अनैतिकता को उजागर कर दिया है जिसका गठन धर्म के आधार पर हुआ था। अफगानिस्तान और पाकिस्तान के बीच वर्तमान टकराव सह-धर्मियों के बीच संबंधों की अव्यावहारिक स्थिति भी स्पष्ट करता है। इससे स्पष्ट होता है कि धर्म कभी भी राष्ट्रीयता का आधार नहीं बन सकता है तथा यह पड़ोसी समान धर्म वाले देश के साथ 'बिरादराना संबंधों' की भी कोई गारंटी नहीं है जिसका बार-बार दावा किया जाता रहा है। पाकिस्तान-अफगानिस्तान के बीच लगातार बढ़ते टकराव से यह बात पूरी तरह सिद्ध होती है। कुल मिला कर ऐसे मामलों में 'उद्देश्य' का ही महत्व होता है। कुल मिला कर उद्देश्य ही आत्माभिव्यक्ति का माध्यम है जिसे सह-धार्मिकता के नाम पर अच्छी-अच्छी बातों से कुचला नहीं जा सकता है।

राजदूत आसिफ दुर्रानी ने अपने भाषण में स्वीकार किया है कि 'नाटो बलों के चले जाने के बाद उम्मीद की गई थी कि अफगानिस्तान में शांति से इस पूरे क्षेत्र में शांति पैदा होगी। लेकिन ऐसी उम्मीदें ज्यादा समय तक जीवित नहीं रहीं।' इतिहास के बारे में जरा भी समझ रखने वाला कोई व्यक्ति आसानी से समझ लेगा कि अफगानिस्तान में विमर्श पर 'नियंत्रण' की इच्छा न केवल असंभव व अव्यावहारिक थी, बल्कि इसके विपरीत परिणाम अपरिहार्य थे।

यह बात इस कारण भी सही है कि अफगानिस्तान कई बार 'ग्रेट गेम' का मैदान बना है। सभी जानते हैं कि अफगानिस्तान में 'रणनीतिक प्रभुत्व' रखने की इच्छा अफगान तालिबान के गठन के समय से ही स्पष्ट थी। जहां अफगानों ने 1970 के दशकांत से सभी प्रकार की पाकिस्तानी सरकारों तथा उसकी ढांचागत संरचना की सहायता स्वीकार की, वहीं यह भी पूरी तरह स्पष्ट था कि गर्वीले अफगान आंख बंद कर इस्लामाबाद की बात मानने के लिए तैयार नहीं थे, भले ही यह पाकिस्तान द्वारा बनाए तालिबान के माध्यम से हो। यह बात अफगानों की सांस्कृतिक-सभ्यतामूलक पहचान के विपरीत थी। इसी विशिष्ट पहचान के चलते न केवल तालिबान सरकार ने इस्लामाबाद के सारे नियंत्रणों को तोड़ दिया, बल्कि इस्लामाबाद के 'सलाहकारों' तथा उनकी ओर से की जाने वाली अच्छी-अच्छी बातों को भी अस्वीकार कर दिया। इसके साथ ही उसने जानबूझ कर पाकिस्तान-विरोधी तहरीके तालिबान पाकिस्तान-टीटीपी जैसे वैचारिक संगठनों को पाला-पोसा जो धड़ल्ले से पाकिस्तान पर हमला करते हैं तथा उसके विनाशकारी नतीजे सामने आ रहे हैं।

स्थिति के गंभीर आंकलन से स्पष्ट है कि पाकिस्तान पर होने वाले हमले केवल अफगानिस्तान में रहने वाले पाकिस्तानियों में व्याप्त असंतोष की परिघटना नहीं है, बल्कि इसका 'चिन्ताजनक आयाम ऐसे हमलों में अफगान नागरिकों की सहभागिता' है। मूलत: पहले ऐसे हमलों के पीछे अभिप्रेरित या प्रशिक्षित हत्यारे शामिल होते थे, पर अब पाकिस्तान पर अफगान नागरिक भी हमले कर रहे हैं। ऐसे में पाकिस्तानियों द्वारा भारत को 'राक्षस' की तरह पेश करने की अवधारणा कट्टरपंथी अफगानों में पूरी तरह विफल हो गई है। इसका कारण यह है कि भारतीयों के प्रति उनकी भी स्पष्ट समझदारी है जो पाकिस्तान से पूर्णत: उलट है। कुल मिला कर हाल में इस्लामाबाद और दिल्ली से प्रकट होने वाली संप्रभु इच्छाओं में अंतर स्पष्ट दिख रहा है। अपनी स्वनिर्मित छवि, विचारधारा एवं अंतर्निहित कट्टरता जैसी कुछ सीमाओं से अलग तालिबान अधिकारियों द्वारा प्रयोग की जाने वाली भाषा उस स्थिति से बिल्कुल अलग है जब अमेरिकी-नाटो बलों ने काबुल छोड़ा था और तालिबान ने काबुल पर कब्जा कर लिया था।

आज पाकिस्तान सरकार स्वयं को अफगानिस्तान में अजीब स्थिति में पा रहा है जहां उसने भारी 'अवैध' निवेश किया था। विडंबना है कि पाकिस्तान स्वयं को अफगानिस्तान की इन विरोधाभासी स्थितियों से बाहर भी नहीं निकाल पा रहा है। पाकिस्तान इस बात के पूरे गंभीर प्रयास कर रहा है कि वह अपने उन कदमों के परिणामों से मुक्ति पा सके जो उसने वर्तमान अफगान सरकार, उसकी ढांचागत संरचना तथा क्षेत्र में उसके उद्देश्यों को बनाने के लिए उठाए थे। पाकिस्तानी राजदूत आसिफ दुर्रानी ने दु:ख प्रकट करते हुए कहा कि 'अफगानिस्तान पिछले चार दशकों से पाकिस्तान की क्षेत्रीय अवधारणा में स्थाई समस्या बन गया है।' इस प्रकार अब अफगान पाकिस्तान द्वारा इतने वर्षों में तालिबान और अफगान सरकार को दिए समर्थन को अपने दृष्टिकोण से देख रहे हैं। मजेदार बात है कि अफगानिस्तान में स्थिति के बारे में पाकिस्तान द्वारा की जाने वाली शिकायतों पर तालिबान सरकार व अफगान नागरिक जरा भी ध्यान नहीं देते हैं। वर्तमान समय में विश्व समुदाय और स्वयं पाकिस्तान भी यह अच्छी तरह समझ रहा है कि अफगानिस्तान के मामले में आखिरकार गलती कहां हुई। एक प्रकार से यह पाकिस्तान द्वारा 'शोर-शराबा' मचाने वाली स्थिति की तरह है, लेकिन उसकी बात ज्यादा लोग नहीं सुन रहे हैं और पाकिस्तान के कष्टों से किसी को कोई हमदर्दी नहीं है। गहरी नजर डालने से स्पष्ट होगा कि 1947 में गठित पाकिस्तानी व्यवस्था की सोच में ही सड़न व्याप्त थी, जब उसने सोचा था कि धर्म उसका ट्रंप कार्ड है। इस प्रकार इतिहास यह बात पूरी तरह स्पष्ट करता है कि धर्म कभी भी किसी देश की 'राष्ट्रीयता' का नैतिक या टिकाऊ आधार नहीं बन सकता है। बांग्लादेश और अफगानिस्तान, दोनों ने 'द्विराष्ट्र सिद्धान्त' को खारिज कर दिया है।

स्वयं की अस्मिता का संकट

> सबसे पहले मनुष्य को इस सत्य से अवगत कराया जाना चाहिए कि उसके अंदर दैवीय गुणों की एक निश्चित क्षमता या मानवीय मूल्यों का मूल है और ये गुण या मूल्य, उसके भीतर, अवचेतन के समुद्र में गहराई तक चले गए हैं।

ब्रह्म कुमार निकुंज
(लेखक, आध्यात्मिक चिंतक हैं)

न तो मनुष्य के अच्छे कर्म हमेशा के लिए अप्राप्त रहते हैं और न ही वह अपने बुरे कर्मों के लिए दण्ड से बचता है। आज, दुनिया का लगभग हर देश एक बेहतर दुनिया बनाने के लिए कड़ी मेहनत कर रहा है जो सभी प्रकार के भय और असुरक्षाओं से मुक्त हो और सभी के लिए सुरक्षित हो। हालाँकि, इस पूरी कवायद में हमें यह बात नहीं भूलनी चाहिए कि बदलाव लाने की इंसान की कोशिशों में सफलता तभी मिलती है, जब उसे अपनी असली पहचान का पता चलता है। वर्तमान विश्व संकट, जिसे आम तौर पर मूल्यों का संकट कहा जाता है, वास्तव में अस्मिता का गहरा संकट है। मूल्यों का यह संकट स्वयं की वास्तविक पहचान के ज्ञान के लुप्त हो जाने के कारण भी उत्पन्न हुआ है। जबकि मनुष्य ने दुनिया भर में कई खोए हुए महाद्वीपों या भूमि खंडों की खोज की है, स्वयं के इस महाद्वीप को हम सभी द्वारा अभी तक खोजा या फिर से खोजा नहीं जा सका है। इस प्रकार सबसे पहले मनुष्य को इस सत्य से अवगत कराया जाना चाहिए कि उसके अंदर दैवीय गुणों की एक निश्चित क्षमता या मानवीय मूल्यों का मूल है और ये गुण या मूल्य, उसके भीतर, अवचेतन के समुद्र में गहराई तक चले गए हैं। और अचेतन मन को अब फिर से सतह पर, प्रकाश में लाना होगा और कार्यों के लिए कीबोर्ड के रूप में उपयोग करना होगा। मनुष्य को इस सत्य का भी बोध कराना होगा कि शव के दाह-संस्कार या दफ़नाने के साथ ही मनुष्य के जीवन काल में किये गये सभी अच्छे-बुरे कर्म, या कुछ समय में उसके द्वारा अर्जित की गयी योग्यताएँ और गुण, सब कुछ नहीं हैं। सब खो गया.

जब तक मनुष्य को यह एहसास नहीं होता कि, वास्तव में, वह एक शाश्वत प्राणी है, एक आत्मा है या एक प्रकाश-सत्ता है और अन्य प्राणी भी ऐसे ही हैं, तब तक उसके दृष्टिकोण और अन्य सभी के प्रति उसके दृष्टिकोण में पूर्ण परिवर्तन नहीं होता है। हालाँकि, जब उसे अपनी वास्तविक पहचान का एहसास होता है, तो वह एक नया मानसिक और आध्यात्मिक जन्म लेता है और फिर उसके स्वयं में और दूसरों के साथ उसके संबंधों में स्वचालित और स्वाभाविक रूप से सुधार होता है, यहाँ तक कि दिन के बाद रात भी होती है। इसलिए, हम जो भी रणनीति हमें किसी विशेष देश या लोगों के समूह के लिए उपयुक्त लगे, अपना सकते हैं, लेकिन हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि, देर-सबेर, हमें अपने संपर्क में आने वाले सभी लोगों को वास्तविक ज्ञान देना होगा। स्वयं की पहचान, क्योंकि इस ज्ञान के बिना, एक बेहतर दुनिया के हमारे लक्ष्य के करीब जाना संभव नहीं है।

आज हम सभी स्वयं को उस शरीर से पहचानते हैं जिसे हमने प्राप्त किया है क्योंकि हम आत्मा नामक अमर इकाई से अनजान हैं जो हमारे भीतर निवास करती है और हमारे शरीर के माध्यम से कार्य करती है। आत्मा के अस्तित्व के बारे में यह अज्ञानता इस प्रकार शरीर-चेतना या जीवन के प्रति सांसारिक दृष्टिकोण में परिणत होती है, जिसके परिणामस्वरूप जीवन भर हम इस तथ्य को समझे बिना अपने जीवन की स्थिति को सुधारने के लिए संघर्ष करते हैं कि शारीरिक और मानसिक क्यों दो व्यक्तियों की परिस्थितियाँ और वातावरण उनके जन्म के समय से ही काफी भिन्न होते हैं। हम प्राकृतिक आपदाओं, आतंकवाद, हिंसा और युद्धों के कारण बड़े पैमाने पर होने वाली मानवीय पीड़ाओं और असामयिक मौतों से चकित हो जाते हैं, जिसके कारण हमें हर समय अपनी मृत्यु का डर सताता रहता है।

इस पूरे मौज-मस्ती में, हम यह महसूस करने में असफल हो जाते हैं कि जब तक जीवन के इन बुनियादी पहलुओं को सही ढंग से नहीं समझा जाता है, तब तक शरीर के प्रति सचेत दृष्टिकोण बना रहेगा। किसी के भौतिक अस्तित्व को सबकुछ और सब कुछ का अंत मानने के परिणामस्वरूप मनुष्य जीवन में गलत मूल्यों को अपनाता है जिसके परिणामस्वरूप वह गलत कार्य करता है और परिणामस्वरूप उसे पीड़ा होती है। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि कठिन परिश्रम करने के बावजूद भी वह जीवन में दु:ख और कष्टों से बच नहीं पाता। इसलिए शांतिपूर्ण, संतुष्ट, सुखी और मुक्त जीवन जीने के लिए, अपने वास्तविक स्वरूप यानी आत्मा, उसकी कार्यप्रणाली और विश्व नाटक में उसकी भूमिका का उचित ज्ञान आवश्यक है।

आप की बात

राहुल के बयान

राहुल गाँधी ने कहा कि उड़ीसा में बीजेडी-बीजेपी की और तेलंगाना में बीआरएस-बीजेपी की शादी हो गई है तथा दिल्ली की सत्ता को 22-25 अरबपति चला रहे हैं। उन्होंने कहा कि अगर हमारी सरकार आई तो सुविधाओं का खजाना खोल दिया जाएगा। लेकिन पहले तो कम्युनिस्ट, सोशलिस्ट व अन्य विपक्षी नेता सड़कों पर चिल्ला-चिल्ला कर कहते थे कि कांग्रेस की सरकार को टाटा, बिड़ला, डालमिया पूंजीपति चला रहे हैं। राहुल को समझना चाहिए कि जनता को अपनी पार्टी की सच्चाई बतायें और वोट मांगे। राहुल गांधी करोड़ों लोगों को लखपति बनाने की बात करते हैं और उन्होंने गारंटियों का अंबार लगा दिया है। लेकिन वे यह नहीं बताते हैं कि इसके लिए पैसा कहां से आएगा? कहीं ऐसा तो नहीं कि वे स्वयं को सत्ता तक पहुंचाने के लिए मध्य वर्ग पर भारी टैक्स लगाने तथा विरासत कर के माध्यम से जनता की पैतृक संपत्ति हड़पने के चक्कर में हैं? वैसे राहुल वे सारे फार्मूले पेश कर रहे हैं जो अतीत में फेल हो चुके हैं तथा अधिकांश अर्थशास्त्रियों की नजर में अव्यावहारिक हैं। पूर्व प्रधानमंत्री देवगौड़ा कह चुके हैं कि ऐसी गारंटियां वही दे सकता है जिसे अपने सत्ता में वापस न आने का पूर्ण विश्वास हो। राहुल अपनी विश्वसनीयता खो रहे हैं।

– **शकुंतला महेश नेनावा,** इंदौर

वासुकी नाग के अवशेष

गुजरात में मिले वासुकी नाग के अवशेषों ने भारतीय वैज्ञानिकों और संस्कृति प्रेमियों में नया उत्साह भर दिया है। अवशेष 15 मीटर लंबे और लगभग 1 टन वजनी नाग के थे, जिसे वासुकी इंडिकस के नाम से जाना जाता है। इसकी खोज आईआईटी रुड़की के वैज्ञानिकों ने की थी। वासुकी नाग की यह खोज भारतीय संस्कृति और इतिहास के साथ-साथ विज्ञान के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण है। इस खोज ने हमें हमारे पुराणों में वर्णित वासुकी नाग की याद दिलाई जो भगवान शिव के गले में विराजमान है। वैज्ञानिकों ने इस प्रजाति का नाम भी इसी पौराणिक सांप के नाम पर रखा है जो हमारे धार्मिक और सांस्कृतिक विरासत का सम्मान है। वासुकी नाग की खोज से हमें यह संकेत मिलता है कि भारत की भूमि में और भी अद्वितीय और रहस्यमय जीवाश्म छिपे हो सकते हैं। वासुकी नाग के अवशेषों की खोज हमारे वैज्ञानिकों के लिए एक प्रेरणास्रोत है। उनको ऐसी अन्य खोजों पर भी ध्यान देना चाहिए जो भारतीय प्राचीन मान्यताओं, पौराणिक अवधारणाओं तथा प्राचीन विज्ञान को आधुनिक विज्ञान से जोड़ती हों। इससे भारत सचमुच विरासत के साथ विकास से भी जुड़ सकता है। यह भारतीय युवाओं के लिए प्रेरणा स्रोत होगा।

– **अवनीश कुमार गुप्ता,** आजमगढ़

युद्धों का माहौल

रूस-यूक्रेन युद्ध इतना लंबा खींचेगा इसकी किसी ने कल्पना भी नहीं की थी। यूक्रेन इतना शक्तिशाली था भी नहीं कि वह रुस से इतने लंबे समय तक युद्ध कर सके। मगर अमेरिका और नाटो देशों द्वारा भारी मात्रा में हथियार व धन मिलने से यूक्रेन रूस से लोहा ले रहा है। भले ही युद्ध में उसे अमेरिका का पूरा साथ मिल रहा है, मगर नागरिक और सैनिक बड़ी संख्या में यूक्रेन के मर रहे हैं। यूक्रेन तहस-नहस और बर्बाद हो चुका है। एक समय आर्थिक रूप से मजबूत यूक्रेनी जनता के बहुत से लोग शरणार्थी बनकर दाने-दाने के मोहताज हो गए हैं। अब अमेरिका भी अपने देश के भीतर चल रहे युद्ध-विरोधी प्रदर्शनों के कारण फूंक-फूंक कर कदम रख रहा है। इज़राइल-हमास संघर्ष भी दुनिया को संकट में धकेल रहा है। हूती विद्रोही लगातार समुद्र में व्यापार और नौवहन को खतरे में डाल रहे हैं। इन परिस्थितियों से निपटने में विफलता के कारण इस वर्ष होने वाले राष्ट्रपति चुनाव में जो बाइडेन की स्थिति लगातार कमजोर होती जा रही है। ऐसे में अमेरिका को राजनयिक प्रयासों तथा दुनिया में सभी देशों से बात कर युद्धों का माहौल समाप्त करवाने के प्रयास करने चाहिए। युद्धों का माहौल सारी मानवता के लिए खतरनाक है।

–**विभूति बुपक्या,** खाचरोद

मतदान का स्तर

संभवत: पहले चरण के मतदान में आई गिरावट को प्रशासन या राजनीतिक दलों ने गंभीरता से नहीं लिया है। यही वजह है कि दूसरे चरण में फिर पिछले चुनाव के मुकाबले 9.39 प्रतिशत की कमी आई है। अभी लोकसभा चुनाव के दो ही चरण संपन्न हुए हैं और पांच चरण बाकी है। हालांकि, भीषण गर्मी के चलते आम आदमी बेहाल है और वह वैवाहिक आयोजनों तथा फसल कटाई के काम में भी उलझा हुआ है, फिर भी हम राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्य को कैसे भूल सकते हैं? अगले पांच चरण के लिए हर नागरिक को फिक्रमंद होकर मतदान प्रतिशत बढ़ाने के प्रयास करने चाहिए। जहां तक संभव हो सके मतदान केंद्रों की संख्या बढ़ाई जानी चाहिए, ताकि लंबी कतारें न लगें और लोग जल्द वोट डाल सके। चुनाव के अगले चरणों में मतदान प्रतिशत बढ़ाने की जिम्मेदारी निर्वाचन आयोग के साथ ही सभी नागरिकों व राजनीतिक दलों की भी है। सभी राजनीतिक दलों को संयुक्त रूप से मतदान की अपील करनी चाहिए। इसमें स्वयंसेवी संगठनों, सामाजिक कार्यकर्ताओं व धर्मगुरुओं की विशेष भूमिका हो सकती है।

– **अमृतलाल मारू,** इन्दौर

पाठक अपनी प्रतिक्रिया ई-मेल से
responsemail.hindipioneer@gmail.com
पर भी भेज सकते हैं।

अमेठी में भाजपा प्रत्याशी स्मृति इरानी ने किया नामांकन

नामांकन के दौरान रोड शो करती हुई स्मृति इरानी एवं एमपी सीएम, पर्चा दाखिल करती स्मृति, उमड़ी भीड़

गौरीगंज अमेठी। अमेठी सांसद एवं केंद्रीय मंत्री महिला एवं बाल विकास तथा अल्पसंख्यक मंत्रालय स्मृति जुबिन इरानी ने गौरीगंज कलेक्ट्रेट परिसर में दो सेटों में नामांकन पत्र दाखिल किया। सबसे पहले अमेठी सांसद जिला मुख्यालय कार्यालय पहुंची जहां पार्टी कार्यकर्ताओं ने अपनी सांसद का गर्म जोशी के साथ स्वागत किया, वैदिक मंत्रोचार तथा शंखनाद के बीच विधि विधान पूर्वक पूजन अर्चन करने के बाद लाखों समर्थकों के साथ अमेठी सांसद का काफिला जिला मुख्यालय भाजपा कार्यालय से जिला कलेक्ट्रेट गौरीगंज के लिए रवाना हुआ।इस दौरान जगह पर कस्बा वासियों द्वारा सांसद स्मृति इरानी के समर्थकों द्वारा नामांकन में शामिल लोगों के लिए जलपान की व्यवस्था कराई गई थी, डीजे के धुन पर जय श्री राम उद्घोष के साथ समर्थकों का काफिला धीरे.धीरे आगे बढ़ता रहाए भीषण गर्मी के बावजूद भी भारी संख्या में लोग अपनी संसद के साथ कलेक्ट्रेट परिसर के बाहर तक पहुंचे यह अमेठी सांसद की लोकप्रियता को दर्शाता है। भाजपा नेताओं की माने तो रोड शो के दौरान उमड़े जनसैलाब को देखकर विरोधी दलों के हौसले पस्त हों गए हैंएवैसे भी अभी तक खबर लिखे जाने तक अमेठी में मुख्य विपक्षी दल कांग्रेस अपने प्रत्याशी की घोषणा नहीं कर सकी। रोड शो के दौरान जिला मुख्यालय गौरीगंज से लेकर कलेक्ट्रेट तक तीन किलोमीटर के आसपास समर्थकों की भीड़ लगी रही पूरे कस्बे में लोग अपनी छतों से फूलों की वर्षा कर रहे थे ए रोड शो और नामांकन में शामिल हुए मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉक्टर मोहन यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में अमेठी की जनता जनार्दन ने परिवारवाद को नकारकर विकास को अपनाया है, जिसका सुपरिणाम है कि आज अमेठी संपूर्ण उत्तर प्रदेश के लिए सेवा, सुशासन और तीव्रतम विकास का प्रतीक बनकर उभर रहा है। बताते चलें 2019 के चुनाव में अमेठी की जनता ने राहुल गांधी को नकार दिया और दीदी स्मृति इरानी को सांसद चुना तब से लेकर अब तक लगातार अमेठी सांसद अमेठी में बनी हुई है और अमेठी का सर्वांगीण विकास करते हुए जनता के सुख.दुख में भागीदार रहती हैं। नामांकन के दौरान मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव, अयोध्या के महापौर गिरीश पति त्रिपाठी, प्रदेश महामंत्री एवं एमएलसी गोविंद नारायण शुक्ला, प्रदेश मंत्री अमेठी प्रभारी शंकर गिरी, जिला पंचायत अध्यक्ष राजेश अग्रहरि, राज्य मंत्री मयंकेश्वर शरण सिंह, पूर्व विधायक तेजभान सिंह, सलोन विधायक अशोक कोरी, जिला अध्यक्ष राम प्रसाद मिश्रा, लोकसभा संयोजक दयाशंकर यादव, एम एलसी शैलेन्द्र प्रताप सिंह, पूर्व विधायक चन्द्रप्रकाश मिश्रा लोकसभा प्रभारी राज किशोर रावत, पूर्व जिला अध्यक्ष दुर्गेश त्रिपाठी, जिला प्रवक्ता चन्द्रमौलि सिंह सहित लाखों समर्थक शामिल रहे।

भाजपा और कांग्रेस कार्यकर्ताओं में हुई नोकझोंक

स्मृति का काफिला जैसे ही गौरीगंज स्थित कांग्रेस कार्यालय के पास पहुंचा तो भाजपा के कार्यकर्ताओं और कांग्रेस कार्यकर्ताओं के बीच हूटिंग शुरू हो गई। और मामूली कहासुनी दोनो पक्षों में हाथापाई तक पहुंच गई। मौजूद पुलिस कर्मियों में ने दोनो पक्षों को किसी तरह शांत कराया। कांग्रेस नेता शुभम सिंह तरफबीजेपी किसान मोर्चा जिलाध्यक्ष राजू सिंहएलाल जी व 10 अन्य भाजपा कार्यकर्ताओं के खिलाफ़ प्राथमिकी दर्ज करने की तहरीर दी गई है।

आयोग का एसएमएसए एवं वॉइस कॉल के माध्यम से प्रचार का निर्देश

अयोध्या। मुख्य कोषाधिकारी/प्रभारी अधिकारी.निर्वाचन व्यय अनुवीक्षण अयोध्या ममता सिंह ने बताया कि लोक सभा सामान्य निर्वाचन 2024 में भारत निर्वाचन आयोग एवं मुख्य निर्वाचन अधिकारी उप्र लखनऊ द्वारा प्राप्त निर्देशों के अनुपालन में सोशल मीडिया द्वारा प्रमोशन, बल्क एसएमएसए एवं वॉइस कॉल के माध्यम से प्रचार विषयक आयोग के निर्देश में यदि किसी अभ्यर्थी द्वारा एसएमएस या वॉइस कॉल के माध्यम से अपना प्रचार किया जाता है तो इसकी सूचना कन्ट्रोल रुम के फोन नम्बर 05278.297499 पर शिकायत की जायेगी तथा इसकी सूचना व्हाटसएप्प नंबर.7080510637, 9454416103, 9454416104, 9454416105, 9454416106, 9454416122 पर भी दी जा सकती है। यदि अभ्यर्थी कोई सामग्री आम जनता में बटवाता है और उस सामग्री पर अभ्यर्थी का नाम छपा है तो उसकी भी सूचना दी जायेगी।

नामांकन के प्रथम दिन भाजपा-सपा सहित 16 व्यक्तियों ने नामांकन पत्र लिये

● कड़ी सुरक्षा के लिए पुलिस फोर्स तैनात पुलिस अधीक्षक लिये जायजा

नामांकन पत्र लेने जाते सांसद एवं पुलिस फोर्स को निर्देश देते एसपी।

संतकबीरनगर। लोकसभा सामान्य निर्वाचन-2024 में 62-संत कबीर नगर संसदीय लोकसभा क्षेत्र हेतु नामांकन के प्रथम दिन 16 व्यक्तियों द्वारा नामांकन पत्र प्राप्त किया गया। नामांकन के प्रथम दिन भारतीय जनता पार्टी एवं समाजवादी पार्टी सहित 16 व्यक्तियों द्वारा कुल 42 नामांकन पत्र प्राप्त किये गये हैं। नामांकन के प्रथम दिन सोमवार को किसी भी पार्टी अथवा व्यक्ति द्वारा नामांकन पत्र दाखिल नही किया गया। नामांकन पत्र लेने वालो में भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी सांसद ई0 प्रवीण निषाद, समाजवादी पार्टी (इंडिया गठबंधन) के प्रत्याशी लक्ष्मीकान्त पप्पू निषाद, शोषित समाज दल लोटन प्रसाद, निर्दलीय मुन्नीलाल, निर्दलीय हरीश चंद, निर्दलीय रविंद्र कुमार यादव, निर्दलीय अमित कुमार, निर्दलीय गणेश प्रसाद चौरसिया, अल हिंद पार्टी अवधेश, निर्दलीय मित्रसेन यादव, प्रगतिशील समाज पार्टी धीरज श्रीवास्तव, निर्दलीय अरविंद, भारतीय संघर्षशील पार्टी रामधनी शर्मा, सर्वजन आवाज पार्टी रामधनी शर्मा, सर्वजन आवाज पार्टी राजेंद्र यादव, निर्दलीय राम अवतार तथा निर्दलीय साहबजांदा सिंह रहे। नामांकन पत्र प्राप्त किये जाने एवं नामांकन पत्रों को दाखिल/जमा किये जाने की अंतिम तिथि आगामी 06 मई 2024 सायं 03 बजे तक निर्धारित है।

कलेक्ट्रेट परिसर में जिला मजिस्ट्रेट न्यायालय कक्ष संख्या 03 को नामांकन कक्ष बनाया गया है। पुलिस अधीक्षक सत्यजीत गुप्ता द्वारा कलेक्ट्रेट सभागार में लोकसभा चुनाव 2024 की नामांकन की प्रक्रिया की तैयारियों की जायजा लिया गया। सोमवार को सुबह 11.00 बजे से शाम 3.00 बजे तक चुनाव आयोग की दिशा-निर्देशों का पालन करते हुए पुलिस व प्रशासन की आपसी ताल-मेल से नामांकन प्रक्रिया सम्पन करायी जायेगी। चुनाव आचार संहिता का पूर्ण अनुपालन सुनिश्चित कराने के उद्देश्य से कलेक्ट्रेट सभागार में प्रशासनिक व पुलिस विभाग के अधिकारियों द्वारा सुरक्षा की पुख्ता इन्तजाम किया गया है। पुलिस अधीक्षक द्वारा पुलिस अधिकारी/कर्मचारीगण को चुनाव आयोग के आदेशों व निर्देशों से अवगत कराया गया। तैयारियों के जायजा के दौरान अपर जिलाधिकारी जय प्रकाश, अपर पुलिस अधीक्षक शशि शेखर सिंह, अतिरिक्त उप जिलाधिकारी रमेश चन्द, एसडीएम न्यायिक धनघटा सुनील कुमार, एसडीएम मेंहदावल न्यायिक संजीव राय, अरूण कुमार, क्षेत्राधिकारी खलीलाबाद ब्रजेश सिंह, एलआईयू विभाग की टीम सहित अन्य पुलिस व प्रशासनिक के अधि0/कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

आयोग द्वारा आनलाइन पद्वति से नामांकन हेतु अतिरिक्त सुविधा

संवाददाता। अयोध्या

डीएम/जिला निर्वाचन अधिकारी नितीश कुमार ने बताया कि भारत निर्वाचन आयोग द्वारा आनलाइन पद्वति से नामांकन करने हेतु अतिरिक्त सुविधा उपलब्ध करायी गयी है। आनलाइन नामांकन हेतु वेब लिंक पर उपलब्ध है। ऐसे अभ्यर्थी जो आनलाइन पद्वति से नामांकन करना चाहते है, वे उपरोक्त लिंक के माध्यम से नामांकन पत्र की प्रविष्टि कर सकते है एवं उसका प्रिंट निकालकर प्रारूप.1 में रिटर्निंग ऑफिसर द्वारा निर्गत सूचना में इंगित स्थान पर नामांकन दाखिल कर सकते है। इसी प्रकार शपत्र पत्र भी उक्त लिंक के माध्यम से ऑनलाइन भर सकते है एवं प्रिंट आउट को नोटराइजेशन के पश्चात रिटर्निंग ऑफिसर के समक्ष दाखिल कर सकते है। ऑनलाइन पद्वति से नामांकन भरने के उपरांत जमानत राशि को भी ऑनलाइन जमा करने का प्रावधान किया गया है। इस हेतु नामांकन पत्र सफलतापूर्वक सबमिट करने के पश्चात जमानत धनराशि जमा करने हेतु विकल्प पे लिंक दर्शित होगा, जिस पर क्लिक करते हुये ऑनलाइन पेमेंट किया जा सकता है। अभ्यर्थी उक्त के अतिरिक्त पूर्व से चली आ रही व्यवस्था के अन्तर्गत नकद रूप से टेऊजरी चालान के माध्यम से जमानत धनराशि जमा कर सकते है। जिलाधिकारी/जिला निर्वाचन अधिकारी ने आगे बताया कि कोई भी मतदाता अपने निर्वाचन क्षेत्र के उम्मीदवार के बारे में सम्पूर्ण जानकारी वेबसाइट व मोबाइल ऐप के माध्यम से प्राप्त कर सकते है। उक्त जानकारी अपर जिलाधिकारी प्रशासन/उप जिला निर्वाचन अधिकारी अनिरुद्ध प्रताप सिंह ने दी है।

लखनऊ प्रयागराज हाईवे पर अज्ञात वाहन की टक्कर से बाइक सवार एक युवक की हुई दर्दनाक मौत

रायबरेली। अज्ञात वाहन की टक्कर से एक बाइक सवार युवक की दर्दनाक मौत हो गई है घटना की जानकारी पर पहुंची पुलिस ने स्थानीय लोगों की मदद से मृतक अधेड़ के को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम की कार्यवाही हेतु भेज दिया है घटना यहां रायबरेली जनपद के भदोखर थाना क्षेत्र के अंतर्गत लखनऊ प्रयागराज मार्ग पर भाव गांव के पास अज्ञात वाहन की टक्कर से बाइक सवार अधेड़ की दर्दनाक मौत हो गई घटना के बाद घटना कार्य करने वाला वाहन लेकर फरार हो गया स्थानीय लोगों की सूचना पर पहुंची भदोखर थाने की पुलिस ने 100 को कब्जे में ले लिया है और घटना की पूछताछ शुरू कर दी है भदोखर थाना अध्यक्ष शिवाकांत पांडे ने बताया है कि मृतक केशव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम की कार्रवाई हेतु भेज दिया गया है और घटना कर भागे हुए अज्ञात वाहन की तलाश की जा रही है।

क्विक न्यूज

बसपा से दानिश घोषित हुए अधिकृत प्रत्याशी, हुआ स्वागत

संतकबीरनगर। संतकबीरनगर लोकसभा सीट से बसपा ने अपना उम्मीदवार बदल दिया है। मोहम्मद आलम की जगह अब सैयद दानिश अधिकृत प्रत्याशी घोषित किए गए है। इसकी पुष्टि बसपा जिलाध्यक्ष धर्मदेव प्रियदर्शी ने की है। पार्टी सूत्रों के अनुसार मोहम्मद आलम चुनाव में दिलचस्पी नही ले रहे थे। जिला कमेटी ने मोहम्मद आलम की गतिविधियों के बारे में नेतृत्व को अवगत कराया। इसके बाद जिला कमेटी की संस्तुति पर प्रांतीय नेतृत्व ने रविवार की देर शाम सैयद दानिश को संतकबीरनगर लोकसभा सीट से उम्मीदवार घोषित किया। सैयद दानिश के नाम की घोषणा प्रदेश मुख्यालय से बीएसपी के राष्ट्रीय महासचिव मेवालाल गौतम ने अधिकृत तौर पर पत्र जारी कर दिया है। सैयद दानिश संतकबीरनगर जिले के बेलहर के मियां कुसुरू गांव के मूल निवासी सैय्यद हुसैन अहमद के पुत्र है। वे 33 साल के युवा है। उन्होंने 2011 में फार्मेसी में डिप्लोमा किया। 2013 में स्नातक किया। लखनऊ में बिल्डर का काम करते हैं। इनकी कोई राजनैतिक पृष्ठभूमि नहीं है। 2019 में बसपा से जुड़े है। कोविड काल में जरूरत मंदो को दवा पहुंचाने पर चर्चा में आए थे। युवा वर्ग के बीच काफी लोकप्रिय है।

सलोन कस्बे में दो बाइको की हुई जोरदार भिड़ंत नसीराबाद थाने में तैनात दरोगा समेत दो लोग घायल जिला अस्पताल भर्ती

रायबरेली। दो बाइकों की जोरदार भिड़ंत में दरोगा समेत दो लोग घायल हो गए हैं जिनका 108 एंबुलेंस के माध्यम से इलाज के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र से जिला अस्पताल के लिए रेफर किया गया रायबरेली जनपद के सलोंन कोतवाली क्षेत्र के कस्बे में ही दो बाइकों की जोरदार भिड़ंत हो गई जिसमें एक बाइक पर सवार नसीराबाद थाना में तैनात दारोगा तफुजा अहमद पुत्र महबूब हसन घायल हो गए वहीं दूसरी बाइक पर सवार फैजल पुत्र नवी सेर निवासी थाना कस्बा सलोंन घायल हो गए है दोनों घायलों को पुलिस स्थानीय लोगों की मदद से 108 एंबुलेंस द्वारा पहले सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र सलवन ले जाया गया जहां हालत गंभीर देखते हुए सलवन सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र से रायबरेली के जिला अस्पताल के लिए रेफर किया गया है। जिला अस्पताल में तैनात चिकित्सक डॉ अनुराग शुक्ला ने बताया कि दोनों घायलो को जिला अस्पताल के वार्ड में भर्ती कर इलाज किया जा रहा है। स्थिति सामान्य है।

नगर पंचायत के सभासद को बनाया गया ब्रांड एंबेसडर

बछरावा रायबरेली। नगर पंचायत बछरावां के तेज तर्रार सभासद एवं सदैव सामाजिक सेवा के द्वारा क्षेत्र ही नहीं अपितु जनपद में चर्चा का विषय बने रहने वाले बछरावां नगर पंचायत के वार्ड नंबर 08 चंद्रिका नगर के सभासद कुंवर वीरभान सिंह को नगर पंचायत बछरावां में किया जा रहे समाज सेवा एवं स्वच्छता के प्रति जन जागरूकता में दिए जा रहे योगदान को दृष्टिगत रखते हुए अवैतनिक (वोकल फॉर लोकल) के तहत ब्रांड एंबेसडर नामित किया गया हैस इस अवसर पर नगर पंचायत कार्यालय में नगर पंचायत अधिशासी अधिकारी राम आशीष वर्मा एवं नगर पंचायत अध्यक्ष शिवेंद्र सिंह उर्फ राम जी की मौजूदगी में उन्हें ब्रांड एंबेसडर का प्रमाण पत्र दिया गया।

संदिग्ध परिस्थितियों में अधेड़ गायबए जांच में जुटी पुलिस

बछरावां रायबरेली। संदिग्ध परिस्थितियों में 50वर्षीय अधेड़ गायब हो गया है जिसकी सूचना परिजनों द्वारा स्थानीय थाने बछरावां में दी गई है। जानकारी के अनुसार दिवाकर पुत्र ओमप्रकाश उम्र 50 निवासी इसिया थाना बछरावां घर से बिना कुछ बताए हुए अचानक गायब हो गए हैं। परिजनों ने काफी खोजबीन की लेकिन दिवाकर का कहीं पता नहीं चल सका ।पत्नी रेनू द्वारा स्थानीय थाने में तहरीर देकर जांच कराए जाने की मांग की है। इस संबंध में थाना अध्यक्ष विजेंद्र शर्मा ने बताया कि तहरीर मिली है। जांच कर कार्यवाही की जा रही है।

शार्ट सर्किट से लगी आग से गृहस्थी जलकर राख

ऊंचाहार। बिजली के मीटर में शॉट सर्किट के कारण लगी आग से हजारों की गृहस्थी जलकर राख हो गईए ग्रामीणों द्वारा कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया गया।पीड़ित ने तहसील प्रशासन को मामले की सूचना दी है। मामला क्षेत्र के मवई गाँव का है।गाँव निवासी महादेव के दरवाजे लगे बिजली के मीटर में शॉट सर्किट के कारण आग लग गई।इसी दौरान लपटों से दरवाजे रखे छप्पर में भी आग लग गई।जब तक ग्रामीणों द्वारा कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया जाता। तब तक छप्पर के नीचे रखीए साइकलए अनाजए कपड़े समेत हजारों की गृहस्थी जलकर राख हो गई थी। एसडीएम सिदार्थ चौधरी ने बताया कि क्षेत्रीय लेखपाल को मौके पर भेजकर नुकसान का आकलन कराया जायेगा, जिसके बाद सरकारी मदद मुहैया कराई जाएगी।

निष्ठा तथा सर्मपण के साथ सभी पदाधिकारी चुनाव के कार्य में जुटें: मानवेंन्द्र

● देश में सर्वाधिक अंतर से अयोध्या विजय का लें संकल्पः वेद प्रकाश

श्री परमहंस शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालय में सम्पन्न हुआ अयोध्या विधान सभा का बूथ अध्यक्ष सम्मेलन

अयोध्या। भाजपा द्वारा अयोध्या विधान सभा के बूथ अध्यक्षों का सम्मेलन श्री परमहंस शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालय विद्याकुण्ड अयोध्या धाम में समपन्न हुआ। मुख्य अतिथि प्रदेश उपाध्यक्ष व एमएलसी मानवेंद सिंह ने कहा कि श्री राम दर्शन यात्रा के दौरान लगभग दो माह से अधिक का समय आप लोगों के साथ व्यतीत हुआ। जिसमें अनुभव हुआ कि अयोध्या के कार्यकर्ता कितनी निष्ठा भाव के साथ अपने कार्यों का निर्वहन करते हैं। उसी निष्ठा तथा सर्मपण के साथ सभी पदाधिकारियों को चुनाव के कार्य में जुट जाना है। मंडल तथा शक्ति केन्द्र के पदाधिकारी निरंतर बूथ समिति तथा पन्ना प्रमुख के साथ समन्वय बनाएं। भाजपा को विश्व का सबसे बड़ा राजनैतिक दल बनाने में आप सभी निष्ठावान कार्यकताओं का सर्वाधिक योगदान है। पूरी दुनिया की निगाहें अयोध्या तथा यहां के चुनाव पर हैं। यहां से पूरे विश्व को एक संदेश जाना चाहिए। बूथ समितियां व पन्ना प्रमुख की वोटर तथा प्रभावी मतदाताओं से निरंतर सम्पर्क में रहें। बूथ की ग्रेडिंग कर लीं जाए। चुनाव अभियान व्यवस्थित ढ़ंग से चलाना है। सांसद लल्लू सिंह ने कहा कि 2024 का चुनाव कोई आम चुनाव नहीं हैं। यह देश की राजनीती की दिशा व दशा तय करेगा। अयोध्या में श्रीराम मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा कर पीएम मोदी ने पूरी दुनिया को एक संदेश दिया है। आज पूरी दुनिया की निगाहें अयोध्या के चुनाव पर है। सभी कार्यकताओं को चार जून को भगवा लहराने का संकल्प लेकर चुनाव में जुट जाना है।

विधायक वेद प्रकाश गुप्ता ने कहा कि डबल इंजन की सरकार में सबका साथ सबका विकास के पथ पर चल कर हम सबका विश्वास जीतने के पथ पर अग्रसर हैं। अयोध्या से ऐतिहासिक विजय मिले। देश में सर्वाधिक अंतर से अयोध्या विजय का संकल्प हम सभी को लेना है। सम्मेलन का संचालन विधान सभा प्रभारी अशोक कसौंधन ने किया। इस दौरान जिपंअ रोली सिंहए लोक सभा प्रभारी श्रीकृष्ण शास्त्री, संयोजक डाण् बाकें बिहारी मणि त्रिपाठी, प्रथम महापौर ऋषिकेश उपाध्याय, जिलाध्यक्ष संजीव सिंह, महानगर अध्यक्ष कमलेश श्रीवास्तव, अवधेश पाण्डेय बादल, अभिषेक मिश्र, रमापति पाण्डेय, महंत राम कुमार दास, बाल कृष्ण वैश्य, अनुराग त्रिपाठी, वरूण चौधरी, शशि प्रताप सिंह, दिव्य प्रकाश तिवारी, अरूण तिवारी, दिनेश मिश्र, अरविन्द सिंह, शैलेन्द्र कोरी, तिलकराम मौर्या, अशोका द्विवेदी, आशा गौड़, रीना द्विवेदी सहित मंडल, शक्ति केन्द्र पदाधिकारी सभी बूथ अध्यक्ष मौजूद रहे।

युवक को महिला डॉक्टर की शिकायत करना पड़ा महंगा, महिला ने दी थाने में तहरीर

संवाददाता। बछरावां रायबरेली

विकासखंड बछरावां के कुर्री सुदौली प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में तैनात महिला चिकित्साधिकारी की शिकायत स्वास्थ्य मंत्री एवं उपमुख्यमंत्री के सचिव से करना युवक को महंगा पड़ गया है। बताते चले की कुर्री सुदौली स्थित प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में महिला चिकित्स युवक को दवा लेना महंगा पड़ गया है, जिसकी शिकायत महिला चिकित्साधिकारी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र कुर्री सुदौली शिल्पी सिंह द्वारा बछरावां थाने में तहरीर देकर की गई है।

बताते चले युवक वीरेंद्र कुमार द्वारा दोपहर दिनांक 27 अप्रैल 2024 को समय लगभग 12.00 के आसपास प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में दवा न मिलने से बदहाल स्वास्थ्य सेवाओं को लेकर मोबाइल पर वीडियो बनाकर सोशल मीडिया पर वायरल करने के से नाराज चिकित्साधिकारी द्वारा युवक की शिकायत की गई है।

जिस पर महिला डॉक्टर द्वारा बताया गया है कि वीरेंद्र कुमार द्वारा मुझसे अभद्रता की गई है, जबकि युवक वीरेंद्र कुमार द्वारा बताया गया है कि दवा लेने के लिए प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र गया था जहां पर महिला डॉक्टर ने दवा देने के बजाय अभद्रता की गई थी। जिसकी शिकायत स्वास्थ्य सचिव से की गई थी जिससे नाराज होकर महिला डॉक्टर द्वारा झूठी शिकायत की गई है। घटना की जानकारी मिलते ही जिले के मुख्य चिकित्सा अधिकारी द्वारा घटना की जांच की जा रही है और विधिक कार्यवाही की जाएगी। इस बाबत थाना प्रभारी विजेंद्र शर्मा ने बताया कि अभी तहरीर प्राप्त नहीं हुई है तहरीर मिलने पर विधिक कार्रवाई की जाएगी।

एनएसपीएस त्रिपुला में हुआ छात्र परिषद का गठन

● परिषद के सभी चयनित पदाधिकारियों को दिलाई गई पद व गरिमा की शपथ ● पदनाम पट्टिका एवं बैज लगाकर किया गया सम्मानित

रायबरेली। न्यू स्टैण्डर्ड पब्लिक स्कूल सीनियर सेकेन्ड्री स्कूल त्रिपुला, में नवगठित विद्यालय छात्र परिषद के अलंकरण समारोह का आयोजन किया गया। इस दौरान विद्यालय के प्रधानाचार्य शिवलखन प्रजापति ने 12 सदस्यीय परिषद के छात्रों को पद व गरिमा की शपथ दिलाई और उन्हें पदनाम पट्टिका एवं बैज लगाकर सम्मानित किया। इस मौके पर हेड गर्ल पलक त्रिपाठी और हेड ब्वाय आर्यन निर्मल सहित सभी सदस्यों ने अपने दायित्व को कर्तव्यनिष्ठा के साथ सम्पादित करने की बात कही। परिषद के चयनित पदाधिकारियों में हेड गर्ल एवं हेड ब्वाय सहित शिक्षा मन्त्री प्रिया यादव, सांस्कृतिक मन्त्री अलंकृता त्रिपाठी, खेल मन्त्री अब्दुल रमीज़, अनुशासन मन्त्री अनुष्का सिंह , परिवहन मंत्री उत्तम सिंह एवं उप शिक्षा मंत्री ओम अवस्थी, उप सांस्कृतिक मन्त्री आरती द्विवेदी, उप खेल मन्त्री ज़ोहरान असद, उप अनुशासन मन्त्री कृतिका यादव, उप परिवहन मन्त्री रक्षित प्रजापति शामिल रहे।

प्रधानाचार्य ने परिषद के सभी चयनित पदाधिकारियों को बधाई देते हुए कहा कि परिषद का गठन विद्यार्थी जीवन में नेतृत्व के गुणों को विकसित करने के लिए किया गया है। आगे चलकर ऐसे विद्यार्थी ही विभिन्न क्षेत्रों में बेहतर नेतृत्व क्षमता से संपन्न होंगे। नेतृत्व का अर्थ बहुत व्यापक है। शिक्षा से लेकर खेल तक हर स्थान पर इसकी आवश्यकता है। अनुशासन, कर्तव्यनिष्ठा, दायित्व बोध, दूसरों के प्रति सम्मान, देश व संविधान के प्रति श्रद्धा जैसे गुणों के विकास के लिए ही विद्यार्थी परिषद का गठन किया जाता है। ये बच्चे ही एक दिन देश के सच्चे और अच्छे नागरिक बनकर देश का गौरव बढ़ाएंगे। विद्यालय के पाठ्य सहगामी क्रिया-कलापों में इन पदाधिकारियों की अहम भूमिका है साथ ही उन्होंने परिषद् के सदस्यों से अपेक्षा की कि वह सभी विद्यालय के छात्रों के लिए रोल मॉडल बनकर अपने कर्तव्यों का निर्वहन करें।

मार्ग दुर्घटनाओं में एक दरोगा समेत कुल पांच लोग घायल

ऊंचाहार। क्षेत्र के अलग अलग स्थानों पर हुई मार्ग दुर्घटनाओं में एक दरोगा समेत कुल पांच लोग घायल हो गये, जिसमें दरोगा समेत चार घायलों को सीएचसी से प्राथमिक उपचार के बाद जिला अस्पताल रेफर किया गया है। पहली घटना लखनऊ प्रयागराज मार्ग पर प्रतापगढ़ जिले के नवाबगंज थाना क्षेत्र के सबीसपुर के निकट की है।जहां चार पहिया वाहन की टक्कर से ई रिक्शा सड़क किनारे पलट गया।घटना में ई रिक्शा सवार ओमप्रकाश 45 वर्ष निवासी मनार पूरे लाला थाना नवाबगंज जिला प्रतापगढ़ घायल हो गया।जिसे राहगीरों की मदद से सीएचसी लाया गयाए जहां से प्राथमिक उपचार के बाद उसे जिला अस्पताल रेफर किया गया है। कानपुर उन्नाव राजमार्ग पर गदागंज थाना क्षेत्र के लल्ली की चक्की चौराहे के निकट की है।जहां सोमवार की दोपहर ट्रक की टक्कर से दवा लेकर घर वापस लौट रहे बाइक सवार बच्चू लाल यादव 75 वर्ष व शमशेर 66 वर्ष निवासी पूरे पवारन मजरे धूता घायल हो गये। राहगीरों की सूचना पर पहुंची एम्बुलेंस द्वारा दोनों घायलों को सीएचसी लाया गया।जहां से बच्चू लाल यादव को प्राथमिक उपचार के बाद जिला अस्पताल रेफर किया गया है। तीसरी घटना ऊंचाहार सलोन मार्ग पर तहसील क्षेत्र के उमरन बाजार की है। सोमवार की दोपहर दो बाइकों में आमने सामने से जोरदार भिड़ंत हो गई। नसीराबाद थाने में तैनात बाइक सवार दरोगा ताफूज अहमद 55 वर्ष व मो फैजल 28 वर्ष निवासी सलोन कस्बा गंभीर रूप से घायल हो गये।राहगीरों की मदद से दोनों घायलों को रोहनियां सीएचसी ले जाया गया।जहां से प्राथमिक उपचार के बाद दोनों घायलों को जिला अस्पताल रेफर किया गया है। सीएचसी अधीक्षक डॉ मनोज शुक्ल ने बताया कि सड़क दुर्घटना में घायल तीन लोग सीएचसी आये थे, जिसमें दो घायलों को जिला अस्पताल रेफर किया गया है।

अवध विश्वविद्यालय के प्रशिक्षु टूरिस्ट गाइड अयोध्या के विभिन्न ऐतिहासिक धरोहरो से हुए परिचित

अयोध्या। डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के व्यवसाय प्रबंध एवं उद्यमिता विभाग द्वारा टूरिस्ट गाइड ट्रेनिंग के अंतर्गत प्रशिक्षु टूरिस्ट गाइड को अयोध्या के विभिन्न स्थलों का भ्रमण कराया गया एवं उन्हें भौगोलिक एवं ऐतिहासिक जानकारी प्रदान की गई। इसमें विभागाध्यक्ष प्रो. हिमांशु शेखर सिंह व गोरखपुर विश्वविद्यालय के विशेषज्ञ डॉ. सर्वेश कुमार के नेतृत्व में प्रशिक्षु टूरिस्ट गाइड ने क्वीन हो पार्क से यात्रा प्रारंभ की। इन्हें राजकुमारी हो के बारे में विस्तार से बताया कि कैसे वह दक्षिणी कोरिया गई और भारत सरकार एवं कोरियाई सरकार ने अयोध्या में एक कोरियन पार्क बनाये जाने का अनुबंध किया। उन्हें यह भी बताया कि यहाँ पर कोरियन पार्क कोरियन वास्तुकला स्टाइल में बना है। वहाँ की पारंपरिक चीजों का उपयोग इस पार्क को बनाने में किया है। जिसके कारण बहुत सारे कोरियन टूरिस्ट आते हैं और आगे बहुतायत में आने की संभावना है।

इस भ्रमण में प्रशिक्षु टूरिस्ट गाइड को राम की पैड़ी पर स्थित नागेश्वर नाथ मंदिर का इतिहास और उसके आर्किटेक्चर से परिचित कराया गया। इसके उपरांत उन्हें लक्ष्मण घाट, ऋणमोचन घाट, पापमोचन घाट होते हुए लक्ष्मण किला पर जाकर गाइड का भ्रमण समाप्त हुआ। इस दौरान डॉ. सर्वेश ने टूरिस्ट गाइड को सभी स्थलों के बारे में विस्तार से बताया। कहा कि अयोध्या के सभी मंदिर एवं घाट अपना एक ऐतिहासिक महत्व रखते है। जिसे टूरिस्ट गाइड को जानना होगा और पर्यटकों को बताना होगा। इस भ्रमण से पहले प्रो. हिमांशु शेखर सिंह ने डॉ. सर्वेश कुमार का स्वागत किया और बताया कि इनके द्वारा अयोध्या पर बहुत शोध किए गए है। अयोध्या के भौगोलिक एवं ऐतिहासिक जानकारी प्राप्त कर एक अच्छे टूरिस्ट गाइड बन सकते है।

मोदी सरकार ने महिलाओं के विकास के लिए अनगिनत योजनाएं चलाईः बेबी रानी

फर्रुखाबाद। पांचाल घाट स्थित नारायण आश्रम में भाजपा महिला मोर्चा जिला अध्यक्ष बबीता पाठक की अध्यक्षता में लोस महिला सम्मेलन हुआ उत्तराखंड की पूर्व राज्यपाल एवं महिला एवं बाल कल्याण कैबिनेट मंत्री बेबी रानी मौर्य मुख्य अतिथि के रूप में रही लोकसभा महिला सम्मेलन के माध्यम से मुख्य अतिथि कैबिनेट मंत्री बेबी रानी मौर्य ने आगामी लोकसभा चुनाव के लिए महिलाओं से भाजपा के समर्थन की बात की। मुख्य अतिथि उत्तराखंड की पूर्व राज्यपाल व कैबिनेट मंत्री बेबी रानी मौर्य ने कहा एक मजबूत समाज के निर्माण में महिलाओं का योगदान अविस्मरणी है। भारत में महिलाओं को शक्ति व दुर्गा का रूप कहा गया है देश की रक्षा के लिए भारत की ही वीरांगनाओं ने समय-समय पर बलिदान देकर भारत और उसकी संस्कृति की रक्षा करने का भी कार्य किया।

वर्तमान में भारत प्रधानमंत्री के नेतृत्व में तेजी के साथ आगे बढ़ रहा है। भारत की बढ़ रही ताकत में भी महिलाओं का विशेष योगदान है, प्रदेश में योगीराज में मां बहन बेटियां सुरक्षित महसूस कर रही हैं। मां बहन बेटियों पर होने वाले अत्याचारों में बड़ी कमी आई है, इस देश में वर्षों तक महिलाओं के साथ अन्याय और अत्याचार होता रहा किसी भी सरकार ने महिलाओं के सम्मान और सुरक्षा के लिए कोई ठोस कार्य नहीं किया। मोदी जी ने प्रधानमंत्री बनने के बाद महिलाओं के सम्मान और सुरक्षा के लिए ऐतिहासिक कदम उठाए। जो हक देश की महिलाओं को मिलना चाहिए वह तुष्टिकरण की भेंट चढ़ गई लेकिन भाजपा सरकार निरंतर महिलाओं को सम्मान के साथ जीने का हक दे रही है। पूर्व राज्य महिला आयोग की सदस्य डॉक्टर मिथिलेश अग्रवाल ने कहा प्रदेश में पिछली सपा और बसपा की सरकार में महिलाओं के साथ अन्याय दुराचार होता था लेकिन योगीराज में गुंडे और माफिआओं पर कड़ी कार्रवाई करके महिलाओं को सुरक्षित माहौल देने का कार्य किया।

तीसरे दिन नहर में उतराता मिला सोनू का शव

मोहम्मदी। नगर के मोहल्ला बाबौरी निवासी 19 वर्षीय सोनू का शव तीसरे दिन जिला हरदोई के थाना लूनार में एक नहर के पानी में उतराता मिला है। सोनू शनिवार को अपने दोस्तों के साथ महासिल नहर पर नहाने गया था। वहीं नहर में नहाते समय वह गहरे पानी में चला गया और अचानक डूब गया। इसकी जानकारी मिलते ही आसपास के लोगों ने परिजनों को सूचना दी। सोनू के डूबने की सूचना पाकर घर में कोहराम मच गया। परिजन और पुलिस मौके पर पहुंचे। गोताखोरों के माध्यम से युवक की तलाश शुरू हुई। लेकिन उसका कोई पता नहीं चल सका। मौके पर पहुंचे नगर पालिका अध्यक्ष संदीप मेहरोत्रा कन्हैया नहर का पानी बंद करने के लिए सिंचाई विभाग के अधिकारियों से बातचीत की। इतनी बड़ी घटना होने के बाद भी प्रशासन का कोई भी अधिकारी परिजनों से नहीं मिला और क्षेत्र के कोई जनप्रतिनिधि परिजन से मिलने नही पहुंचे। परिजनों का रो रो कर बुरा हाल है।

लोकसभा चुनाव प्रेक्षकों ने चेताया सभी प्रत्याशी नियमों का पालन करें

लखीमपुर खीरी। लोकसभा चुनाव 2024 के लिए सोमवार को कलेक्ट्रेट में 28.खीरी संसदीय क्षेत्र की सामान्य प्रेक्षक आर. सीता लक्ष्मी, 29.धौरहरा संसदीय क्षेत्र के सामान्य प्रेक्षक श्रीधर चेरुकुरी, व्यय प्रेक्षक (धौरहरा) सुमित बेसरा, व्यय प्रेक्षक (खीरी) सुदीप्त पाल ने समस्त मान्यता प्राप्त राजनैतिक दलों एवं प्रत्याशियों व उनके अभिकर्ताओं संग बैठक की। बैठक का संचालन सीडीओ अनिल कुमार सिंह ने किया। बैठक की शुरुआत में प्रेक्षकगण ने दोनों लोकसभा क्षेत्र के प्रत्याशियों से उनका परिचय जाना। उनका भारत निर्वाचन आयोग की ओर से स्वागत करते हुए निर्देशित किया कि सभी प्रत्याशी आयोग के निर्वाचन संबंधी नियमों का पालन करें। अपने रिटर्निंग ऑफीसर से अनुमति लेकर ही चुनाव प्रचार सम्बन्धी सामग्री का प्रयोग करें। जिससे शांतिपूर्णए निष्पक्ष और पूरी पारदर्शिता के साथ चुनाव सम्पन्न कराया जा सके।

बैठक में प्रत्याशियों तथा उनके अभिकर्ताओं की जिज्ञासाओं का समाधान भी किया तथा जरूरी अभिलेखों की प्रतियां भी उपलब्ध कराई। प्रत्याशियों तथा उनके एजेंटों को निर्वाचन अभिकर्ताए पोलिग एजेंटए मतगणना एजेंट की नियुक्तिए उनके कर्तव्य एवं अधिकार तथा उनके प्रशिक्षण के बारे में जागरूक किया।

जिला निर्वाचन अधिकारीए डीएम महेंद्र बहादुर सिंह ने कहा कि मतदान के दिन सभी राजनीतिक दलए उम्मीदवार व पोलिंग एजेंट निर्वाचन कार्य में लगे हुए अधिकारियों को शांतिपूर्ण व स्वतंत्र मतदान करवाने में सहयोग करेंगे। इस दौरान सभी प्रत्याशीए उनके समर्थक व पोलिंग एजेंट निर्वाचन आयोग द्वारा जारी निर्देशों का अक्षरशः पालन करेंगे। उन्होंने प्रत्याशियों को सचेत किया कि बिना अनुमति के कोई भी वाहन नहीं चलेगा और वाहन की अनुमति वाहन पर चस्पा होगी।

सीडीओ अनिल कुमार सिंह ने मतदान से पूर्व तीन बार व्यय लिखे का मिलान किया जाएगा। उन्होंने कहा कि ईवीएम की कमिश्निंग मंडी परिसर में विधानसभावार वीडियोग्राफी की निगरानी में होगी। 02 मई को पोलिंगपर्सन की डीएस कॉलेज में ट्रेनिंग होगी। पोस्टल बैलेट के लिए प्रशिक्षण स्थल पर विसवार फैसिलिटेशन सेंटर बनाएं हैंए जिन कार्मिकों की ड्यूटी उसकी लोकसभा से इतर लगी हैए उन्हें पोस्टल बैलेट निर्गत किया जाएगा। वही जिन कार्मिकों की ड्यूटी अपनी लोकसभा के किसी मतदेय स्थल पर लगी हैए उस कार्मिक को प्रशिक्षण स्थल से 12.ए पर आवेदन जारी होगाए जिसे भरकर संबंधित कार्मिक ईडीसी प्राप्त करेंगे। ताकि मतदान दिवस पर वह अपने ड्यूटी स्थल पर ईवीएम से मतदान कर अपने मताधिकार का प्रयोग करेगा। एडीएम संजय कुमार सिंह ने कहा कि चुनाव प्रचार सामग्री पर प्रकाशक और मुद्रक के नाम के साथ.साथ उसकी मात्रा अनिवार्य रूप से मुद्रित होगी। वरिष्ठ कोषाधिकारी अमित कुमार राय ने कहा कि सभी प्रत्याशी व्यय रजिस्टर में सभी प्रविष्टियों बारीकी से भरेंगे।

व्यय प्रेक्षक 3, 7 व 10 मई को निर्वाचन व्यय लेखे का करेंगे मिलान

व्यय प्रेक्षक (धौरहरा) सुमित बेसरा, व्यय प्रेक्षक ;खीरीद्ध सुदीप्त पाल ने प्रत्याशियों को सूचित करते हुए कहा कि व्यय लेखे के संबंध में 03ए 07 एवं 10 मई को कलेक्ट्रेट सभागार में निर्वाचन व्यय लेखे मिलान होगा, अनिवार्य रूप से प्रतिभाग करना सुनिश्चित करें। अधिकृत निर्वाचन व्यय अभिकर्ता उपस्थित होकर निर्वाचन व्यय लेखा प्रस्तुत करेंगे। निर्वाचन व्यय लेखा मिलान के लिए दैनिक व्यय लेखा पंजिका, बैंक पंजिका/ बैंक स्टेटमेंट की प्रमाणित छायाप्रति एवं वाउचर प्रस्तुत करना जरूरी होगा। लेखा प्रस्तुत करने की तिथि से एक दिन पूर्व तक का लेखा प्रस्तुत करना होगा। भारत निर्वाचन आयोग द्वारा निर्गत निर्देशों के क्रम में नियमानुसार कार्रवाई करते हुए संबंधित अभ्यर्थी हेतु निर्गत जनसभा जुलूस तथा वाहन की अनुमति निरस्त करने की कार्रवाई की जायेंगी।

रिहायशी मकान में आग लगने से लाखों का नुकसान

संवाददाता। मौदहा हमीरपुर

नगर के एक मोहल्ला स्थित एक रिहायशी मकान में अज्ञात कारणों से आग लग गई जहां रखा तमाम सामान जलकर खाक हो गया तो वहीं आग ने 1 लाख रूपये से अधिक की नगदी तथा तेरह क्विंटल गेहूं समेत पांच क्विंटल सरसों को भी अपनी चपेट में लिया है। इस आग से हुई क्षति से परिवार पर संकट के बादल मंडरा रहे हैं तथा साल भर के खाने पीने की व्यवस्था भी राम भरोसे हो गई है।

नगर के सिचौली पुरवा निवासी अजीम खांन पुत्र निजाम खांन ने बताया कि रविवार की रात जब वह अपने घर के बाहर सो रहा था तभी अज्ञात कारणों से उसके रिहायशी मकान में आग लग गई जिससे उसके घर में रखा 13 क्विंटल गेहूं तथा 5 क्विंटल सरसों समेत एक लाख दस हजार रूपये जलकर खाक हो गया। वहीं इस आगजनी से परिवार के भरण-पोषण के लिए रखा अनाज जल जाने से परिवार के ऊपर संकट के बादल मंडराने लगे हैं। अजीम खांन ने बताया कि उसने कुछ खेत लगान पर लिया था जिससे उपजी फसल को बेचकर उसने 60 हजार रूपये इकट्ठा किये थे तथा बाहर रहकर कमा रहे उसके लड़के ने बहन की शादी के लिए 50 हजार रूपये भेजे थे जो कि पूरी तरह से जल चुके हैं। वहीं अज्ञात कारणों से लगी आग के पीछे पीड़ित ने किसी से दुश्मनी न होने की भी बात बताई है उपजिलाधिकारी राजेश चंद्रा ने बताया कि लेखपाल द्वारा मौके पर जाकर मुआयना किया गया है तथा जो भी आवश्यक क्रिया कलाप होंगे उन पर प्रशासनिक मदद के लिए हर संभव प्रयास किया जाएगा।

इंडिया गठबंधन की सरकार किसानों का कर्ज माफ करेगीः आनंद भदौरिया

● भाजपा ने हर साल दो करोड़ नौकरी देने का झूठा वादा किया

लखीमपुर खीरी। धौरहरा संसदीय सीट से सपा प्रत्याशी आनंद भदौरिया ने धुंआधार चुनाव प्रचार करते हुए सोमवार को विधानसभा धौरहरा क्षेत्र के ग्राम नयागांव, बोझिया, उदलिशपुर, लोकईपुरवा, खजुरी, रामलोक, ठकुरनपुरवा, धौरहरा कस्बा, अमेठी, पाली, हरिरामपुर, करौहां, कंधरापुर व महाराजनगर ग्राम में जनसंपर्क कर नुक्कड़ सभाएं की। उन्होंने नुक्कड़ सभा को संबोधित करते हुए कहाकि भाजपा ने किसानोंए नौजवानों सभी को धोखा दिया है। महंगाई बढ़ा दी है। डीजल, खाद, कीटनाशक सब महंगा हो गया है, किसानों को उनकी फसलों का लागत मूल्य भी नहीं मिल रहा है। भाजपा ने किसानों को उनकी फसल का न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) का कानूनी अधिकार नहीं दिया। दिल्ली में जब किसान एमएसपी की मांग को लेकर दिल्ली गये थे तो उनको रोकने के लिए सड़क पर सीमेंट की दीवार खड़ी कर दी। कीलें लगवा दीए ट्रेक्टर को डीजल नहीं दिया गयाए इस बार किसानए नौजवान सरकार बदलने जा रहा है।

किसान भाजपा को वोट नहीं दे रहा है, आनंद भदौरिया ने आगे कहाकि इंडिया गठबंधन की सरकार किसानों की फसलों के लिए एमएसपी का कानूनी अधिकार देगीए किसान का कर्ज माफ करेगीए भाजपा सरकार ने उद्योगपतियों का 16 लाख करोड़ रूपये का कर्ज माफकिया लेकिन किसान का कर्ज माफ नहीं कियाए भाजपा ने नौजवानों का भविष्य अंधकार में डाल दिया। हर साल दो करोड़ नौकरी देने का झूठा वादा कियाए यूपी में भर्ती परीक्षाओं के सब पेपर लीक हो गए। जानबूझकर पेपर लीक कराये गयेए लाखों नौजवानों का भविष्य खराब कर दियाए भाजपा की नीयत नौकरी देने की नहीं थी।

उन्होंने कहा भाजपा ने नौजवानों की नौकरी तो छीनी ही साथ ही उसका एक तिहाई जीवन बर्बाद कर दिया। बीजेपी ने अग्निवीर योजना लाकर फौज की नौकरी चार साल की कर दीए हम लोग अग्निवीर कभी स्वीकार नहीं करेंगेए अग्निवीर में न पेंशन है और न सम्मानए हम लोग अग्निवीर व्यवस्था खत्म कर पहले ही तरह सेना की पूरी नौकरी देंगे।

उन्होंने आगे कहाकि भाजपा से सावधान रहिए, जो मन की बात करते हैं वे संविधान की बात नहीं करते हैंए यह संविधान और लोकतंत्र बचाने का चुनाव है, भाजपा संविधान खत्म करना चाहती है, हम समाजवादी इंडिया गठबंधन के लोग संविधान के रक्षक है, संविधान और लोकतंत्र बचाने की लड़ाई लड़ रहे हैं। समाजवादियों को सरकार में आने का जब भी मौका मिला बहुत काम किए।

ट्रक की टक्कर से एक की मौत, एक घायल

फतेहपुर। हथगाम थाना क्षेत्र के गौसपुर गांव निवासी राम कृपाल का 20 वर्षीय पुत्र अमित कुमार और गांव निवासी राम दास की 20 वर्षीय पुत्री अंशू कुमारी दोनो बाइक पर सवार होकर हुसैनगंज कस्बे आ रहे थे। जब उनकी बाइक हुसैनगंज थाना क्षेत्र के बजरंगापुर गाँव के समीप पहुंची तभी पीछे से आये तेज रफ्तार ट्रक ने बाइक को टक्कर मार दिया। टक्कर लगते ही बाइक गिर गई और बाइक पर पीछे बैठी अंसु कुमारी को ट्रक ने कुचल दिया। जिससे बाइक चालक घायल हो गया वही अंसु कुमारी गम्भीर रूप से घायल हो गई। घटना की सूचना सरकारीएंबुलेंस को दी गई। सूचना मिलती ही मौके पर पहुंचे एंबुलेंस के ईएमटी अमरेश और पायलेट शिव कुमार ने घायलों को इलाज के लिए जिला अस्पताल पहुंचाया। जहां ड्यूटी पर मौजूद डॉक्टर घायलों का इलाज कर रहे थे। तभी इलाज के दौरान अंशु कुमारी की मौत हो गई। हादसे की खबर परिजनों को हुई तो परिजनों में कोहराम मच गया।

क्विक न्यूज

फसल खराब होने से परेशान किसान ने फांसी लगाकर दी जान

राठ (हमीरपुर)। फसल खराब होने से परेशान किसान ने पेड़ से फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली है। पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम कराया है। युवक की मौत पर स्वजनों में मातम छाया हुआ है। पुलिस के मुताबिक चिकासी थाने के अमरपुरा गांव निवासी बलवीर(45) पुत्र रामकृपाल राजपूत ने रविवार की शाम खेत में लगे अमरुद के पेड़ पर गमछा से फंदा डालकर फांसी पर झूल गया। वहां से गुजर रहे ग्रामीणों ने फांसी पर लटका देखा तो हड़कंप मच गया।मृतक के पिता ने बताया फसल खराब होने से वह परेशान रहता था। वह शराब पीने का भी आदी था।

चोरों ने फौजी के सूने घर से लाखों के जेवरात व नकदी उड़ाई

राठ (हमीरपुर)। राठ कस्वा निवासी फौजी के घर का ताला तोड़कर चोरों ने लाखों रुपए के सोने चांदी के जेवरात सहित 15 हजार रुपए की नगदी पार कर दी है। मौके पर पहुंची पुलिस ने चोरी का मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी।उरई रोड दीवानपुरा मोहल्ला निवासी सुरेंद्र सिंह ने पुलिस को बताया कि वह फौज में कार्यरत है। अतरौली धंगवा गांव स्थित ससुराल में बड़े ससुर के निधन के बाद शुक्रवार को त्रयोदशी कार्यक्रम में शामिल होने के लिए छुट्टी लेकर आया था। परिवार सहित घर का ताला डालकर चला गया था। अगली सुबह शनिवार को जब वह घर लौटा तो घर के अंदर गैलरी और कमरे का ताला टूटा दिखाई दिए। चोरो ने लाखों के जेवरात व नकदी पार कर दी पुलिस ने जांच पड़ताल शुरु कर दी है।

पुलिस ने हत्या में वांछित चल रहे युवक को दबोचा

गुरसहायगंज (कन्नौज)। उच्चाधिकारियों के निर्देशन एवं प्रभारी निरीक्षक जयप्रकाश शर्मा के नेतृत्व में कोतवाली पुलिस द्वारा विगत दिनों पूर्व प्रेम संबंधों में बाधक बन रहे पति की पत्नी द्वारा प्रेमी व उसके साथी के साथ षड्यंत्र रचकर हत्या के मामले में फरार चल रहे अभियुक्त को कोतवाली पुलिस द्वारा छापेमारी कर हिरासत में लेकर कार्रवाई की गई है। प्रभारी निरीक्षक जयप्रकाश शर्मा ने कस्बा प्रभारी रोबिन सिंह, कांस्टेबल मोनू कुमार, अमन कुमार, जितेन्द्र सिंह के साथ संदिग्ध व्यक्ति एवं वाहन चेकिंग के दौरान मुखबिर की सूचना पर पूर्वी बाईपास के निकट निर्माणाधीन हॉस्पिटल के पास छापेमारी की। जहां से हत्या के मामले में फरार चल रहे अतुल पुत्र सत्यपाल जाटव निवासी ग्राम वसीकला थाना हसनपुर जिला अमरोहा को हिरासत में ले लिया। कोतवाली पुलिस द्वारा आरोपी के विरुद्ध अग्रिम विधिक कार्रवाई करते हुए न्यायिक अभिरक्षा में भेजा गया।

तमंचा-कारतूस के साथ युवक को दबोचा

फतेहपुर। किशनपुर थाने के उपनिरीक्षक महेंद्र प्रताप सिंह अपने हमराही सिपाहियों के साथ क्षेत्र में गश्त कर रहे थे। तभी मुखबिर की सूचना पर सिल्मी नहर पुलिया के निकट घात लगाए खड़े जिलाजीत उर्फप्रीतम सिंह पुत्र शिव बहादुर निवासी ग्राम वंशीपुर मजरे ईंटगांव खागा को गिरफ्तार कर लिया। तलाशी लेने पर उसके पास से एक तमंचा 315 बोर व एक कारतूस बरामद किया।

पुरानी रंजिश में वृद्ध को मारी गोली, भर्ती

फतेहपुर। सुल्तानपुर घोष थाना क्षेत्र के घोसी का पुरवा गांव निवासी बब्लू पुत्र लल्लू को पुरानी रंजिश को लेकर गांव के ही राकेश ने अपनी पत्नी प्रेमा व साले सुरेश के साथ मिलकर पहले मारापीटा। बाद में उसे गोली मार दी जिससे वह घायल हो गया। घटना को अंजाम देने के बाद साले-बहनोई मौके से फरार हो गए। पुलिस ने वृद्ध को उपचार के लिए जिला चिकित्सालय में भर्ती कराया। वहीं घायल के परिजनों की तहरीर के आधार पर आरोपियों की तलाश शुरू कर दी।

संदिग्ध अवस्था में युवक का मिला शव

फतेहपुर। हथगाम थाना क्षेत्र के चक बबुल्लापुर मजरे अमलिया पर गांव निवासी गुलाब सिंह का 22 वर्षीय पुत्र इंद्रजीत का गांव में स्थित नरेंद्र वाटिका गेस्ट हाउस के समीप संदिग्ध अवस्था में शव पड़ा हुआ ग्रामीणों ने देखा तो हड़कम्प मच गया। पुलिस मृतक के शव को कब्जे में लेकर घटना की जांच पड़ताल कर रही है। बीती रात परिवार में एक शादी थी। तभी अचानक यह गायब हो गया खोजने पर नहीं मिला। सुबह गेस्ट हाउस के समीप मृत अवस्था में मिला है। कुछ पता नहीं है कि किस तरह इसकी मौत हुई है खुद कुछ खा लिया या किसी ने कुछ खिला दिया।

वाहन की टक्कर से बाइक सवार दंपति घायल

फतेहपुर। बांदा जनपद के कमासिन थाना क्षेत्र के कस्बा निवासी रामकेश का 27 वर्षीय पुत्र राजेश कुमार अपनी 23 वर्षीय गर्भवती पत्नी पूजा देवी को बाइक पर सवार कर किसी काम से फतेहपुर आ रहा था। जब उसकी बाइक बबेरू थानां क्षेत्र के औगासी घाट के समीप पहुँची। तभी बोलेरो ने उसकी बाइक को टक्कर मार दिया। जिससे बाइक सवार पति-पत्नी दोनों घायल हो गए।

सेल्समैन से मारपीट में पूर्व ब्लाक प्रमुख के भाई सहित आधा दर्जन पर केस दर्ज

फर्रुखाबाद। पेट्रोल पम्प सेल्स मैंन के साथ पेट्रोल न डालने का आरोप लगाकर मारपीट व जान से मारने की धमकी देनें मे पूर्व ब्लाक प्रमुख के भाई सहित आधा दर्जन के खिलाफमुकदमा दर्ज किया गया है। थाना कमालगंज के ग्राम गदनापुर निवासी आलोक पाल पुत्र महेश चन्द्र पाल भूलनपुर चिरपुरा स्थित उपासना फिलिंग स्टेशन पर सेल्समैन पद पर कार्यरत है। आलोक ने दर्ज कराई गई एफआईआर मे कहा कि 26 अप्रैल को शाम की शिफ्ट की ड्यूटी कर रहा था कि अचानक एक कार जिस पर दुर्विजय उर्फ नटिया निवासी राजा नगला फतेहगढ़, सुरेन्द्र प्रधान निवासी गढ़ाखेरा अपने अन्य 4 साथियों के साथ शाम को 6.54 बजे डीजल डलवाने के लिए आये। उनकी कार में डीजल डाला गया। उसके कुछ देर बाद कार सबार फिर आ गए और पेट्रोल न डालने का आरोप लगाकर गाली गलौज कर जान से मारने की धमकी दी। पेट्रोल पंप प्रवन्धक विजय कुमार ने डीजल डालते हुए का सीसीटीवी दिखाया।

महिला ने संदिग्ध हालत में तोड़ा दम, मौत का राज नही खुला

संवाददाता। फर्रुखाबाद

संदिग्ध हालत में महिला की हालत गंभीर होनें पर उसे सीएचसी में भर्ती किया गया। जहाँ से हालत में सुधार न होनें पर उसे लोहिया अस्पताल रिफर किया गया। लोहिया अस्पताल में उसे मृत घोषित कर दिया गया। परिजन शव लेकर घर चले गये। परिजनों नें उसके शव को घाट ले जाकर अंतिम संस्कार की तैयारी कर ली। लेकिन सूचना पुलिस को मिलने पर पुलिस नें शव को कब्जे में लेकर उसका पोस्टमार्टम कराया। लेकिन उसकी मौत का राज पता न चलने पर बिसरा सुरक्षित कर लिया गया।

कायमगंज कोतवाली क्षेत्र के ग्राम जौरा रोड़ पट्टिया निवासी 24 वर्षीय पायल का पति सुधाकर पल्लेदार का कार्य करता है। पायल को अचानक उल्टी की शिकायत होनें पर उसे सीएचसी में भर्ती कराया। लेकिन हालत में सुधार न होनें पर उसे लोहिया अस्पताल रिफर किया गया।

लोहिया अस्पताल में उपचार के दौरान पायल नें दम तोड़ दिया। परिजन शव लेकर घर चले गये। घर से परिजन पायल का अंतिम संस्कार करने के लिए कुंडा पर पंहुचे। सूचना मिलने पर सीओ सतेन्द्र कुमार, कोतवाल रामवतार, उपनिरीक्षक कृष्ण कुमार, नायब तहसीलदार मौके पर पंहुचे। उन्होंने अंतिम संस्कार को रोंक दिया।

पुलिस नें शव का पंचनामा भरकर पोस्ट मार्टम के लिए भेज दिया। शव का पोस्टमार्टम डॉ. अनुराग वर्मा ने किया। उसके गले पर एक खरोच का निशान मिला। लेकिन मौत का कारण साफन होनें पर उसका बिसरा सुरक्षित किया गया।

तीन दिन से गायब युवक की लाश बरामद हत्या की आशंका

हमीरपुर। जलालपुर थाना क्षेत्र से तीन दिन से लापता युवक का शव सोमवार को गांव के पास तालाब के किनारे झाड़ियों के पीछे पुलिस ने बरामद किया है। गहरे चोट के निशान से साफजाहिर होता है कि युवक की हत्या कर लाश को फेका गया है।पुलिस के मुताबिक क्षेत्र के ममना गांव निवासी सचिन (22) ईट भट्टा में काम करता था। दो दिन पहले गांव आया था। 26 अप्रैल को अचानक घर से गायब हो गया। परिवारी जनों द्वारा खोजबीन की गयी मगर कोई पता नही चला। गुशशुदकी की रिपोर्ट धाने में दर्ज करायी गयी। बब ग्रामीण सुवह खेतो की तरफगये तो तालाब के किनारे झाड़ियो के पीछे युवक का शव देखकर सनसनी फैल गयी। पुलिस को जानकारी होते ही मौका मुआवना किया। सीओ सरीला मौके पर पहुचे। गांव के ग्राम प्रधान जितेंद्र ने बताया कि गांव व आसपास के दो दर्जन युवक विच्छू गैंग से जुडे है। क्या हो सकता है यह तो जांच में ही पता चल सकता है।

इंडिया गठबंधन की सरकार बनी तो क्षेत्र में होगा चहुंमुखी विकासः अजेंद्र सिंह लोधी

नामांकन करने जाते सपा प्रत्याशी व अन्य लोग

हमीरपुर। सोमवार को सपा प्रत्याशी अजेंद्र सिंह लोधी ने नामांकन सेट का पहला पर्चा दाखिल करते हुये कहा कि इंडिया गठबंधन की सरकार बनती है तो चहुंमुखी विकास किया जायेगा। भाजपा सरकार में सिर्फ दो पंचवर्षीय तक केवल जुमलेबाजी होती रही है। जिसे जनता पूरी तरह जान गयी है। अब जनता भाजपा नेताओं के बहकावे में नही आने वाली है। प्रत्याशी ने कहा कि सपा कार्यकाल के ज्यादातर काम आज भी अधूरे पडे हुये है। सरकार बनते ही पहले उनको पूरा कराया जायेगा। चौथे दिन चार नामांकन पत्र लिये गये है। प्रत्याशी व उनको प्रस्तावकों को मोवाइल फोन ले जाने पर सख्त रोक लगा दी गयी है। आज केवल सपा प्रत्याशी के अलावा किसी दल के प्रत्याशी ने नामांकन नही किया है। संपत्ति का व्योरा सपा प्रत्याशी ने दाखिल किया जिसमे प्रत्याशी अजेंद्र सिंह राजपूत कक्षा 12वी पास है। उनके पास बैंको का करीब 74.85 लाख रुपये का कर्ज है। इसके साथ उनके पास एक लाइसेंसी रायफल भी है। एक करोड़ एक लाख 99 हजार 175 रुपये का कर्ज है। नामांकन में जिलाध्यक्ष इदरीश खान, नीरज कश्यप, गयादीन अनुरागी, हिमांशु सैनी समेत कई लोग शामिल है।

दिव्यांगों ने अधिक से अधिक मतदान में भागीदारी के लिये स्वीप कार्यक्रम के अन्तर्गत जागरूकता कार्यकम

बांदा। लोकतंत्र के महापर्व लोकसभा सामान्य निर्वाचन.2024 पर जिला निर्वाचन अधिकारी बाँदा दुर्गा शक्ति नागपाल के निर्देशन में जनपद बाँदा के दिव्यांगजनों में अधिक से अधिक मतदान में भागीदारी के लिये स्वीप कार्यक्रम के अन्तर्गत जागरूकता कार्यकम हेतु ट्राईसाईकिल यात्रा का आयोजन विकास भवन से शुरू होकर, महाराणा प्रताप चौकए डीएम कालोनी रोड, कचहरी चौराहा होते हुये वापस विकास भवनए बाँदा में कार्यक्रम का समापन किया गया। यात्रा का शुभारम्भ मुख्य विकास अधिकारी श्री वेद प्रकाश मौर्यए एवं उप जिला निर्वाचन अधिकारी/अपर जिलाधिकारी श्री राजेश कुमार ने हरी झंडी दिखाकर किया।

मुख्य अतिथि के तौर पर जनपद के दिव्यांगजन आइकॉन पद्मश्री उमाशंकर पाण्डेय थे। इस अवसर पर जिला विकास अधिकारी, रमा शंकर सिंह एवं जिला दिव्यांगजन सशक्तीकरण अधिकारी, बाँदा श्री अभिषेक चौधरीए जिला सूचना अधिकारी रामजी दूबे, प्रधानाचार्य स्पर्श राजकीय दृष्टिबाधित बालक इण्टर कालेज महोखर, बाँदा, समस्त शिक्षकगण मौजूद थे। मतदाता जागरूकता अभियान को सम्बोधित करते हुये मुख्य विकास अधिकारी, वेद प्रकाश मौर्य ने एक.एक मत मूल्यवान है का संदेश दिया। उन्होने बताया कि दिव्यांगजनों एवं वृद्धजनों के लिये मतदान बूथों पर आवश्यक व्यवस्थाएं उपलब्ध करायीं गयी हैं। अपर जिलाधिकारी राजेश कुमार ने दिव्यांगजनों को जिलाधिकारी महोदया के संदेश बनों देश के भाग्य विधाता, जागो बाँदा के मतदाता को दोहराया। उन्होनें यह भी बताया कि जनपद के प्रत्येक 1389 बूथों पर दृष्टिबाधितों के लिये ब्रेल बैलट की व्यवस्था की गयी हैंए बेल मतदान पत्र राष्ट्रीय दृष्टिबाधित संस्थान ब्रेल प्रेस से विशेष तौर पर दृष्टिबाधित के लिये मगायें गये हैं। जिला विकास अधिकारी रमा शंकर जी ने पहले मतदान, फिर जलपान।

डीएम ने कार्यरत कार्मिकों को पोस्टल वैलेट के माध्यम से मतदान हेतु की बैठक

कानपुर देहात। लोकसभा सामान्य निर्वाचन 2024 के दृष्टिगत आवश्यक सेवाओं से जुड़े अधिकारियोंए कर्मचारियों को पोस्टल बैलट से मतदान सुविधा हेतु जिलाधिकारी आलोक सिंह के अध्यक्षता में मां मुक्तेश्वरी देवी सभागार कक्ष कलेक्ट्रेट में बैठक संपन्न हुई। बैठक में जिलाधिकारी ने कहा की अधिसूचित आवश्यक सेवाओं में कार्यरत कार्मिकों को पोस्टल वैलेट फार्म 12 डी के माध्यम से मतदान की सुविधा आयोग द्वारा प्रदान की गई है। उन्होंने सभी आवश्यक सेवाओं से जुड़े विभागाध्यक्षों से कहा कि विभागाध्यक्ष अपने कार्यालय के

अंतर्गत आवश्यक सेवाओं से जुड़े कर्मचारियों का फार्म 12 डी भरवाकर डीएफओ कार्यालय में शीघ्र प्रेषित करें। जिन अधिकारीए कर्मचारियों का फॉर्म 12 डी प्राप्त होगाए उन्हें ट्रेनिंग स्थल पर व संबंधित विधानसभा के रिटर्निंग अधिकारी के यहा पोस्टल वैलेट से मतदान की सुविधा प्राप्त होगी। उन्होंने कहा कि ट्रेनिंग स्थल पर विधानसभावार सुविधा केंद्र बनाया जाएगाए वहीं रिटर्निंग अधिकारी के यहा मतदान दिवस से तीन दिन पूर्व से मतदान दिवस के एक दिन पहले तक यह सुविधा प्राप्त होगी। बैठक में अन्य बिंदुओं पर विस्तार से चर्चा की गई। इस मौके पर डीएफओ अनिल कुमार द्विवेदीए मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉक्टर ए के सिंहए सहायक निर्वाचन अधिकारी अजीत पांडेय आदि अधिकारीगण उपस्थित रहे।

यातायात पुलिस ने यातायात जागरूकता शिविर में बताये नियम

कन्नौज। पुलिस अधीक्षक अमित कुमार आनंद के निर्देशानुसार व अपर पुलिसअधीक्षक डॉ संसार सिंह के पर्यवेक्षण में एवं क्षेत्राधिकारी यातायात डॉ प्रियंका वाजपेई के नेतृत्व में यातायात प्रभारी आफ़क़ खां द्वारा के बीएस मेमोरियल पब्लिक स्कूल में सड़क सुरक्षा पखवाड़ा के अंतर्गत यातायात जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें यातायात प्रभारी द्वारा छात्र एवं छात्राओं को यातायात नियमों की महत्वपूर्ण जानकारी दी गई। प्रभारी द्वारा हेलमेट लगाना क्यों जरूरी है। सीटबेल्ट न लगाने से क्या नुकसान होता है और सीट बेल्ट लगाने से क्या फायदा होता है बताया गया कि सड़क को पैदल क्रॉस करते समय कभी भी रोड के किनारे खड़ी गाड़ियों के पास से सड़क पार नहीं करनी चाहिए। ग्रीन क्रॉस कोड में चार चीजें होती है। रुको, देखो, सुनो तब सोच समझ कर चलो। इनको हमेशा याद रखना चाहिए।

बंधक बनाकर पीटने व डकैती में बस मालिक सहित चार पर एफआईआर

फर्रुखाबाद। रोड़बेज बस अड्डे के प्रभारी को निजी बस के कर्मियों ने बंधक बनाकर जमकर मारपीट की थी। जिससे प्रभारी के गंभीर चोटें आई। मामले मे पुलिस ने घायल प्रभारी का बस मालिक सहित चार के खिलाफ मारपीट, सरकारी कार्य में बाधा, डकैती आदि गंभीर धाराओं में मुकदमा दर्ज किया है। पुलिस मामले की जांच कर रही है। थाना कादरी गेट के लाल दरवाजा बस अड्डे के जितेंद्र सिंह गौतम स्टेशन प्रभारी हैं। बीती रात लगभग 9 बजे उन्होंने बस अड्डे के सामने से सबारी भरते डग्गामार बस को पकड़ा। जब जितेंद्र सिंह मोबाइल से वीडियो बनाते हुए बस के भीतर दाखिल हुए तो बस कर्मियों ने बस का दरबाजा बंद कर लिया। आरोपी बस को भगाकर चांदपुर ले गया। जहां प्रभारी के साथ मारपीट की गई। जितेंद्र सिंह गौतम ने बताया की आरोपियों ने उनका मोबाइल फोन भी छीन लिया। आरोपी जान से मारकर गंगा में फेंकने की बात कर रहे थे। कादरी गेट ओपी लॉन के पास बस ने दो बाइक सबार को टक्कर मार दी। जिससे दोनो बाइक सबार घायल हो गए। बस मालिक विपिन दीक्षित, बस चालक व दो अन्य अज्ञात के खिलाफ धारा मुकदमा 364, 394, 332, 353, 504, 506 व एससीध्एसटी एक्ट के तहत मुकदमा दर्ज किया है। जांच सीओ सिटी को दी गई है। दबिश देने गई पुलिस गलत घर में घुसी घटना होने के बाद पुलिस ने बस मालिक विपिन दीक्षित के नाम के दूसरे व्यापार मंडल नेता के घर रात दबिश दी। बस मालिक और व्यापार मंडल नेता का नाम विपिन दीक्षित निवासी कादरी गेट है। व्यापारी नेता विपिन दीक्षित ने बताया की जब भारी पुलिस अचानक घर मे जबरन घुसी। उसके बाद परिजनो से अभद्रता की। जानकारी हुई की जहां दबिश दी है यह बस मालिक नही हैं। जिसके बाद पुलिस उल्टे पैर वापस हुई। थानाध्यक्ष अवध नारायण पाण्डेय ने बताया की मुकदमा दर्ज कर लिया गया है।

सुप्रीम कोर्ट ने अफसरों की भूमिका की सीबीआई जांच पर रोक लगाई

स्कूल भर्ती घोटाला

भाषा। नई दिल्ली

उच्चतम न्यायालय ने शिक्षक भर्ती मामले में पश्चिम बंगाल सरकार के अधिकारियों की भूमिका की सीबीआई जांच का निर्देश देने संबंधी कलकत्ता उच्च न्यायालय के आदेश पर सोमवार को रोक लगा दी। हालांकि, शीर्ष अदालत ने राज्य संचालित और राज्य सहायता प्राप्त स्कूलों में स्कूल सेवा आयोग (एसएससी) द्वारा की गई 25,753 शिक्षकों और गैर-शिक्षण कर्मचारियों की नियुक्ति को रद्द करने के आदेश पर रोक लगाने से इनकार कर दिया।

उच्चतम न्यायालय नियुक्तियां रद्द करने के उच्च न्यायालय के आदेश के खिलाफ पश्चिम बंगाल सरकार की याचिका पर सुनवाई कर रहा था। प्रधान न्यायाधीश डी.वाई. चंद्रचूड़, न्यायमूर्ति जे.बी. पारदीवाला और न्यायमूर्ति मनोज मिश्रा की पीठ ने नियुक्तियां रद्द करने के फैसले पर रोक लगाने से इनकार करते हुए कहा कि वह मामले पर छह मई को सुनवाई करेगी। यह देखते हुए कि लगभग 25,000 लोगों की नौकरियां छीनना एक गंभीर मामला है, शीर्ष अदालत ने पूछा कि क्या उपलब्ध सामग्री के आधार पर वैध और अवैध नियुक्तियों को अलग करना संभव है और यह पता लगाना संभव है कि धोखाधड़ी से नौकरी पाने के लाभार्थी कौन हैं? पीठ ने कहा, हम उस निर्देश पर रोक लगाएंगे जिसमें कहा गया है कि सीबीआई राज्य सरकार के अधिकारियों के खिलाफ आगे की जांच करेगी। कलकत्ता उच्च न्यायालय ने कहा था कि सीबीआई अवैध नियुक्तियों को समायोजित करने के लिए अतिरिक्त पद के सृजन को मंजूरी देने में शामिल राज्य सरकार के अधिकारियों की भूमिका के संबंध में आगे की जांच करेगी। उच्च न्यायालय ने कहा था कि यदि आवश्यक हुआ तो सीबीआई इसमें शामिल ऐसे लोगों को हिरासत में लेकर पूछताछ करेगी। आदेश को चुनौती देते हुए राज्य सरकार ने उच्चतम न्यायालय के समक्ष दायर अपनी अपील में कहा कि उच्च न्यायालय ने नियुक्तियों को मनमाने ढंग से रद्द कर दिया। याचिका में कहा गया, उच्च न्यायालय पूरी चयन प्रक्रिया को रद्द करने से पड़ने वाले प्रभाव को समझने में विफल रहा, जिसके परिणामस्वरूप शिक्षक और गैर-शिक्षण कर्मचारियों को तत्काल प्रभाव से सेवा से बर्खास्त कर दिया गया। याचिकाकर्ता (राज्य) को ऐसी आपात स्थिति से निपटने के लिए पर्याप्त समय दिए बिना शिक्षा प्रणाली को ठप कर दिया गया। कलकत्ता उच्च न्यायालय ने पिछले सप्ताह चयन प्रक्रिया को अमान्य घोषित कर दिया और सीबीआई को नियुक्ति प्रक्रिया की जांच करने का निर्देश दिया। इसने केंद्रीय एजेंसी को तीन महीने के भीतर एक रिपोर्ट सौंपने का भी निर्देश दिया था।

निजी व्यक्तियों के हितों की रक्षा के लिए सरकार याचिका लेकर क्यों आई : न्यायालय ने पूछा

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने सोमवार को सवाल किया कि संदेशखालि मामले में कुछ निजी व्यक्तियों के हितों की रक्षा के लिए पश्चिम बंगाल सरकार याचिकाकर्ता बनकर उसके समक्ष क्यों आई है। कलकत्ता उच्च न्यायालय ने संदेशखालि में महिलाओं के खिलाफ अपराध किए जाने और जमीन हड़पने के आरोपों की जांच केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) से कराए जाने का 10 अप्रैल को निर्देश दिया था जिसके खिलाफ राज्य सरकार ने शीर्ष अदालत में याचिका दायर की। उच्चतम न्यायालय ने इसी याचिका पर सुनवाई के दौरान यह टिप्पणी की। न्यायमूर्ति बी आर गवई और न्यायमूर्ति संदीप मेहता की पीठ ने कहा, राज्य सरकार को कुछ निजी व्यक्तियों के हितों की रक्षा के लिए याचिकाकर्ता के रूप में क्यों आना चाहिए? पश्चिम बंगाल सरकार की ओर से पेश वकील ने कहा कि वह उच्च न्यायालय के आदेश में की गईं कुछ टिप्पणियों से व्यथित हैं। वकील ने कहा, इसमें राज्य सरकार के बारे में टिप्पणियां की गई हैं जो अनुचित हैं क्योंकि राज्य सरकार ने पूरी कार्वाई की है। पीठ ने कहा कि अगर राज्य सरकार इससे व्यथित है तो वह उच्च न्यायालय जा सकती है और टिप्पणियों को हटाने का अनुरोध कर सकती है। वकील ने कहा, मैं (राज्य सरकार) व्यथित हूं, इसलिए मैं आपके समक्ष हूं। राज्य सरकार की ओर से पेश वरिष्ठ अधिवक्ता अभिषेक सिंघवी ने सुनवाई की शुरुआत में कहा कि मामले की सुनवाई कुछ हफ्तों के बाद की जा सकती है क्योंकि उनके पास कुछ बहुत महत्वपूर्ण जानकारी है जिसे वे दाखिल करना चाहते हैं। सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने पीठ से अनुरोध किया कि इस याचिका के लंबित रहने का कहीं भी उपयोग नहीं किया जाए। पीठ ने मामले को जुलाई में सुनवाई के लिए सूचीबद्ध कर दिया और स्पष्ट किया कि इस याचिका के लंबित होने का उपयोग किसी भी उद्देश्य के लिए आधार के रूप में नहीं किया जाएगा। इसने कहा, जुलाई के बाद माहौल अनुकूल होगा। राज्य सरकार ने शीर्ष अदालत के समक्ष अपनी याचिका में कहा है कि उच्च न्यायालय के 10 अप्रैल 2024 के आदेश ने पुलिस बल सहित पूरे राज्य तंत्र को हतोत्साहित किया है। सीबीआई संदेशखालि में प्रवर्तन निदेशालय के अधिकारियों पर हमले के मामले की जांच पहले से ही कर रही है और एजेंसी ने पांच जनवरी की घटनाओं से संबंधित तीन प्राथमिकी दर्ज की हैं।

सड़क दुर्घटना में नौ लोगों की मौत 22 अन्य घायल

बेमेतरा। छत्तीसगढ़ के बेमेतरा जिले में सड़क दुर्घटना में छह महिलाओं और तीन बच्चों की मौत हो गई तथा 22 अन्य लोग घायल हो गए हैं। पुलिस अधिकारियों ने सोमवार को यह जानकारी दी।मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने हादसे पर दुख व्यक्त किया और अधिकारियों को घायलों को बेहतर इलाज मुहैया कराने के निर्देश दिए। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि जिले के कठिया गांव के पास एक पिकअप वाहन रविवार रात एक अन्य मालवाहक वाहन से टकरा गया जिसके कारण घटनास्थल पर ही पांच महिलाओं और तीन बच्चों की मौत हो गई। एक अन्य महिला ने अस्पताल ले जाते समय रास्ते में दम तोड़ दिया। इस घटना में 22 अन्य लोग घायल हो गए। उन्होंने बताया कि पर्था गांव के लोग पिकअप वाहन में सवार होकर एक पारिवारिक कार्यक्रम में शामिल होने तिरैया गांव गए थे। रविवार रात जब वे लौट रहे थे तब पिकअप वाहन सड़क किनारे खड़े एक छोटे ट्रक से टकरा गया। अधिकारियों ने बताया कि इस हादसे में आठ लोगों की घटनास्थल पर ही मौत हो गई, जिनकी पहचान भूरी निषाद (50), नीरा साहू (55), गीता साहू (60), अग्निया साहू (60), खुशबू साहू (39), मधु साहू (पांच), रिकेश निषाद (छह) और ट्विंकल निषाद (छह) के रूप में की गई है। उन्होंने बताया कि इस दुर्घटना में 23 अन्य लोग घायल हो गए। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि दुर्घटना की जानकारी मिलने के बाद घटनास्थल के लिए पुलिस दल रवाना किया गया तथा शवों एवं घायलों को अस्पताल पहुंचाया गया। अधिकारियों ने बताया कि घायलों को दो अस्पतालों–बेमेतरा जिला अस्पताल और सिमगा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया गया।

यूसीसी से हिंदुओं को किसी भी तरह फायदा नहीं होगा: ममता

भाषा। जांगीपुर/भगवानगोला (पश्चिम बंगाल

पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने सोमवार को कहा कि भाजपा चुनाव से पहले समान नागरिक संहिता (यूसीसी) को एक राजनीतिक चाल के रूप में इस्तेमाल कर रही है तथा इससे हिंदुओं को कोई फायदा नहीं होगा। मुर्शिदाबाद जिले के अल्पसंख्यक बहुल मुर्शिदाबाद और जंगीपुर निर्वाचन क्षेत्रों में रैलियों को संबोधित करते हुए बनर्जी ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) चुनाव के शुरुआती चरणों में हार का एहसास होने के बाद विभाजनकारी रणनीति का सहारा ले रही है। उन्होंने कहा, जब भी चुनाव होते हैं, वे सांप्रदायिक तनाव भड़काने के लिए किसी न किसी मुद्दे का इस्तेमाल करते हैं। इस बार वे यूसीसी के बारे में बात कर रहे हैं और प्रचार कर रहे हैं कि यह एक विशेष समुदाय के खिलाफ है। लेकिन यह यूसीसी राजनीतिक बयानबाजी के अलावा कुछ नहीं है तथा इससे हिंदुओं को किसी भी तरह से फायदा नहीं होगा। बनर्जी ने कहा कि देश भर में भाजपा विरोधी भावना बढ़ रही है जो विशेष रूप से पहले दो चरणों के मतदान के बाद स्पष्ट हो गई है। उन्होंने कहा, "पहले दो चरणों में मतदान के पैटर्न और प्रतिशत को देखने के बाद, हम विश्वास के साथ कह सकते हैं कि भाजपा हार गई है। शेष पांच चरणों में भी, उसे हार का सामना करना पड़ेगा। भाजपा में भय और घबराहट व्याप्त है। तृणमूल कांग्रेस की प्रमुख ने बंगाल में भाजपा नेताओं पर राज्य में लगभग 26,000 स्कूली शिक्षकों की नौकरियों को रद्द करने में शामिल होने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा, अगर किसी ने गलती की है तो उसे सुधारा जा सकता है, लेकिन 26 हजार नौकरियां छीनना अस्वीकार्य है। यह भाजपा की चाल है। उस भाजपा को वोट न दें जिसने आपकी नौकरियां छीन लीं। कलकत्ता उच्च न्यायालय ने पश्चिम बंगाल सरकार के और उससे सहायता प्राप्त स्कूलों में राज्यस्तरीय चयन परीक्षा-2016 (एसएलएसटी) की भर्ती प्रक्रिया को "अवैध घोषित कर दिया था और इसके जरिए हुई सभी नियुक्तियों को रद्द करने का आदेश दिया था। बनर्जी ने कहा कि देश में आजादी के बाद सर्वाधिक बेरोजगारी दर होने के बावजूद भाजपा नेता "नौकरियां छीन रहे हैं। उन्होंने कहा, हम नौकरियां दे रहे हैं, 10 लाख से ज्यादा नौकरियां तैयार हैं। भाजपा को जुमला पार्टी करार देते हुए तृणमूल कांग्रेस प्रमुख ने भाजपा पर नागरिकता संशोधन कानून (सीएए) के संबंध में "झूठ फैलाने" का आरोप लगाया। बनर्जी ने कहा, सीएए वैध नागरिकों को विदेशी बनाने का एक जाल है। एक बार जब आप सीएए लागू करते हैं, तो फिर एनआरसी होगी। हम पश्चिम बंगाल में न तो सीएए और न ही एनआरसी की अनुमति देंगे। वे चाहते थे कि एनआरसी लागू हो, लेकिन मैंने ऐसा नहीं होने दिया। उन्होंने विपक्षी दलों के गठबंधन इंडिया के घटकों–कांग्रेस और मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (माकपा) पर आरोप लगाया कि उन्होंने पश्चिम बंगाल में भाजपा से हाथ मिला लिया है। मुख्यमंत्री ने दावा किया कि राज्य में विपक्षी मोर्चे का अस्तित्व खत्म हो गया है। बनर्जी ने कहा, "पश्चिम बंगाल में कोई इंडिया गठबंधन नहीं है। यहां, माकपा और कांग्रेस भाजपा के लिए काम कर रही हैं। उन्होंने मतदाताओं को कांग्रेस और माकपा का समर्थन करने के खिलाफ चेतावनी दी तथा दोनों दलों को बंगाल में "भाजपा का एजेंट" करार दिया। बनर्जी ने कहा, पश्चिम बंगाल में माकपा और कांग्रेस भाजपा की दो आंखें हैं। अगर आप उन्हें वोट दे रहे हैं तो आप भाजपा को वोट दे रहे हैं। माकपा और कांग्रेस अल्पसंख्यक बहुल सीट पर चुनाव लड़ रहे हैं ताकि वे तृणमूल कांग्रेस के वोट काटकर भाजपा की मदद कर सकें। पश्चिम बंगाल में अल्पसंख्यकों का प्रभाव 12-15 लोकसभा सीट पर है। उनकी आबादी करीब 30 प्रतिशत है।

मप्र में आरक्षण और मुस्लिम तुष्टिकरण को लेकर कांग्रेस तथा भाजपा में तीखी नोकझोंक

भोपाल। लोकसभा चुनाव के तीसरे चरण के लिए सात मई को होने वाले मतदान से पहले मध्यप्रदेश में सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी और विपक्षी कांग्रेस के बीच अन्य पिछड़ा वर्ग के आरक्षण को लेकर सोमवार को जुबानी जंग छिड़ गई। भाजपा ने दावा किया कि कांग्रेस दलित, आदिवासी एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के लिए निर्धारित आरक्षण का कुछ हिस्सा मुसलमानों को देना चाहती है। इस पर विपक्षी दल ने पलटवार करते हुए कहा कि सत्तारूढ़ दल सत्ता बरकरार रखने के बाद संविधान को बदल देगा और आरक्षण की व्यवस्था समाप्त कर देगा। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता कमलनाथ ने सोमवार को एक्स पर कहा, भाजपा का चरित्र हमेशा ही आरक्षण विरोधी रहा है। मध्यप्रदेश में मेरे मुख्यमंत्री रहते हुए ओबीसी को 27 फीसदी आरक्षण दिया गया था। लेकिन लोकतांत्रिक ढंग से चुनी हुई सरकार को गिराकर बनी भाजपा सरकार ने षड्यंत्र पूर्वक मप्र मध्यप्रदेश में मेरे मुख्यमंत्री रहते हुए ओबीसी को 27 फीसदी आरक्षण दिया गया था। लेकिन लोकतांत्रिक ढंग से चुनी हुई सरकार को गिराकर बनी भाजपा सरकार ने षड्यंत्र पूर्वक मप्र में ओबीसी को दिए गए 27 प्रतिशत आरक्षण को समाप्त कर दिया। कमलनाथ ने कहा कि भाजपा इस मुद्दे पर कांग्रेस के खिलाफ निराधार आरोप लगा रही है, जिसने आजादी के बाद आरक्षण व्यवस्था शुरू की और समय-समय पर वंचित समुदायों के लिए इसका दायरा बढ़ाया। मप्र कांग्रेस प्रमुख जीतू पटवारी ने भी एक वीडियो जारी किया जिसमें उन्होंने भाजपा पर संविधान को बदलने और कोटा खत्म करने का आरोप लगाया। मध्यप्रदेश सरकार के मंत्री प्रहलाद पटेल ने भी दावा किया कि कांग्रेस दलितों, आदिवासियों और पिछड़े वर्गों के आरक्षण का हिस्सा मुसलमानों को देना चाहती है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस की मंशा मुस्लिम तुष्टीकरण है और बहुसंख्यक समुदाय के प्रति उसका विरोध जनता के सामने स्पष्ट हो चुका है।

जहरीली शराब त्रासदी मामले में चार दोषी, 10 बरी

मुंबई। मुंबई की एक सत्र अदालत ने 2015 के जहरीली शराब त्रासदी मामले में सोमवार को चार आरोपियों को दोषी ठहराया और 10 अन्य को बरी कर दिया। इस घटना में यहां के मालवणी इलाके मे 100 से अधिक लोगों की मौत हो गई थी। अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश स्वप्निल तौशिकर ने आरोपी राजू तपकर, डोनाल्ड पटेल, फ्रांसिस डिमेलो और मंसूर खान को दोषी पाया। आरोपियों को आपराधिक साजिश और गैर इरादतन हत्या समेत भारतीय दंड संहिता और बंबई निषेध अधिनियम के प्रासंगिक प्रावधानों के तहत दोषी पाया गया। अदालत छह मई को सजा पर अभियोजन और बचाव पक्ष की दलीलें सुनेगी। अभियोजन ने दलील दी कि सभी आरोपी व्यक्ति आपराधिक साजिश का हिस्सा थे लेकिन अदालत ने कहा कि 240 गवाहों की गवाही इसकी स्पष्ट कड़ी नहीं जोड़ सकी। जून 2015 में पश्चिमी उपनगर मलाड के मालवणी में लक्ष्मी नगर झुग्गी बस्ती मे जहरीली शराब पीने से 106 लोगों की मौत हो गई थी जबकि 75 लोगों की आंखों की रोशनी चली गई थी। आरोपियों को दिल्ली, मध्य प्रदेश और गुजरात से गिरफ्तार किया गया था।

सत्ता में आने पर कांग्रेस जाति और आर्थिक सर्वेक्षण कराएगी : राहुल

पाटण (गुजरात)। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने सोमवार को कहा कि अगर उनकी पार्टी सत्ता में आती है तो वह दलितों, आदिवासियों, सामान्य श्रेणी के गरीबों तथा ओबीसी की भागीदारी बढ़ाने के लिए प्राथमिकता के आधार पर पूरे देश में जाति और आर्थिक सर्वेक्षण कराएगी। उत्तर गुजरात के पाटण शहर में पार्टी के लोकसभा उम्मीदवार चंदनजी ठाकोर के समर्थन में एक चुनावी रैली को संबोधित करते हुए राहुल ने यह भी कहा कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) और राष्ट्रीय स्वयंसेवक सघ (आरएसएस) की सत्ता में आने के बाद संविधान को बदलने की योजना है। उन्होंने कहा, देश की 90 प्रतिशत आबादी अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अन्य पिछड़ा वर्ग समुदायों की है लेकिन आपको कॉरपोरेट, मीडिया (क्षेत्रों), निजी अस्पतालों, निजी विश्वविद्यालयों या सरकार की नौकरशाही में उनका प्रतिनिधित्व नहीं मिलेगा। हम सत्ता में आने के बाद सबसे पहले जाति और आर्थिक सर्वेक्षण कराएंगे। उन्होंने कहा कि इन समुदाय के लोग किसान, मजदूर, छोटे व्यापारियों के रूप में काम कर रहे हैं या बिल्कुल बेरोजगार हैं। उन्होंने कहा कि केंद्र में मामलों के शीर्ष पर भारतीय प्रशासनिक सेवा के 90 अधिकारियों में से केवल तीन पिछड़े वर्गों से हैं और उन्हें भी महत्वहीन पद दिए गए हैं। देश में 10 साल के अपने शासन के दौरान संपत्ति में असमानता लाने के बारे में भाजपा पर आरोप लगाते हुए राहुल गांधी ने कहा कि केवल 22 व्यक्तियों के पास 70 प्रतिशत आबादी जितनी संपत्ति है। उन्होंने कहा, हमारा समाधान यह है कि कांग्रेस सत्ता में आने के बाद सबसे पहले दलित, ओबीसी, आदिवासियों के साथ-साथ सामान्य वर्ग के गरीबों की सही आबादी का पता लगाने के लिए जाति जनगणना और आर्थिक सर्वेक्षण कराएगी। फिर मीडिया, सरकारी क्षेत्रों, निजी कॉलेजों और विश्वविद्यालयों आदि में उनकी भागीदारी और वित्तीय स्थिति का पता लगाने के लिए एक सर्वेक्षण कराया जाएगा। उन्होंने दावा किया कि इस कवायद के बाद भारत को जनसंख्या में सभी के अनुपात, उनकी भागीदारी का विवरण, उनके पास संपत्ति और वे जिन संस्थानों में काम कर रहे हैं, उनका उचित अंदाजा हो जाएगा। आरएसएस और भाजपा पर निशाना साधते हुए उन्होंने कहा कि सत्तारूढ़ गठबंधन आरक्षण की व्यवस्था के खिलाफ है और वह संविधान भी बदलना चाहता है जो लोगों को शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल, पानी जैसी सुविधाओं के साथ ही उन्हें मिले अधिकारों का आधार है। राहुल ने कहा, भाजपा नेता कह रहे हैं कि वे संविधान बदल देंगे जो गरीबों और वंचितों की रक्षा करता है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी चाहते हैं कि केवल 22-25 लोगों का संपत्ति, ऊर्जा और प्राकृतिक संसाधनों पर नियंत्रण हो। उनके 10 साल के शासन में यह सब कुछ हुआ है।

पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा, उन्होंने उन 22-25 लोगों का 16 लाख करोड़ रुपए का कर्ज माफ कर दिया लेकिन किसानों द्वारा लिए कर्ज को माफ करने से इनकार कर दिया। भारत में महज एक प्रतिशत आबादी 40 प्रतिशत संपत्ति को नियंत्रित करती है।

एएसआई को भोजशाला का सर्वेक्षण पूरा करने के लिए आठ हफ्तों की मोहलत

इंदौर। मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय ने भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) को धार के भोजशाला-कमाल मौला मस्जिद परिसर का जारी सर्वेक्षण पूरा करने के लिए सोमवार को आठ हफ्तों की मोहलत दे दी। उच्च न्यायालय की इंदौर पीठ के न्यायमूर्ति एसए धर्माधिकारी और न्यायमूर्ति गजेंद्र सिंह ने एएसआई की अर्जी मंजूर करते हुए यह मोहलत दी। युगल पीठ ने सभी संबंधित पक्षों की दलीलों पर गौर के बाद एएसआई को आदेश दिया कि वह विवादित परिसर के सर्वेक्षण की संपूर्ण रिपोर्ट दो जुलाई तक पेश करे। उच्च न्यायालय ने स्पष्ट किया कि एएसआई को सर्वेक्षण पूरा करने के लिए और वक्त नहीं दिया जाएगा। अदालत ने मामले की अगली सुनवाई के लिए चार जुलाई की अगली तारीख तय की है। एएसआई, भोजशाला-कमाल मौला मस्जिद परिसर में महीने भर से ज्यादा वक्त से सर्वेक्षण में जुटा है। उसने यह कवायद पूरी करने की मोहलत के वास्ते उच्च न्यायालय में दायर अर्जी में कहा कि इस परिसर की संरचनाओं के उजागर भागों की प्रकृति को समझने के लिए उसे कुछ और समय की दरकार है। उधर, मुस्लिम पक्ष की मौलाना कमालुद्दीन वेलफेयर सोसायटी की ओर से एएसआई की इस गुहार पर अदालत में आपत्ति जताई गई। सोसायटी ने दावा किया कि एएसआई विवादित परिसर में इस तरह खुदाई कर रहा है जिससे शीर्ष न्यायालय के दिशा-निर्देशों का उल्लंघन हो रहा है। उच्च न्यायालय ने तथ्यों पर गौर के बाद सोसायटी की इस आपत्ति को खारिज कर दिया और कहा कि अगर ऐसा कोई उल्लंघन हो रहा है, तो संबंधित प्रतिवादी उचित फोरम का रुख करने के लिए स्वतंत्र है। भोजशाला को हिंदू समुदाय वाग्देवी (देवी सरस्वती) का मंदिर मानता है, जबकि मुस्लिम पक्ष 11वीं सदी के इस स्मारक को कमाल मौला मस्जिद बताता है। यह परिसर एएसआई द्वारा संरक्षित है। हिंदू फ्रंट फॉर जस्टिस" की अर्जी पर मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय ने 11 मार्च को एएसआई को छह सप्ताह के भीतर भोजशाला-कमाल मौला मस्जिद परिसर का वैज्ञानिक सर्वेक्षण करने का आदेश दिया था। इसके बाद एएसआई ने 22 मार्च से इस विवादित परिसर का सर्वेक्षण शुरू किया था जो लगातार जारी है। भोजशाला को लेकर विवाद शुरू होने के बाद एएसआई ने सात अप्रैल 2003 को एक आदेश जारी किया था। इस आदेश के अनुसार पिछले 21 साल से चली आ रही व्यवस्था के मुताबिक हिंदुओं को प्रत्एक मंगलवार भोजशाला में पूजा करने की अनुमति है, जबकि मुस्लिमों को हर शुक्रवार इस जगह नमाज अदा करने की इजाजत दी गई है।हिंदू फ्रंट फॉर जस्टिस ने अपनी याचिका में इस व्यवस्था को चुनौती दी है।

पेज 1 का शेष

शाह.........

दिल्ली पुलिस ने मामला आईपीसी और आईटी एक्ट की विभिन्न धाराओं के तहत दर्ज किया गया है। इसमें धारा 153 (दंगा भड़काने के इरादे से जानबूझकर उकसाना), 153ए (धर्म, जाति, जन्म स्थान, निवास, भाषा आदि के आधार पर विभिन्न समूहों के बीच दुश्मनी को बढ़ावा देना), 465 (जालसाजी) के तहत एफआईआर दर्ज की थी।), भारतीय दंड संहिता (आईपीसी) की धारा 469 (किसी भी पार्टी की प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचाने के लिए जालसाजी), और 171 जी (चुनाव के परिणाम को प्रभावित करने के इरादे से गलत बयान प्रकाशित करना) और सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम की धारा 66 सी शामिल हैं। एफआईआर के अनुसार गृह मंत्रालय ने अपनी शिकायत में कहा कि यह पाया गया है कि कुछ छेड़छाड़ किए गए वीडियो फेसबुक और एक्स के उपयोगकर्ताओं द्वारा प्रसारित किए जा रहे हैं। ऐसा लगता है कि वीडियो छेड़छाड़ की गई है, समुदायों के बीच वैमनस्य पैदा करने के इरादे से भ्रामक जानकारी फैलाई जा रही है। जिससे सार्वजनिक शांति और सार्वजनिक व्यवस्था के मुद्दों पर असर पड़ने की संभावना है, कृपया कानून के प्रावधानों के अनुसार आवश्यक कानूनी कार्रवाई करने का अनुरोध किया जाता है।

देश में...

करते हुए मोदी ने कहा, इसलिए वे महसूस करते हैं कि चूंकि एससी, एसटी और ओबीसी भाजपा के साथ हैं...तो अल्पसंख्यकों का विश्वास जीतने के लिए वे एससी, एसटी और ओबीसी से लूटकर अल्पसंख्यकों को देना चाहते हैं। क्या आप ऐसा होने देंगे? उन्होंने कहा, मैं आज अपने दलित, आदिवासी और ओबीसी भाई-बहनों को यह गारंटी देना चाहता हूं। मैं कांग्रेस के ऐसे इरादों को सफल नहीं होने दूंगा। आपके अधिकारों, आपके आरक्षण की रक्षा के लिए मोदी किसी भी हद तक जाएगा। मैं आपको इसका आश्वासन दे रहा हूं। सोशल मीडिया के विभिन्न मंचों पर आने वाली कुछ सूचनाओं को बिना पुष्टि किए फॉरवर्ड करने की लोगों की आदत का हवाला देते हुए मोदी ने आरोप लगाया कि जो लोग चुनाव हार गए हैं वे फर्जी वीडियो बनाने के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग कर रहे हैं। उन्होंने कहा, कृत्रिम मेधा (एआई) का दुरुपयोग करते हुए वे सोशल मीडिया में मेरी आवाज में गलत बातें डालते हैं - यह एक बड़ा खतरा पैदा कर रहा है। उन्होंने लोगों से अपील की कि वे पुलिस या भाजपा को ऐसे फर्जी वीडियो के बारे में सूचित करें और उसके बाद कानूनी कार्रवाई की जाएगी। प्रधानमंत्री ने कहा कि इस देश का कानून लोगों को किसी के साथ इस तरह के खेल खेलने की अनुमति नहीं देगा। देश के निर्दोष लोगों की हत्या का प्रयास करने वालों को चेतावनी देते हुए मोदी ने कहा, यह नया भारत है, घर में घुसकर मारेगा। यह दावा करते हुए कि मोदी पीछे से हमला करने में विश्वास नहीं करता है बल्कि और खुले तौर पर आमने-सामने लड़ने में यकीन रखता है, प्रधानमंत्री ने कहा कि उन्होंने बालाकोट हवाई हमलों के बारे में जानकारी किसी से नहीं छिपाई और हमलों के बाद दुश्मनों को हुए नुकसान के बारे में देश को जानकारी दी। उन्होंने कहा, मैंने सुरक्षा बलों से कहा था कि वे मीडिया को बुलाकर इसकी सूचना दें। मैंने कहा था कि मैं टेलीफोन के माध्यम से पाकिस्तान को रात में हवाई हमले और उससे हुई तबाही के बारे में सूचित करूंगा, लेकिन पाकिस्तान के लोग फोन पर नहीं आए। इसलिए मैंने सुरक्षा बलों से इंतजार करने को कहा और उन्हें सूचित करने के बाद हमने रात के दौरान हुए हवाई हमलों के बारे में दुनिया के सामने खुलासा किया। उन्होंने कहा कि मोदी न तो चीजों को छिपाता है और न ही छिप कर वार करता है और वह जो करता है, खुलकर करता है।

इंदौर में...

इस बीच, बम के पत्रकार कॉलोनी स्थित घर के बाहर बैरिकेड लगाकर पुलिस तैनात कर दी गई है। बम के नामांकन वापस लेने के बाद इंदौर की शहर कांग्रेस इकाई के कार्यवाहक अध्यक्ष देवेंद्र यादव ने पार्टी संगठन पर खुलकर नाराजगी जताई। यादव ने कहा, मैंने खुद इंदौर से चुनाव लड़ने के लिए टिकट मांगा था, लेकिन मेरी और मेरे जैसे कांग्रेस के कई जमीनी कार्यकर्ताओं की अनदेखी करके बम की धन की ताकत देखकर उन्हें टिकट दिया गया। उन्होंने कहा कि उन्हें पहले ही आशंका थी कि बम ऐन वक्त पर नामांकन वापस ले सकते हैं। गौरतलब है कि इंदौर कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी का गृह क्षेत्र भी है। भाजपा का मजबूत गढ़ कहे जाने इंदौर में कांग्रेस ने एकदम नए-नवेले चेहरे बम (45) को अपना उम्मीदवार बनाया था। बम पेशे से कारोबारी हैं और उनका परिवार शहर में निजी महाविद्यालयों का संचालन करता है। बम ने अपने राजनीतिक कॅरियर में अब तक एक भी चुनाव नहीं लड़ा है। कांग्रेस ने उन्हें इंदौर से ऐसे वक्त उम्मीदवारी का मौका दिया था, जब जिले में कांग्रेस के तीन पूर्व विधायकों समेत पार्टी के सैकड़ों कार्यकर्ता लोकसभा चुनावों से पहले पाला बदलकर भाजपा में शामिल हो चुके हैं। इंदौर सीट पर मुख्य मुकाबला भाजपा के निवर्तमान सांसद शंकर लालवानी (62) और बम के बीच होना माना जा रहा था। मतदाताओं की तादाद के लिहाज से प्रदेश में सबसे बड़े इंदौर लोकसभा क्षेत्र में 25.13 लाख लोगों को मताधिकार हासिल है जहां भाजपा ने इस बार आठ लाख मतों के अंतर से जीत का नारा दिया है।

खालिस्तानी नारे..

ऐसा ही एक उदाहरण तब भी हुआ जब कनाडा के आधिकारिक विपक्ष के नेता पियरे पोइलिवरे कार्यक्रम में एकत्र लोगों को अपना संबोधन शुरू करने के लिए मंच पर आए।

गौड़ा के..

इस मुद्दे के पीछे राजनीति है, उन्होंने कहा कि उनके बेटे प्रज्वल जब भी कहा जाएगा जांच में शामिल होंगा। प्रज्वल हासन लोकसभा क्षेत्र से एनडीए के उम्मीदवार हैं, जहां 26 अप्रैल को मतदान हुआ था। प्रज्वल के ठिकाने के बारे में रेवन्ना ने कहा, सामान्यत: उसे जाना था (बिना बताए कि कहां) और वह चला गया। क्या उसे पता था कि वे एफआईआर दर्ज करेंगे और एसआईटी का गठन करेंगे? जांच के लिए बुलाए जाने पर वह आएगा। राज्य के पूर्व सीएम एचडी कुमारस्वामी ने कहा कि पार्टी ने प्रज्वल रेवन्ना को निलंबित करने का फैसला किया है। इस मुद्दे पर प्रतिक्रिया मांगने के लिए सत्तारूढ़ कांग्रेस के हमलों के बीच, जद (एस) नेता ने जद (एस) के गठबंधन सहयोगी भाजपा और प्रधानमंत्री को मामले से दूर रखने की भी मांग की। कांग्रेस नेता प्रियंका गांधी ने पूछा कि क्या प्रधानमंत्री इस मामले पर चुप रहेंगे। उन्होंने कहा, जिस नेता के कंधे पर हाथ रखकर पीएम फोटो खिंचवाते हैं, जिस नेता के लिए खुद पीएम ने 10 दिन पहले प्रचार किया था मंच पर उसकी तारीफ की। आज कर्नाटक का वो नेता देश से फरार है। बस उसके बारे में सुन रही हूं, जो जघन्य अपराध हुआ वह दिल दहला देने वाला है। इससे सैकड़ों महिलाओं की जिंदगी बर्बाद हो गई, क्या आप अब भी चुप रहेंगे? कांग्रेस के मीडिया और प्रचार विभाग के प्रमुख पवन खेड़ा ने पिछले साल 8 दिसंबर को बीजेपी नेता देवराज गौड़ा द्वारा कर्नाटक बीजेपी अध्यक्ष को लिखा गया एक पत्र सोशल मीडिया पर शेयर किया। उन्होंने कहा कि पत्र में 'प्रज्वल रेवन्ना के अश्लील वीडियो' से भरी एक पेन ड्राइव की मौजूदगी का खुलासा हुआ है। तृणमूल कांग्रेस नेता सुष्मिता देव ने बीजेपी की आलोचना की और आरोपियों का समर्थन करने के लिए आलोचना की। उन्होंने कहा कि जो मामला सामने आया है वह शीर्ष तक जाता है। उन्होंने कहा कि जिस तरह का यौन शोषण सामने आया है, उसमें भाजपा भी पूरी तरह से शामिल है। हाल के दिनों में कथित तौर पर कई महिलाओं के साथ रेवन्ना के कई सेक्स वीडियो प्रसारित हो रहे हैं। पुलिस सूत्रों के मुताबिक, रेवन्ना देश छोड़कर भाग गए हैं।

जू के....

कपड़े, तिरपाल या पेड़ों के साथ बाड़ों में सुधार करें और सुरक्षित गहराई सुनिश्चित करते हुए जानवरों के लिए उथले तालाब उपलब्ध कराएं। वेंटिलेशन के लिए पंखों की सिफारिश की गई है, लेकिन जानवरों की प्राकृतिक ठंडक बनाए रखने के लिए उन पर सीधे हवा देने से बचना चाहिए। जानवरों के लिए ठंडे आश्रय स्थल जैसे बिल, गुफाएं, या मिट्टी जैसे नमीयुक्त सब्सट्रेट वाले घोंसले के बक्से प्रदान किए जाने चाहिए। परिपत्र के अनुसार, बर्फ में फल या सब्जियों के साथ जमे हुए व्यंजन प्रदान करें। सुबह या शाम जैसे ठंडे समय में जानवरों को खिलाएं। गर्मी के दौरान फल और सब्जियों जैसे आसानी से पचने योग्य, उच्च नमी वाले खाद्य पदार्थ प्रदान करें। अधिकारियों को तनाव को कम करने के लिए लू के दौरान जानवरों के अंतर-चिड़ियाघर स्थानांतरण से बचने का भी निर्देश दिया गया है। गर्मी के तनाव के संकेतों को पहचानने और किसी भी मुद्दे पर तुरंत प्रतिक्रिया देने के लिए कर्मचारियों को प्रशिक्षण देना महत्वपूर्ण है। जानवरों को एयर कंडीशनिंग के लिए बाड़े अंदर रखने के अलावा पूल के बर्फ डालने और अन्य ठंडी चीजों की व्यवस्था करने को कहा गया है जिससे कि जानवरों के शरीर का तापमान न बढ़े।

देश को मजबूर नहीं, मजबूत नेतृत्व चाहिए : शाह

भाषा। मधुबनी, बेगूसराय(बिहार)

केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह ने विपक्षी गठबंधन इंडिया गठबंधन के पास अगले पांच सालों के लिए प्रधानमंत्री पद का कोई एक चेहरा नहीं होने का आरोप लगाते हुए सोमवार को कहा कि देश को मजबूर नहीं, मजबूत नेतृत्व चाहिए।बिहार के झंझारपुर और बेगूसराय संसदीय क्षेत्र में राजग उम्मीदवारों रामप्रीत मंडल (मौजूदा जदयू सांसद) और केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह के पक्ष में अलग-अलग चुनावी सभाओं को संबोधित करते हुए शाह ने जनता से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को तीसरे कार्यकाल के लिए जनादेश दिए जाने की अपील की।उन्होंने कहा कि मधुबनी जिला अंतर्गत फुलपरास विधानसभा क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करने वाले पूर्व मुख्यमंत्री कर्पूरी ठाकुर का सम्मान कांग्रेस और राजद की सरकारों ने नहीं किया, पर देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने उन्हें भारत रत्न से सम्मानित करके बिहार के समस्त पिछड़े समाज को सम्मान प्रदान किया है। शाह ने कहा कि कर्पूरी ठाकुर ने पिछड़े समाज से आते हुए जो लोकप्रियता हासिल की वह आज भी कई लोगों की ईर्ष्या का कारण बनी हुई है।शाह ने कहा, गरीब घर से आने वाले कर्पूरी ठाकुर जी ने बिहार में गरीब, दलित और पिछड़ों की आवाज बुलंद की थी और गरीब चाय वाले के घर में जन्म लेने वाले मोदी जी भी देश भर के पिछड़ों, गरीबों, दलितों, आदिवासियों और वंचितों का कल्याण करने वाले नेता के रूप में उभरे हैं। उन्होंने मोदी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाने की वकालत करते हुए कहा कि इससे बिहार की राजनीति में जातिवाद समाप्त हो जाएगा और योग्यता के आधार पर राजनीति की शुरूआत होगी तथा बिहार एवं देश के अंदर से भ्रष्टाचार समाप्त हो जाएगा।

शाह ने कहा कि देश के खजाने की पाई-पाई, जिस पर गरीब का अधिकार है, वह गरीब को मिले इसके लिए नरेन्द्र मोदी जी का जीतना जरूरी है।उन्होंने कहा, आप सोचिए कि अगर यह घमंडिया इंडी गठबंधन जीतता है तो देश का प्रधानमंत्री कौन होगा, क्योंकि इनके पास तो ऐसा कोई नेता नहीं है। मुझे बताइए क्या लालू प्रसाद को देश का प्रधानमंत्री बना सकते हैं। क्या स्टालिन या ममता बनर्जी इस पद को संभाल सकते हैं। राहुल बाबा के बारे में क्या दूर-दूर तक भी सोच सकते हैं। अगर भगवान ना करें, इंडी गठबंधन की सरकार आई तो इन्होंने कहा था कि एक-एक साल हम प्रधानमंत्री पद बांट लेंगे। एक साल शरद पवार, एक साल लालू जी, एक साल ममता जी, एक साल स्टालिन, एक साल अरविंद केजरिवाल और कुछ समय बचेगा तो राहुल बाबा बनेंगे। देश इस तरह से चल सकता है क्या। शाह ने कहा कि जब देश पर कोरोना का संकट आया तो मजबूत नेतृत्व ने देश को संभालकर इससे बाहर निकाला।उन्होंने कहा कि देश पर आतंकवाद का साया था तो देश के मजबूत नेतृत्व, नरेन्द्र मोदी जी ने देश को इससे बाहर निकाला।गृह मंत्री ने कहा कि देश और बिहार में नक्सलवाद था तो इसे खत्म करने का काम मजबूत नेतृत्व ने किया और प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में ही जी-20 का आयोजन हुआ व पूरी दुनिया में भारत का सम्मान भी मजबूत नेतृत्व ने ही बढ़ाया।उन्होंने कहा, देश को मजबूर नेतृत्व नहीं चाहिए, देश को मजबूत नेतृत्व चाहिए। बेगूसराय में अपने संबोधन में शाह ने कहा, चारा चुराने वाली सरकार जाने के बाद नरेन्द्र मोदी जी और नीतीश कुमार की सरकार ने बिहार को आगे बढ़ाने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। उन्होंने कहा, बिहार, कम्युनिस्टों की कृपा से नक्सलवाद से पीड़ित था, सैकड़ों युवा मारे गए। मोदी जी ने पूरे बिहार और झारखंड को नक्सलवाद से मुक्त किया।

कांग्रेस ने सबसे अधिक बार संविधान में संशोधन किया, दलितों को गुमराह कर रही: भाजपा

भाषा। नई दिल्ली

दलितों और अन्य वंचित हिंदू समूहों को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार के खिलाफ गुमराह करने का आरोप लगाते हुए भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने सोमवार को दावा किया कांग्रेस और उसके सहयोगी दल मुसलमानों को धार्मिक आधार पर आरक्षण देने के लिए संविधान को बदलना चाहते हैं।

भाजपा सांसद बृजलाल ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी ने बार-बार दोहराया है कि भीमराव आंबेडकर द्वारा परिकल्पित संविधान को कोई भी बदल नहीं सकता है। अनुसूचित जाति समुदाय से आने वाले भारतीय पुलिस सेवा के पूर्व अधिकारी ने यहां संवाददाताओं को संबोधित करते कहा कि यह कांग्रेस ही है जिसने सबसे अधिक बार संविधान में संशोधन किया और 1975 में आपातकाल लगाने के लिए इसके प्रावधानों को भी निलंबित कर दिया। बृजलाल ने कहा कि कांग्रेस और उसके सहयोगी दल, खासकर दलितों को गुमराह करने के लिए यह विमर्श फैला रहे हैं कि भाजपा आरक्षण खत्म कर देगी। मौजूदा लोकसभा चुनाव के प्रचार के दौरान सत्ताधारी और विपक्षी गठबंधन इस मुद्दे पर एक-दूसरे पर निशाना साध रहे हैं। संसद द्वारा बाद में पारित तीन आपराधिक कानूनों की जांच करने वाली संसदीय समिति के अध्यक्ष बृजलाल ने पूर्व प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की टिप्पणियों का हवाला देते हुए दावा किया कि प्रथम प्रधानमंत्री आरक्षण के समर्थक नहीं थे। उन्होंने कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने तो तर्क दिया था कि यदि आवश्यक हो तो संविधान को बदला जा सकता है। उन्होंने कहा कि यह कांग्रेस ही है जिसने संविधान का उल्लंघन करते हुए अविभाजित आंध्र प्रदेश और कर्नाटक में धार्मिक आधार पर मुसलमानों को आरक्षण दिया। बृजलाल ने कहा कि केंद्र में तत्कालीन कांग्रेस सरकार द्वारा नियुक्त रंगनाथ मिश्रा आयोग ने दलितों के लिए आरक्षण के लाभों के लिए उन मुसलमानों को शामिल करने के पक्ष में बात की थी जो पहले अनुसूचित जाति में थे। उन्होंने कहा कि अनुच्छेद 370 के प्रावधानों को निरस्त करने का मोदी सरकार का निर्णय अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अन्य पिछड़ा वर्ग के लिए सबसे फायदेमंद रहा जबकि कांग्रेस ने इसे हटाने की बात की है।

बीरभूम से नामांकन खारिज होने के बाद कोर्ट पहुंचे पूर्व आईपीएस अधिकारी

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने सोमवार को कहा कि पूर्व आईपीएस अधिकारी देबाशीष धर की लोकसभा चुनाव के लिए उनका नामांकन पत्र निरस्त किए जाने को चुनौती देने वाली याचिका को सूचीबद्ध करने पर वह विचार करेगा। भारतीय पुलिस सेवा (आईपीएस) के पूर्व अधिकारी धर को भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने लोकसभा चुनाव में पश्चिम बंगाल के बीरभूम संसदीय क्षेत्र से अपना प्रत्याशी बनाया था। भारत के प्रधान न्यायाधीश डी वाई चंद्रचूड़ और न्यायमूर्ति जे बी पारदीवाला तथा न्यायमूर्ति मनोज मिश्रा की पीठ ने धर की ओर से पक्ष रख रहे वरिष्ठ अधिवक्ता निधीश गुप्ता की इन दलीलों पर संज्ञान लिया कि सोमवार नामांकन पत्र दाखिल करने की अंतिम तारीख है। जब वरिष्ठ वकील ने कहा कि याचिका पर आज ही सुनवाई करने की जरूरत है तो प्रधान न्यायाधीश ने कहा, मैं ईमेल (तत्काल सुनवाई के अनुरोध वाला) देखूंगा। भाजपा प्रत्याशी के रूप में धर का नामांकन पत्र इसलिए निरस्त कर दिया गया क्योंकि वह नो ड्यूज प्रमाणपत्र प्रस्तुत नही कर पाए थे।

आईडीएफसी का पीएटी सालाना 21 प्रतिशत बढ़ा

मुंबई। आईडीएफसी फर्स्ट बैंक के निदेशक मंडल की हाल ही में आयोजित बैठक में 31 मार्च 2024 को समाप्त तिमाही और वर्ष के लिए ऑडिट किए गए फाइनेंशियल रिजल्ट्स को मंजूरी दे दी गई। वी वैद्यनाथन मैनेजिंग डायरेक्टर और सीईओए आईडीएफसी फर्स्ट बैंक ने कहा मुझे यह बताते हुए बहुत खुशी हो रही है कि हमने बैंक में क्रेडिट सब्सटीट्यूट सहित कुल जमा और लाभ के 4,00,000 करोड़ रुपए के ऐतिहासिक आँकड़े को पार कर लिया है। हमारे लिए यह बात और भी महत्वपूर्ण है कि एसेट क्वालिटी लगातार बनाए रखी जा रही है, जो क्रमशः 1.88 प्रतिशत और 0.60 प्रतिशत के सर्वश्रेष्ठ जीएनपी और एनएनपीए के साथ हमारे इतिहास में सबसे कम है। उपरोक्त में सभी पुराने इंफ्रास्ट्रक्चर लोन्स को पूरी तरह से शामिल किया गया है। इंफ्रास्ट्रक्चर लोन्स को छोड़कर,जीएनपी, और एनएनपी, क्रमशः केवल 1.55 प्रतिशत और 0.42 प्रतिशत हैं।

मौसम आधारित फसल बीमा योजना लागू

नोएडा। भारत में निजी क्षेत्र की अग्रणी सामान्य बीमा कंपनी, एचडीएफसी इर्गो जनरल इंश्योरेंस को उत्तर प्रदेश सरकार ने खरीफ, 2024 के मौसम के लिए फिरोजाबाद, कन्नौज और कानपुर नगर में ऋण लेने और ऋण न लेने वाले किसानों के लिए रिस्ट्रक्चर्ड मौसम आधारित फसल बीमा योजना (आरडब्लूबीसीआईएस) लागू करने के लिए अधिकृत किया है। रिस्ट्रक्चर्ड मौसम आधारित फसल बीमा योजना (आरडब्लूबीसीआईएस) के तहत सभी उत्पाद हॉर्टिकल्चर एवं फार्म फॉरेस्ट्री विभाग, उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा अनुमोदित हैं। आरडब्लूबीसीआईएस के तहत मौसमी खतरों के कवर, जैसे बहुत ज्यादा/बहुत कम बारिश कवर, तापमान, लगातार ड्राई डे कवर, या सापेक्ष ह्यूमिडिटी कवर प्रदान किए जाते हैं, जिन्हें कृषि विभाग, उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा अधिसूचित किया गया है। अधिसूचित जिलों में योजना के तहत कवर की जाने वाली फसलें मिर्च और केला हैं।

मप्र कांग्रेस अध्यक्ष तस्वीरें साझा करने का मामला दर्ज

अलीराजपुर (मध्य प्रदेश)। मध्य प्रदेश में पुलिस ने सोमवार को प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी और पार्टी विधायक विक्रांत भूरिया के खिलाफ सामूहिक बलात्कार की शिकार 11 वर्षीय बच्ची के परिजनों की तस्वीरें सोशल मीडिया पर पोस्ट करके कथित तौर पर उनकी पहचान उजागर करने का मामला दर्ज किया। झाबुआ से विधायक भूरिया और पटवारी तथा उनके समर्थकों ने रविवार को जोबट पुलिस थाने के अंतर्गत आने वाले एक गांव में बलात्कार पीड़िता के परिजनों से मुलाकात की।

विकसित भारत का लक्ष्य पाने को स्थिर सरकार जरूरी : सीतारमण

भाषा। विशाखापत्तनम

केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने सोमवार को कहा कि वर्ष 2047 तक विकसित भारत बनाने के लक्ष्य को हासिल करने के लिए स्थिर सरकार जरूरी है। सीतारमण ने यहां गीतम यूनिवर्सिटी के छात्रों को संबोधित करते हुए कहा, हमारे प्रधानमंत्री ने लक्ष्य रखा है कि वर्ष 2047 तक हमें विकसित भारत का लक्ष्य हासिल करना है। उन्होंने कहा, इसके लिए हमें प्रयास करने होंगे, ताकि सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) बढ़े और सभी लोगों तक लाभ पहुंचे। जीडीपी वृद्धि अपने-आप नहीं होती है, इसके लिए सूक्ष्म एवं व्यापक स्तर और जमीनी स्तर पर प्रयासों की जरूरत होती है। सीतारमण ने कहा कि जीडीपी की रैंकिंग के साथ देश की छवि भी महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि प्रति व्यक्ति आय गणना के साथ ए सभी कारक भी मायने रखते हैं। उन्होंने कहा, जब तक जीडीपी नहीं बढ़ेगी, हम अर्थव्यवस्था की मांगों को पूरा नहीं कर पाएंगे। हमें निवेश एवं सेवाओं को बढ़ाने, शैक्षणिक संस्थानों और लोगों को घर खरीदने एवं कारोबार शुरू करने के लिए धन की जरूरत होती है। वित्त मंत्री ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय अर्थव्यवस्था की विकास की गति पर सवाल उठाने और भारत के तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बनने को एक अंकगणितीय अपरिहार्यता बताने के लिए पूर्व वित्त मंत्री पी चिदंबरम की आलोचना भी की। उन्होंने कहा कि शहरों से लेकर गांवों तक यूपीआई जिंदगी बदल रहा है और अब गरीब, ग्रामीण महिलाएं डिजिटल भुगतान पसंद करती हैं। उन्होंने कहा कि यह प्रगति आम लोगों की क्षमताओं के बारे में उठाए गए संदेह को खारिज करती है। सीतारमण ने कहा कि संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (संप्रग) शासन के दौरान भारत की अर्थव्यवस्था को बहुत नुकसान हुआ था लेकिन मौजूदा सरकार के समय यह शीर्ष पांच में पहुंच गई और अब यह आने वाले वर्षों में दुनिया की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की राह पर है। उन्होंने कहा कि ऐसी स्थिति में भारत के अपने-आप तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाने की बात करना देश के लिए मोदी सरकार द्वारा किए गए प्रयासों को कमजोर करने के अलावा कुछ नहीं है। सीतारमण ने कहा कि भारत सरकार ने अनुसंधान कोष के लिए लगभग एक लाख करोड़ रुपए आवंटित किए हैं और इस निवेश का उद्देश्य विभिन्न क्षेत्रों में भारत के अनुसंधान बजट के साथ देश में समावेशी विकास को बढ़ावा देना है।

भीषण गर्मी के बीच झारखंड सरकार ने 8वीं तक की कक्षाएं निलंबित कीं

भषा। रांची

झारखंड सरकार ने राज्यभर में भीषण गर्मी के मद्देनजर मंगलवार से आठवीं तक की कक्षाएं निलंबित कर दी हैं। एक अधिकारी ने यह जानकारी दी। उन्होंने कहा कि नौवीं से 12वीं तक की कक्षाएं सुबह सात बजे से पूर्वाह्न 11:30 बजे तक संचालित होंगी। अधिकारी ने बताया कि यह निर्णय छात्रों को भीषण गर्मी के प्रतिकूल प्रभावों से बचाने के उद्देश्य से लिया गया है। उन्होंने कहा कि यह आदेश सरकारी, निजी, सहायता प्राप्त और गैर-सहायता प्राप्त सहित सभी प्रकार के स्कूलों पर लागू होगा। स्कूल शिक्षा एवं साक्षरता विभाग के सचिव उमाशंकर सिंह के एक आदेश में कहा गया है, अगली सूचना तक सरकारी, निजी, सहायता प्राप्त और गैर सहायता प्राप्त सहित सभी श्रेणियों के स्कूलों में आठवीं तक की कक्षाएं निलंबित की जाती हैं।

शिक्षा मंत्रालय ने एनसीईआरटी से पाठ्यपुस्तकों की समीक्षा, अद्यतन करने को कहा

भाषा। नई दिल्ली

शिक्षा मंत्रालय ने राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) से अपनी पाठ्यपुस्तकों की सालाना आधार पर समीक्षा करने और नए अकादमिक सत्र शुरू होने से पहले इन्हें अद्यतन करने को कहा है। सूत्रों ने यह जानकारी दी। अबतक, एनसीईआरटी की पाठ्यपुस्तकों को अद्यतन करने पर कोई दिशानिर्देश नहीं था। हालांकि, एनसीईआरटी ने 2017 से पाठ्यपुस्तकों की समय-समय पर समीक्षा की है और उनकी सामग्री को अद्यतन किया है। कोविड महामारी के कारण स्कूलों के बंद रहने के मद्देनजर पाठ्यक्रम को छोटा करने की एक कवायद भी की गई थी लेकिन

इसपर, एक खास एजेंडा के तहत पाठ्यपुस्तकों से कुछ अंश हटाने के आरोप लगे थे। सूत्रों ने बताया, आज की तेजी से बदलती दुनिया में, यह जरूरी है कि पाठ्यपुस्तकें पूरी तरह से अद्यतन रहें। एनसीईआरटी को सालाना आधार पर एक समीक्षा करने और नए अकादमिक सत्र शुरू होने से पहले (पाठ्यपुस्तकों को) अद्यतन करने को कहा गया है। उन्होंने कहा, एनसीईआरटी की पुस्तकें प्रकाशित होने पर कई साल तक उसी रूप में नहीं रहनी चाहिए। छपाई से पहले हर साल उनकी समीक्षा की जानी चाहिए और यदि कोई बदलाव किया जाता है या कुछ नए तथ्य जोड़े जाने हैं, तो उन्हें पुस्तकों में शामिल किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, कृत्रिम मेधा (एआई) जैसे विषय। वर्तमान में, एनसीईआरटी पिछले साल घोषित राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (एनसीएफ) के अनुसार पाठ्यपुस्तकें तैयार करने की प्रक्रिया में जुटी है। सूत्रों ने बताया, नए पाठ्यक्रम के अनुसार पाठ्यपुस्तकें सभी कक्षाओं के लिए 2026 तक तैयार हो जाएंगी...नई एनसीएफ की तर्ज पर सभी कक्षाओं के लिए सारी पाठ्यपुस्तकें जारी करने में कम से कम दो साल का समय लगेगा। इस साल, एनसीईआरटी ने तीसरी और छठी कक्षाओं के लिए नई पाठ्पुस्तकें जारी की हैं।

पाठ्यपुस्तक में मणिपुर के खेल को मिजोरम का बताया गया, भाजपा विधायक ने सुधार की मांग की

इंफाल। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) की पाठ्यपुस्तक में मणिपुर के एक लोकप्रिय खेल को कथित रूप से मिज़ोरम का बताए जाने के कुछ दिनों बाद भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के एक विधायक ने इसे गंभीर गलती करार देते हुए तत्काल इसमें सुधार किए जाने की मांग की है। मणिपुर से भाजपा विधायक आर के इमो सिंह ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर कहा, मुकना-कांगजेई मणिपुर का एक पारंपरिक खेल है। यह हॉकी का एक प्रकार है और इसमें कुश्ती भी शामिल है, इसलिए इसे कुश्ती-हॉकी के नाम से जाना जाता है। उन्होंने कहा, एनसीईआरटी ने इस पारंपरिक खेल का मिज़ोरम से संबंध प्रकाशित कर बड़ी गलती की है। यह पूर्णतः मणिपुर राज्य का एक पारंपरिक खेल है। एनसीईआरटी को इस गलती को तुरंत सुधारने की जरूरत है। इसके अतिरिक्त, शिक्षा (स्कूल) विभाग शारीरिक शिक्षा शिक्षक संघ ने शिक्षा संबंधी सामग्रियो मे सटीकता के महत्व पर जोर दिया, विशेष रूप से सांस्कृतिक विरासत और स्थानीय खेलो के संबंध मे। शिक्षक संघ ने अधिकारियों से एक बयान जारी करने और त्रुटि को जल्दी से ठीक करने का आग्रह किया। इस बीच, अधिकारियों ने पीटीआई-भाषा को बताया कि उन्होंने इस मुद्दे पर ध्यान दिया है और इस पर गौर कर रहे है। एक अधिकारी ने बताया, यह एक वास्तविक टाइपिग त्रुटि प्रतीत होती है क्योंकि अध्याय की सामग्री इस खेल को मणिपुर और इसके इतिहास को बताती है।

केंद्र ने अपने कर्मचारियों के लिए बच्चों की शिक्षा के भत्ते, छात्रावास सब्सिडी सीमा में संशोधन किया

नई दिल्ली। केंद्र ने अपने कर्मचारियों के लिए बच्चों की शिक्षा के भत्ते और छात्रावास सब्सिडी की सीमा में संशोधन किया है। कार्मिक मंत्रालय के एक आदेश में यह जानकारी दी गई। यह कदम एक जनवरी, 2024 से महंगाई भत्ते में बढ़ोतरी के बाद उठाया गया है। वर्ष 2018 के एक दिशानिर्देश का हवाला देते हुए मंत्रालय ने कहा कि आदेश में प्रावधान है कि जब भी संशोधित वेतन में महंगाई भत्ता 50 प्रतिशत तक बढ़ जाएगा तो बच्चों के शिक्षा भत्ते और छात्रावास सब्सिडी की सीमा स्वाभाविक रूप से 25 प्रतिशत बढ़ जाएगी। मंत्रालय ने कहा कि एक जनवरी, 2024 से केंद्रीय कर्मचारियों के महंगाई भत्ते में इजाफा होने के मद्देनजर बच्चों के शिक्षा भत्ता और छात्रावास सब्सिडी की राशि के बारे में जानकारी मांगी जा रही है। कार्मिक मंत्रालय के नवीनतम आदेश में कहा गया है कि तदनुसार, सरकारी कर्मचारियों द्वारा किए गए वास्तविक खर्चों के बावजूद बच्चों के शिक्षा भत्ते की प्रतिपूर्ति की राशि 2,812.5 रुपए प्रति माह होगी और छात्रावास सब्सिडी 8,437.5 रुपए प्रति माह होगी।

भारत के विभाजन से पूर्वोत्तर का प्राकृतिक संपर्क टूट गया : जयशंकर

भाषा। नई दिल्ली

विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने सोमवार को कहा कि भारत के विभाजन से कई मायने में पूर्वोत्तर राज्यों का प्राकृतिक संपर्क टूट गया और राजनीतिक बाधाओं के साथ-साथ प्रशासनिक मुद्दों के कारण क्षेत्र के विकास पर असर पड़ा। जयशंकर दिल्ली विश्वविद्यालय के किरोड़ीमल कॉलेज में दक्षिण पूर्व एशिया और जापान के साथ पूर्वोत्तर भारत का एकीकरण : आर्थिक संबंधों और पारिस्थितिक संरक्षण का संतुलन विषय पर आयोजित एक कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। छात्रों को संबोधित करते हुए जयशंकर ने कहा, भारत के विभाजन ने कई मायनों में उस प्राकृतिक संपर्क को तोड़ दिया जो पूर्वोत्तर के पास था। इसके परिणामस्वरूप, पूर्वोत्तर में जिस स्तर पर विकास होना चाहिए था, वह धीमा पड़ गया। विभाजन के बाद पहले कुछ दशकों में राजनीतिक बाधाओं और प्रशासनिक मुद्दों के कारण पूर्वोत्तर को वह लाभ नहीं मिला जो देश के अन्य हिस्सों को मिल सका।

अमेठी व रायबरेली से उम्मीदवारों पर फैसले के लिए खरगे अधिकृत : कांग्रेस

भाषा। नई दिल्ली

कांग्रेस ने अमेठी और रायबरेली लोकसभा सीट से गांधी परिवार के सदस्यों के चुनाव लड़ने को लेकर जारी अटकलों के बीच सोमवार को कहा कि उम्मीदवारों के बारे में फैसला करने के लिए पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे को अधिकृत किया गया है।पार्टी प्रवक्ता सुप्रिया श्रीनेत ने इस बारे में पूछे जाने पर संवाददाताओं से कहा, वहां कांग्रेस अध्यक्ष को यह निर्णय लेने के लिए अधिकृत किया गया है कि उम्मीदवार कौन हो। चुनाव छिपकर तो नहीं लड़ा जाता। चुनाव को पूरे गाजे-बाजे के साथ लड़ा जाएगा। जैसे ही उम्मीदवार पर फैसला होगा, उस बारे में आपको बता दिया जाएगा। गत शनिवार को हुई कांग्रेस की केंद्रीय चुनाव समिति (सीईसी) की बैठक में अमेठी और रायबरेली लोकसभा सीट को लेकर कोई निर्णय नहीं हो सका और फैसला पार्टी नेतृत्व पर छोड़ दिया गया था। सूत्रों के अनुसार, कांग्रेस के उत्तर प्रदेश प्रभारी अविनाश पांडे और विधायक दल की नेता अराधना मिश्रा ने उस बैठक में नेतृत्व से आग्रह किया था कि अमेठी से राहुल गांधी और रायबरेली से प्रियंका गांधी वाद्रा को चुनाव लड़ना चाहिए, हालांकि इस पर कोई फैसला नहीं हुआ। उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी तथा अमेठी एवं रायबरेली के स्थानीय कांग्रेस नेताओं ने पिछले दिनों नेतृत्व से आग्रह किया था कि राहुल गांधी और प्रियंका गांधी को इन सीट से चुनाव लड़ना चाहिए।

केंद्र की राजग सरकार संविधान बदलने की साजिश रच रही: लालू

भाषा। छपरा

राष्ट्रीय जनता दल (राजद) प्रमुख लालू प्रसाद ने सोमवार को केंद्र में भाजपा नीत राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) सरकार पर देश के संविधान को बदलने की साजिश रचने का आरोप लगाया। राजद प्रमुख ने सारण लोकसभा सीट से अपनी बेटी रोहिणी आचार्य द्वारा नामांकन पत्र दाखिल करने के तुरंत बाद सोमवार को एक जनसभा को संबोधित करते हुए कहा, हमें अपने देश के संविधान और धर्मनिरपेक्ष-लोकतांत्रिक ताने-बाने की रक्षा करनी है। केंद्र की राजग सरकार बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर द्वारा बनाए गए संविधान को बदलने की कोशिश कर रही है। हमें अपने संविधान और देश को बचाना है... हम किसी भी कीमत पर ऐसा नहीं होने देंगे। राजद प्रमुख ने आगे कहा, भाजपा नेता समाज के कमजोर वर्गों को मिले आरक्षण को भी खत्म करना चाहते हैं। देश को बचाना है, संविधान को बचाना है। हम लोकतंत्र, संविधान को मिटाने नहीं देंगे। वे पीछड़े वर्ग के हक को छीनना चाहते हैं। हमें पिछड़े वर्गों, सामाजिक रूप से हाशिए पर रहने वाले लोगों और समाज के कमजोर वर्गों के अधिकारों की रक्षा करनी होगी।

क्विक न्यूज

ओडिशा सरकार ने केंद्र से 1.56 करोड़ मच्छरदानी मुहैया करने का आग्रह किया

भुवनेश्वर। ओडिशा सरकार ने राज्य मे मलेरिया के मामलो पर अंकुश लगाने के लिए केंद्र सरकार से 1.56 करोड़ मच्छरदानी मुहैया करने का आग्रह किया है। राज्य के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री निरंजन पुजारी ने सोमवार को इस संबंध मे केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री मनसुख मांडविया को पत्र लिखा। पुजारी ने कहा है कि मलेरिया संक्रमण को प्रभावी तरीके से फैलने से रोकने के लिए केंद्र ने 2020-21 मे ओडिशा को 1.56 करोड़ मच्छरदानी उपलब्ध कराया था। उन्होंने कहा कि 2023 मे ही ए मच्छरदानी बदले जाने थे, जिसमे एक साल की देरी हो गई है और इसके चलते राज्य मे मलेरिया के मामलो मे वृद्धि होने की आशंका है। पुजारी ने मलेरिया के मामलो को और बढ़ने से रोकने के लिए मच्छरदानी की तत्काल आपूर्ति करने का केंद्र से आग्रह किया। राष्ट्रीय वैक्टर जनित रोग नियंत्रण कार्यक्रम (एनसीवीबीडीसी) के अनुसार, ओडिशा मे 2023 मे मलेरिया के 41,971 मामले सामने आए थे, जो सभी राज्यो की तुलना मे सबसे अधिक थे। ओडिशा के बाद छत्तीसगढ़ मे 31,713, झारखंड मे 31,140, पश्चिम बंगाल मे 26,493, त्रिपुरा मे 22,412, मिजोरम मे 17,991, महाराष्ट्र मे 16,164 और उत्तर प्रदेश मे 13,585 मामले सामने आए थे।

सर्वेक्षण में खुलासा- मच्छरों के कारण भारत की आधी से अधिक आबादी पर उत्पादकता पर बुरा असर

वाराणसी। देश की आधे से अधिक (58 प्रतिशत) उत्पादकता पर बुरा असर पड़ रहा है, क्योंकि मच्छरों के कारण नींद में खलल पड़ने के कारण लोग तनावग्रस्त/थका हुआ महसूस करते हैं। गोदरेज कंज्यूमर प्रोडक्ट्स लिमिटेड (जीसीपीएल) के भारत के अग्रणी घरेलू कीटनाशक ब्रांड गुडनाइट द्वारा जारी एक सर्वेक्षण रिपोर्ट से महत्वपूर्ण रहस्य सामने आया है। 'वन मस्कीटो, काउंटलेस थ्रेट्स' टाइटल के साथ यह देशव्यापी सर्वे गुडनाइट द्वारा शुरू किया गया था, और बाजार अनुसंधान फर्म द्वारा आयोजित किया गया था। यह सर्वे जनता के रुख की जांच करता है, और मच्छर जनित बीमारियों के खतरों का आकलन करता है। सर्वेक्षण रिपोर्ट में भारत के चार क्षेत्रों - उत्तर (मध्य क्षेत्र के राज्यों सहित), दक्षिण, पश्चिम और पूर्व के उत्तरदाताओं को शामिल किया गया। गोदरेज कंज्यूमर प्रोडक्ट्स लिमिटेड (जीसीपीएल) के चीफ मार्केटिंग ऑफिसर - इंडिया, अश्विन मूर्ति कहते हैं, ''गुडनाइट की 'वन मस्कीटो, काउंटलेस थ्रेट्स' टाइटल वाली राष्ट्रव्यापी सर्वेक्षण रिपोर्ट दरअसल जनता के रवैये पर प्रकाश डालती है और मच्छर जनित बीमारियों से जुड़े जोखिमों का मूल्यांकन करती है। ऐसी पहलों के माध्यम से, हमारा लक्ष्य भारत में मच्छरों की समस्या के बारे में जागरूकता बढ़ाना, परिवारों को कार्रवाई करने में सक्षम बनाना और देश को किफायती लेकिन नवीन समाधान प्रदान करना है। भारत में प्रतिवर्ष 40 मिलियन से अधिक नागरिक मलेरिया, डेंगू जैसी मच्छर जनित बीमारियों से प्रभावित होते हैं।

जालना के कई गांवों में पानी की भारी मांग से टैंकर चालकों को कई-कई घंटे करना पड़ता है काम

छत्रपति संभाजीनगर। महाराष्ट्र के जालना जिले के कई गांवो मे लोग पानी की समस्या से जूझ रहे है, इसलिए वे रोजमर्रा के काम के लिए पानी के टैंकरो पर निर्भर है। ऐसे मे इन टैंकरो के चालकों को एक दिन मे 20 घंटे तक भी काम करना पड़ रहा है। चालकों ने रविवार को पीटीआई-भाषा से बात करते हुए दावा किया कि बिजली आपूर्ति मे रुकावट और पानी के टैंकर भरने वाले स्थानो पर लंबी कतारो की वजह से कई घंटो तक काम करना पड़ रहा है। मराठवाड़ा क्षेत्र मे स्थित जिले के विभिन्न हिस्से पिछले मानसून सीजन मे अपर्याप्त वर्षा के कारण पानी की कमी का सामना कर रहे है। एक स्थानीय राजस्व अधिकारी के अनुसार, जालना मे 26 अप्रैल तक 148 गांव और 55 बस्तियां 235 टैंकरो पर पानी की आपूर्ति के लिए निर्भर थी। छत्रपति संभाजीनगर से लगभग 80 किलोमीटर दूर स्थित जालना-भोकरदान रोड पर स्थित बनेगांव मे सिंचाई परियोजना के तहत खुदाई किए गए एक कुएं से इन टैंकरो मे पानी भरा जाता है। टैंकरो के लिए बनेगांव नोडल केंद्र है, जिसके बाद यहां से तुपेवाडी, धामनगांव, तपोवन और गारखेड़ा मे पानी की आपूर्ति की जाती है।

एलएंडटी का मुनाफा 43 फीसदी बढ़कर 2320 करोड़ रुपये

मुंबई। भारत में लीडिंग नॉन-बैंकिंग फाइनेंशियल कंपनियों (एनबीएफसी) में शामिल, एलएंडटी फाइनेंस लिमिटेड (एलटीएफ) का 31 मार्च, 2024 को समाप्त वित्त वर्ष के लिए मुनाफा सालाना आधार पर 43 फीसदी बढ़कर 2320 करोड़ रुपये रहा है। यह कंपनी के लिए आलटाइम हाई सालाना मुनाफा है। वहीं वित्त वर्ष 2024 की मार्च यानी चौथी तिमाही में कंपनी का मुनाफा सालाना आधार पर 11 फीसदी बढ़कर 554 करोड़ रुपये रहा है। कंपनी के वित्तीय परिणामों पर एलएंडटी फाइनेंस लिमिटेड के मैनेजिंग डायरेक्टर और सीईओ, सुदीप्त रॉय ने कहा कि हम लक्ष्य 2026 रणनीतिक योजना के दूसरे साल में, हमें समय से पहले ही अपने तय किए गए टारगेट से काफी आगे बढ़कर 94 फीसदी रिटेल पोर्टफोलियो की रिपोर्ट करते हुए खुशी हो रही है। वित्त वर्ष 2024 के लिए हमारा नेट प्रॉफिट सालाना आधार पर 43 फीसदी की मजबूत ग्रोथ के साथ 2320 करोड़ रुपये रहा, जो हमारी रिटेल बुक में 31 फीसदी सालाना ग्रोथ और डिस्बर्समेंट में 29 फीसदी सालाना ग्रोथ से प्रेरित है। यह कंपनी द्वारा दर्ज किया गया आल टाइम हाई सालाना मुनाफा है। चुनौतीपूर्ण ब्याज दर के माहौल के बावजूद, हमारी उधार लेने की लागत स्थिर रही और हमारे पोर्टफोलियो क्रेडिट मेट्रिक्स ने सुधार जारी रखा।

अंतरिक्ष मलबे से बचने के लिए इसरो ने चंद्रयान-3 के प्रक्षेपण में चार सेकंड की देरी की थी

नई दिल्ली। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने एक रिपोर्ट में कहा है कि अंतरिक्ष मलबे के एक टुकड़े से बचने के लिए चंद्रयान-3 का प्रक्षेपण चार सेकंड की देरी से किया गया था। भारत ने चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव क्षेत्र मे चंद्रयान-3 की सफल सॉफ्ट लैंडिंग से इतिहास रच दिया था और इस क्षेत्र में अपना यान उतारने वाला वह दुनिया का पहला देश बन गया था। वर्ष 2023 के लिए इंडियन सिचुएशनल स्पेस अवेयरनेस रिपोर्ट (आईएसएसएआर) के अनुसार, चंद्रयान-3 का प्रक्षेपण टक्कर संबंधी आकलन के आधार पर चार सेकंड की देरी से किया गया था।

सुनहरे सिनेमा ने पूरा किया एक दशक का सफर

मुंबई। सोनी मैक्स 2 ऐसा चैनल है, जो हमें भारतीय सिनेमा के उस सुनहरे युग में ले जाता हैए जिसमें एक से बढ़कर एक प्रतिष्ठित फिल्में शामिल हैं। वो फिल्में जिन्होंने अमिताभ बच्चनए राजेश खन्ना, धर्मेंद्र, हेमा मालिनी जैसे कई अन्य सितारों को वास्तव में सितारा बनाया। ये सदाबहार फिल्में समय की कसौटी पर खरी उतरी हैं, जिन्हें विभिन्न पीढ़ियों द्वारा पसंद किया जाता रहा है। इनमें से प्रत्येक सदाबहार फिल्म को चैनल सिनेमा प्रेमियों के जुनून को पूरा करने के उद्देश्य से सावधानीपूर्वक चयनित और क्यूरेट करता है। सोनी मैक्स 2 को प्रत्येक फिल्म प्रेमी के लिए सिनेमाई रत्नों के खजाने की पेशकश करने के लिए जाना जाता है। जैसा कि सोनी मैक्स 2 दर्शकों के मनोरंजन के एक दशक के सफर का जश्न मना रहा हैए ऐसे में प्रमुख बॉलीवुड और टेलीविजन अभिनेताओं ने इस उपलब्धि और हिंदी सिनेमा के प्रति उनके स्थायी प्रेम के बारे में अपने विचार व्यक्त किए हैं। महेश ठाकुरजो वर्तमान में सोनी सब के आंगन आपनो का में नजर आ रहे हैं और कई बॉलीवुड ब्लॉकबस्टर्स का हिस्सा रह चुके हैंए ने कहा कि सोनी मैक्स 2 को 10 वर्ष पूरे करने पर बधाई! चैनल पर फिल्में देखने की मेरी बहुत सारी यादें हैं। ंजलि तत्रारी जो सोनी सब के वंशज में युविका का किरदार निभा रही ह सोनी मैक्स 2 पर इन प्रतिष्ठित फिल्मों को देखने की अपनी यादें साझा करते हुए कहती हैं सोनी मैक्स 2 को 10 वर्ष पूरे करने पर बहुत-बहुत बधाई! मेरे पास इस चैनल पर फिल्में देखने की बहुत सारी यादें हैं।

इजराइल को गाजा में मानवीय सहायता की आपूर्ति बढ़ाने के संबंध में कदम उठाने चाहिए: ब्लिंकन

एपी। रियाद

अमेरिका के विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन ने सोमवार को पश्चिम एशिया की अपनी यात्रा शुरू करने के बाद कहा कि युद्धग्रस्त गाजा पट्टी में मानवीय सहायता की आपूर्ति बढ़ाने के लिए इजराइल को और अधिक प्रयास करना चाहिए।

करीब छह महीने पहले इजराइल-हमास युद्ध के शुरू होने के बाद से ब्लिंकन का इस क्षेत्र का यह सातवां राजनयिक दौरा है जिसमें वह इजराइल की यात्रा भी करेंगे।

रियाद में खाड़ी सहयोग परिषद के विदेश मंत्रियों को संबोधित करते हुए ब्लिंकन ने कहा कि गाजा में मानवीय तबाही को कम करने का सबसे अच्छा तरीका एक संघर्षविराम समझौता है, जिससे हमास द्वारा बंधक बनाए गए लोगों की रिहाई का भी रास्ता साफ होगा।

हालांकि, उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि स्थिति को बेहतर करना आवश्यक है। अमेरिका के विदेश मंत्री ने कहा, गाजा में बच्चों, महिलाओं और पुरुषों की पीड़ा को कम करने तथा अधिक टिकाऊ समाधान के लिए सबसे प्रभावी तरीका संघर्षविराम और बंधकों की रिहाई है। हमास द्वारा सात अक्टूबर को इजराइल पर किए गए घातक हमले के बाद से युद्ध जारी है। इसमें 34,000 से अधिक फलस्तीनी मारे जा चुके हैं, हजारों लोग विस्थापित हुए हैं और गाजा में मानवीय संकट गहरा रहा है। इस युद्ध के बाद दुनियाभर में प्रदर्शन हुए हैं और हिंसा की आंच अमेरिका में कॉलेजों के परिसरों तक पहुंच गई है। इजराइल के लिए अमेरिका के समर्थन की आलोचना भी हो रही है।

ब्लिंकन अपनी इस यात्रा में सउदी अरब, जॉर्डन और इजराइल का दौरा करेंगे। उनकी इस यात्रा से पहले अमेरिका के राष्ट्रपति जो. बाइडन ने रविवार को फोन पर इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू से बात की। ब्लिंकन की यात्रा पश्चिम एशिया में संघर्ष की स्थिति को लेकर नए सिरे से सामने आईं चिंताओं के बीच हो रही है।

अमेरिकी विदेश मंत्री इस यात्रा के दौरान इजराइल-हमास संघर्षविराम, गाजा के लिए मानवीय सहायता तथा गाजा के भविष्य और इजराइल-सउदी अरब के रिश्तों को सामान्य करने पर बातचीत करेंगे।

स्कॉटलैंड के प्रथम मंत्री हमजा यूसुफ ने इस्तीफा दिया

भाषा। लंदन

स्कॉटलैंड के प्रथम मंत्री हमजा यूसुफ ने अविश्वास प्रस्ताव का सामना करने से पहले ही सोमवार को पद से इस्तीफा दे दिया।

इससे कुछ दिन पहले ही हमजा के नेतृत्व वाली स्कॉटिश नेशनल पार्टी (एसएनपी) ने नीतिगत मुद्दों पर तनातनी होने के बाद ग्रीन पार्टी से गठबंधन तोड़ लिया था।

पाकिस्तानी मूल के 39 वर्षीय हमजा ने पिछले साल मार्च में स्कॉटलैंड के प्रथम मंत्री का पद संभाला था। इस पद को संभालने वाले वह पहले मुस्लिम नेता हैं। स्कॉटलैंड सरकार का सारा कामकाज प्रथम मंत्री ही संभालते हैं। यह पद प्रधानमंत्री के समान माना जाता है।

यूसुफ ने बढ़ते नीतिगत मतभेदों के बीच पिछले हफ्ते ग्रीन पार्टी के साथ गठबंधन समाप्त कर दिया था, जिसके चलते उनकी अल्पमत सरकार पर संकट आ गया था।

ग्रीन पार्टी ने विपक्षी दलों - कंजर्वेटिव, लेबर और लिबरल डेमोक्रेट - के साथ मिलकर दो अविश्वास प्रस्तावों का समर्थन किया, जिसमें यूसुफ के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव शामिल था।

यूसुफ ने कहा, इस सप्ताह अविश्वास प्रस्ताव पेश होना संभव था और मैं केवल सत्ता बनाए रखने के लिए अपने मूल्यों और सिद्धांतों से समझौता करने को तैयार नहीं हूं।

एडिनबर्ग में स्कॉटलैंड के प्रथम मंत्री के आधिकारिक निवास ब्यूट हाउस में दिए गए अपने संबोधन में यूसुफ ने कहा, मुझे अफसोस है कि प्रथम मंत्री के रूप में मेरा कार्यकाल समाप्त हो रहा है, लेकिन मैं अपने देश का नेतृत्व करने का अवसर पाने के लिए बहुत आभारी हूं, मैं बहुत भाग्यशाली हूं क्योंकि यह मौका बहुत कम लोगों को मिलता है।

पाकिस्तानी और केन्याई मूल के यूसुफ ने ब्रिटेन की विविधता को सराहा और अपने संबोधन में ऋषि सुनक को ब्रिटेन के पहले हिंदू प्रधानमंत्री के रूप में संदर्भित किया।

उन्होंने कहा, अब हम ब्रिटेन में रहते हैं, जहां एक ब्रिटिश हिंदू प्रधानमंत्री (ऋषि सुनक) हैं, लंदन के एक मुस्लिम मेयर (सादिक खान) हैं, वेल्श के प्रथम मंत्री (वॉन गेथिंग) एक अश्वेत हैं और कुछ समय के लिए एक स्कॉटिश एशियाई (यूसुफ) प्रथम मंत्री हैं।

यूसुफ अपने पद पर तब तक बने रहेंगे जब तक कि स्कॉटलैंड की संसद में उनके स्थान पर प्रथम मंत्री का चयन नहीं हो जाता।

इजराइल और हमास समझौते को लेकर बाइडन और नेतन्याहू ने की बात

एपी। तेल अवीव

अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडन ने इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू से ऐसे समय में एक बार फिर वार्ता की जब इजराइल और हमास के बीच कुछ इजराइली बंधकों को मुक्त करने और गाजा में युद्ध विराम के लिए समझौता करने का दबाव बढ़ रहा है। अमेरिका के राष्ट्रपति के आधिकारिक आवास एवं कार्यालय व्हाइट हाउस ने रविवार को यह जानकारी दी।

व्हाइट हाउस ने एक बयान में बताया कि गाजा के दक्षिणी छोर पर स्थित रफह शहर पर आक्रमण करने की इजराइल की योजना के बीच बाइडन ने अपने स्पष्ट रुख को दोहराया। रफह में 10 लाख से अधिक फलस्तीनियों ने शरण ली है और दुनिया भर के देशों ने इजराइल के आक्रमण की इस योजना को लेकर चिंता व्यक्त की है।

अमेरिका ने भी मानवीय आधार पर हमले का विरोध किया है जिसके कारण सहयोगी देशों-अमेरिका एवं इजराइल के संबंधों में तनाव पैदा हो गया है। अमेरिका के विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन सोमवार को इजराइल की यात्रा करेंगे।

बयान के अनुसार, बाइडन ने नेतन्याहू से फोन पर बातचीत के दौरान इस बात पर जोर दिया कि गाजा को मानवीय सहायता पहुंचाने की दिशा में लगातार आगे बढ़ने और इस आपूर्ति को बढ़ाने की आवश्यकता है।

अमेरिका के एक अधिकारी ने अपनी पहचान गोपनीय रखे जाने की शर्त पर बताया कि दोनों नेताओं के बीच फोन पर करीब एक घंटे बात हुई और वे इस बात पर सहमत हुए कि वार्ता के दौरान नया प्रस्ताव स्वीकार करने की जिम्मेदारी हमास पर होगी। नेतन्याहू के कार्यालय ने इस बारे में अभी कोई जानकारी नहीं दी है।

दक्षिण कोरिया के राष्ट्रपति यून सुक येओल, सियोल में राष्ट्रपति कार्यालय में एक बैठक के दौरान मुख्य विपक्षी डेमोक्रेटिक पार्टी के नेता ली जे म्युंग से हाथ मिलाते हुए।

पुतिन ने शायद रूसी विपक्षी नेता नवलनी की मौत का आदेश नहीं दिया था: अमेरिकी अधिकारी

एपी। वाशिंगटन

अमेरिकी खुफिया अधिकारियों का मानना है कि संभवत: रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने विपक्षी नेता एलेक्सी नवलनी की फरवरी में मौत का आदेश नहीं दिया था। एक अधिकारी ने यह जानकारी दी।

अमेरिकी अधिकारियों का मानना है कि पुतिन ही अंतत: नवलनी की मौत के लिए जिम्मेदार थे क्योंकि जब वह जेल में बंद थे तो उन्हें क्रूर परिस्थितियों का सामना करना पड़ा था, वहीं खुफिया अधिकारियों के पास इस बात के प्रमाण हैं कि पुतिन को नवलनी की मौत होने के बारे में पहले से ही जानकारी थी। पुतिन के दोबारा राष्ट्रपति चुने जाने के तुरंत बाद ही नवलनी की मौत हो गई थी।

अधिकारी ने नाम न छापने की शर्त पर नवलनी की मौत के संवेदनशील मामले पर चर्चा की।

नवलनी की मौत के तुरंत बाद ही अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन ने इसके लिए पुतिन को जिम्मेदार ठहराया था, लेकिन उन्होंने रूसी राष्ट्रपति पर यह आरोप नहीं लगाया था कि उन्होंने ही नवलनी को मारने का आदेश दिया था। बाइडन ने तब कहा था कि हमें यह नहीं पता कि नवलनी के साथ क्या हुआ था, लेकिन इसमें भी कोई संदेह नहीं है कि नवलनी की मौत के लिए पुतिन और उनके सहयोगी जिम्मेदार थे। रूस के जाने-माने विपक्षी राजनेता और पुतिन के सबसे कट्टर दुश्मन नवलनी का फरवरी में निधन हो गया था। वह उस समय 47 वर्ष के थे। नवलनी को उग्रवाद के आरोप में 19 साल की सजा सुनाई गई थी, हालांकि उन्होंने इसे राजनीति से प्रेरित बताया था। वह जनवरी 2021 से जेल में थे।

युद्ध के समय पाकिस्तान आए लाखों अफगान लोग अब निर्वासन की आशंका के मद्देनजर छिप रहे हैं

एपी। कराची

पिछले साल अक्टूबर से करीब छह लाख अफगान लोगों को पाकिस्तान से उनके घर वापस भेजा जा चुका है लेकिन अफगानिस्तान के कम से कम दस लाख शरणार्थी अब भी पाकिस्तान में हैं तथा निर्वासन की आशंका में यह लोग छिप-छिपकर रह रहे हैं।

पाकिस्तान में रह गए ए लोग अफगानिस्तान नहीं जाना चाहते। निर्वासन के डर से उन्होंने सार्वजनिक आवाजाही कम कर दी है, अपनी नौकरियां छोड़ दी हैं और अपने घरों के आसपास भी बहुत कम निकलते हैं।

उनके लिए आजीविका कमाना, किराए पर घर लेना, खाने-पीने का सामान खरीदना या इलाज कराना बहुत मुश्किल हो गया है क्योंकि उन्हें पुलिस द्वारा पकड़े जाने या पाकिस्तानी नागरिकों द्वारा उनके बारे में अधिकारियों को बताए जाने का जोखिम है।

कराची में पुलिस ने 18 साल के एक किशोर की नकदी, फोन और मोटरसाइकिल छीनकर उसे निर्वासन केंद्र में भेज दिया था। वहां से उसे अफगानिस्तान भेज दिया गया।

उसके माता-पिता करीब 50 साल पहले अफगानिस्तान छोड़कर यहां आए थे। वह इससे पहले कभी अफगानिस्तान नहीं गया और उसके पास जाते वक्त कपड़ों के अलावा कुछ नहीं था।

अफगानिस्तान में युद्ध के हालात के बीच ऐसे कम से कम 17 लाख लोगों ने पाकिस्तान में शरण ली थी। हालांकि वे पाकिस्तान में बिना किसी कानूनी अनुमति के रहते रहे लेकिन अब पाकिस्तान ने उन्हें अफगानिस्तान वापस भेजने के लिए अभियान चला रखा है।

करीब 15 साल की उम्र से वाहन मेकेनिक के रूप में काम कर रहे एक युवक ने पहचान जाहिर नहीं करने की शर्त पर बातचीत में गिरफ्तारी और निर्वासन का अंदेशा जताया।

उसने यहां रहने के लिए दस्तावेजों की खातिर आवेदन किया है लेकिन उसे ऐसे कागज मिलने की संभावना नहीं है। पाकिस्तान अफगान शरणार्थियों या उनके बच्चों को कागजात जारी नहीं कर रहा है। युवक ने कहा, मेरी जिंदगी यहां है। अफगानिस्तान में मेरा कोई दोस्त, परिवार, कुछ भी नहीं है।

पश्चिमी केन्या में एक बांध टूटने से 40 लोगों की मौत

एपी। नैरोबी

अफ्रीकी देश केन्या के पश्चिमी इलाके में एक बांध के टूटने से कम से कम 40 लोगों की मौत हो गई है। केन्या पुलिस ने यह जानकारी दी। पुलिस अधिकारी स्टीफन किरुई ने समाचार एजेंसी एसोसिएटेड प्रेस को बताया कि बांध के टूटने के बाद बाढ़ का पानी घरों में आ घुसा और एक प्रमुख सड़क से संपर्क कट गया। पुलिस के मुताबिक, यह घटना सोमवार की सुबह ग्रेट रिफ्ट घाटी क्षेत्र के माई माहिउ इलाके में स्थित पुराने किजाबे बांध के ढहने के बाद हुई। ग्रेट रिफ्ट घाटी क्षेत्र में अचानक बाढ़ आने का खतरा बना रहता है। बांध टूटने के बाद पानी नीचे की ओर बहने लगा।

पाकिस्तान पोलियो उन्मूलन के लिए कड़ी मेहनत कर रहा है: शरीफ ने बिल गेट्स को बताया

भाषा। इस्लामाबाद/दारियाद

प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने सोमवार को कहा कि पाकिस्तान पोलियो उन्मूलन के लिए अथक प्रयास कर रहा है।

उन्होंने कहा कि पोलियो मुक्त पाकिस्तान के लक्ष्य तक पहुंचने के लिए सभी भागीदारों को निरंतर प्रयास करने की आवश्यकता है।

पाकिस्तान उन दो देशों में शामिल है, जहां पोलियो अभी भी एक गंभीर समस्या है।

रियाद में विश्व आर्थिक मंच की एक विशेष बैठक से इतर शरीफ ने बिल एंड मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन के संस्थापक बिल गेट्स के साथ टीकाकरण, पोषण और वित्तीय समावेशन के क्षेत्रों में पाकिस्तान और फाउंडेशन के बीच चल रही गतिविधियों पर चर्चा की।

एक बयान के मुताबिक, गेट्स ने पाकिस्तान के पंजाब प्रांत के मुख्यमंत्री के रूप में शरीफ के नेतृत्व में राज्य में चलाए गए टीकाकरण और पोलियो उन्मूलन कार्यक्रम की प्रशंसा की।

बयान के मुताबिक, फरवरी 2022 में गेट्स की पाकिस्तान यात्रा को याद करते हुए प्रधानमंत्री शरीफ ने उन्हें फिर से देश का दौरा करने के लिए आमंत्रित किया तथा पाकिस्तान और गेट्स फाउंडेशन के बीच एक मजबूत साझेदारी सुनिश्चित करने के लिए उनके साथ काम जारी रखने की अपनी प्रतिबद्धता दोहराई।

ऑस्ट्रेलियाई प्रधानमंत्री अल्बनीज ने घरेलू हिंसा को राष्ट्रीय संकट बताया

एपी। कैनबरा

ऑस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री एंथनी अल्बनीज ने महिलाओं के साथ हिंसा के खिलाफ हजारों लोगों द्वारा देशभर में प्रदर्शन किए जाने के बाद सोमवार को घरेलू हिंसा को राष्ट्रीय संकट बताया।

ऑस्ट्रेलिया के कई शहरों में रविवार को हजारों लोगों ने इस साल कथित तौर पर लैंगिक हिंसा के कारण 27 महिलाओं की मौत पर ध्यान दिलाने के लिए प्रदर्शन किया।

अल्बनीज ने सोमवार को कहा कि ए रैलियां ऑस्ट्रेलियाई सरकार के सभी स्तरों पर लैंगिक हिंसा को रोकने के लिए और अधिक प्रयास करने का आह्वान थीं।

उन्होंने नाइन नेटवर्क टेलीविजन से कहा, बिल्कुल साफ है कि हमें और कदम उठाने की जरूरत है।

डार की उप प्रधानमंत्री के तौर पर नियुक्ति पूर्व नियोजित: पाकिस्तानी मीडिया

भाषा। इस्लामाबाद

पाकिस्तान के विदेश मंत्री और पूर्व प्रधानमंत्री नवाज शरीफ के करीबी माने जाने वाले इशाक डार की उप प्रधानमंत्री पद पर नियुक्ति पूर्व नियोजित है और यह वित्त मंत्रालय जाने के बाद पीएमएल-ए सुप्रीमों द्वारा भरपाई के वास्ते की गई है। मीडिया ने सोमवार को यह दावा किया। डार (73) पेशे से चार्टर्ड अकाउंटेंट हैं और पाकिस्तान मुस्लिम लीग-नवाज (पीएमएल-एन) पार्टी के दिग्गज नेता हैं। उन्हें प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने रविवार को तत्काल प्रभाव से और आगामी किसी आदेश तक उप प्रधानमंत्री के पद पर नियुक्त किया।

शहबाज और डार इस समय विश्व आर्थिक मंच (डब्ल्यूईएफ) की विशेष बैठक में हिस्सा लेने के लिए सउदी अरब में हैं।

डॉन अखबार के मुताबिक, डार की नए पद पर नियुक्ति ने कई लोगों को हतप्रभ किया लेकिन गठबंधन के किसी सहयोगी ने शायद ही इसकी आलोचना की है। खबर में कहा गया है कि डार को विरला ही भरे जाने वाले उप प्रधानमंत्री पद से सम्मानित करने के फैसले ने कई सवाल खड़े किए हैं।

अखबार के मुताबिक, चर्चा है कि पीएमएल-एन सुप्रीमो नवाज शरीफ चाहते थे कि संघीय मंत्रिमंडल के अहम पद पर कोई उनका विश्वसनीय हो ताकि वित्त मंत्रालय के खोने के नुकसान की भरपाई की जा सके।

इस कदम को नवाज शरीफ द्वारा सत्तारूढ़ पार्टी के नेतृत्व को वापस लेने के संदर्भ में भी देखा जा रहा है। उन्हें पनामा लीक मामले में दोषी ठहराए जाने के बाद पीएमएल-एन अध्यक्ष पद से इस्तीफा देना पड़ा था।

डार को दोनों परिवारों के बीच वैवाहिक संबंध की वजह से नवाज शरीफ का करीबी माना जाता है। डार का बेटा नवाज शरीफ का दामाद है।

खबर में सूत्रों के हवाले से दावा किया गया कि डार की उप प्रधानमंत्री के तौर पर नियुक्ति पूर्व नियोजित है। गठबंधन सरकार के गठन के समय ही फैसला ले लिया गया था कि डार उप प्रधानमंत्री बनेंगे।

हालांकि, जियो न्यूज की की खबर अनुसार, चार बार के वित्त मंत्री की विदेश मंत्री के रूप में नियुक्ति ने देश की कूटनीति में अर्थशास्त्र की भूमिका बढ़ाने का संकेत दिया है क्योंकि नकदी संकट से जूझ रहा देश , अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) से एक और करार करने की कोशिश कर रहा है।

सत्तारूढ़ गठबंधन में शामिल पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी (पार्टी) के सूचना सचिव फैसल करीम कुंदी ने कहा कि उनकी पार्टी को डार के उप प्रधानमंत्री पद पर नियुक्त किए जाने को लेकर कोई आपत्ति नहीं है। उन्होंने कहा, यह प्रधानमंत्री का विशेषाधिकार है और उन्होंने डार को उप प्रधानमंत्री नियुक्त किया है।

इस बीच, इमरान खान की पाकिस्तान तहरीक ए इंसाफ पार्टी (पार्टी) ने इस घटनाक्रम पर तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की है। खैबर पख्तूनख्वा के मुख्यमंत्री के सूचना मामलों के विशेष सहायक बैरिस्टर मुहम्मद अली सैफ ने कहा, शरीफ अहम राष्ट्रीय पदों को अपने परिवार में ही बांट रहे हैं।

पाकिस्तान इंस्टीट्यट ऑफ लेजिस्लेटिव डेवलपमेंट एंड ट्रांसपेरेंसी के अध्यक्ष अहमद बिलाल महबूब ने प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ नीत सरकार के इस कदम को संविधानेत्तर कदम बताया जिसका कोई महत्व नहीं है।

लाल सागर में कंटेनर पर मिसाइल हमला, हूती बागियों पर शक

एपी। यरुशलम

यमन के हूती विद्रोहियों ने लाल सागर में सोमवार को एक कंटेनर पोत को निशाना बनाकर कथित रूप से मिसाइल से हमला किया। अधिकारियों ने यह जानकारी दी।

इस अहम समुद्री मार्ग पर अंतरराष्ट्रीय पोतों के खिलाफ उनके अभियान की कड़ी में नया हमला है।

ब्रिटेन की सेना की यूनाइटेड किंगडम मेरीटाइम ट्रेड ऑपरेशंस सेंटर ने कहा कि यह हमला यमन में मोखा के अपतटीय क्षेत्र में हुआ। इसके अलावा उसने और कोई जानकारी उपलब्ध नहीं कराई।

उसने क्षेत्र से गुज़रने के दौरान पोतों से सतर्कता बरतने का आग्रह किया।

निजी सुरक्षा कंपनी अम्ब्रे ने कहा कि माल्टा का ध्वज लगे कंटेनगर पोत को तीन मिसाइल के जरिए निशाना बनाया गया है। यह कंटेनर ज़बूती से सउदी अरब के जेद्दा की ओर जा रहा था।

अम्ब्रे ने कहा कि पोत को इसलिए निशाना बनाया गया, क्योंकि इसके सूचीबद्ध संचालक का इज़राइल के साथ व्यापारिक संबंध है।

यूक्रेन में जन्मी अमेरिकी सांसद ने अपनी मातृभूमि की मदद संबंधी प्रस्ताव के खिलाफ मतदान किया

एपी। शेरिडन (अमेरिका)

यूक्रेन में जन्मी पहली और इकलौती रिपब्लिकन सांसद विक्टोरिया स्पार्ट्ज ने अमेरिकी संसद में, रूस के खिलाफ युद्ध में अपने मूल देश का सबसे पहले समर्थन किया था लेकिन जब हाल में सदन में युद्ध प्रयास के तहत यूक्रेन को 61 अरब डॉलर की अतिरिक्त सहायता देने का प्रस्ताव आया तो उन्होंने इसके खिलाफ वोट किया। इसके बजाय उन्होंने अमेरिकी निधि की बेहतर निगरानी का आह्वान किया और यूक्रेन को ब्लैंक चेक देने का विरोध किया। उन्होंने कहा कि अमेरिका की सीमा सुरक्षा ज्यादा बड़ी प्राथमिकता होनी चाहिए। उनका यह कदम सदन में उनकी पार्टी रिपब्लिकन और उनके इंडियाना कांग्रेसनल डिस्ट्रिक्ट के मतदाताओं के रुख के अनुरूप है।

इस सहायता पैकेज में इजराइल, ताइवान और अन्य देशों के लिए सहायता भी शामिल थी। सदन ने इसे 20 अप्रैल को स्वीकृति दे दी, सीनेट ने मंगलवार को इस पर मुहर लगाई और राष्ट्रपति जो बाइडन ने बुधवार को इस पर हस्ताक्षर कर इसे कानून की शक्ल दे दी। स्पार्ट्ज ने हाल में एक साक्षात्कार में कहा, मेरी जिम्मेदारी अमेरिकी लोगों की सुरक्षा है। इंडियाना राज्य के पूर्व प्रतिनिधि और राजनीतिक टिप्पणीकार माइक मर्फी ने एक साक्षात्कार में कहा कि इन दिनों यूक्रेन के लिए फंडिंग रिपब्लिकन मतदाताओं के लिए प्राथमिकता नहीं है।

स्पार्ट्ज ने दोबारा चुनाव लड़ने का फैसला किया है। 5वीं डिस्ट्रिक्ट सीट के लिए उनके ज्यादातर विरोधियों ने कहा है कि यूक्रेन को निधि भेजने से कहीं बड़ी प्राथमिकता अमेरिका-मेक्सिको सीमा की रक्षा होनी चाहिए।

गौरतलब है कि 2022 में एक संवाददाता सम्मेलन में भावुक दिखाई दीं स्पार्ट्ज ने यूक्रेन पर रूस के हमले को नरसंहार बताया था।

ब्रिटिश प्रधानमंत्री ने भारतवंशी शिक्षाविद को संग्रहालय के बोर्ड में फिर से नियुक्त किया

भाषा। लंदन

ब्रिटिश प्रधानमंत्री ऋषि सुनक ने पर्यावरणीय विज्ञान के क्षेत्र में भारतीय मूल के प्रतिष्ठित शिक्षाविद को लंदन के नेचुरल हिस्ट्री म्यूज़ियम बोर्ड के ट्रस्टी के रूप में फिर से नियुक्त कर दिया है।

ऑक्सफॉर्ड विश्वविद्यालय के प्रोफेसर यादविंदर माल्ही को चार साल के दूसरे कार्यकाल के लिए आधिकारिक रूप से इस महीने फिर से नियुक्त किया गया। प्रोफेसर माल्ही अवैतनिक सलाहकार की भूमिका में प्राकृतिक संरक्षण में संस्था की भूमिका की देखरेख करेंगे। उन्होंने कहा, मैं नेचुरल हिस्ट्री म्यूज़ियम बोर्ड में अगले चार वर्ष तक के लिए सेवा करने का मौका पाकर बहुत प्रसन्न हूं। मेरा लक्ष्य इस अद्भुत, सम्मानित और बहुचर्चित संस्थान को इसके अनुसंधान और लोक और नीतिगत जुड़ाव में समर्थन देना है। इससे पहले मई 2020 में उन्हें बोर्ड में पहली बार नियुक्ति मिली थी। ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के भूगोल और पर्यावरण स्कूल में पारिस्थितिकी तंत्र के प्रोफेसर माल्ही को 2020 में दिवंगत महारानी एलिजाबेथ द्वितीय के जन्मदिन के अवसर पर उनकी सेवाओं के लिए सीबीई (कमांडर ऑफ ब्रिटिश एंपायर) से सम्मानित किया गया था।

वरुण-सॉल्ट की तूफान में उड़ी दिल्ली कैपिटल्स

●कोलकाता नाइट राइडर्स सात विकेट से जीता, दूसरे स्थान पर अपनी स्थिति मजबूत की

भाषा। कोलकाता

वरूण चक्रवर्ती की अगुआई में गेंदबाजों के उम्दा प्रदर्शन के बाद सलामी बल्लेबाज फिल सॉल्ट के तूफानी अर्धशतक से कोलकाता नाइट राइडर्स ने इंडियन प्रीमियर लीग में सोमवार को यहां दिल्ली कैपिटल्स को सात विकेट हराकर दूसरे स्थान पर अपनी स्थिति मजबूत की। दिल्ली के 154 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए नाइट राइडर्स ने सॉल्ट की 33 गेंद में पांच छक्कों और सात चौकों से 68 रन की पारी की बदौलत 16.3 ओवर में तीन विकेट पर 157 रन बनाकर आसान जीत दर्ज की। सॉल्ट ने सुनील नारायण (15) के साथ पहले विकेट के लिए 79 रन की साझेदारी भी की। कप्तान श्रेयस अय्यर (नाबाद 33) और वेंकटेश अय्यर (नााबद 26) ने चौथे विकेट के लिए 57 रन की अटूट साझेदारी करके टीम को लक्ष्य तक पहुंचाया। इस जीत से नाइट राइडर्स के नौ मैच में छह जीत से 12 अंक हो गए हैं और वह दूसरे स्थान पर है। दिल्ली की टीम 11 मैच में 10 अंक के साथ छठे स्थान पर है। दिल्ली ने इससे पहले चक्रवर्ती (16 रन पर तीन विकेट), हर्षित राणा (28 रन पर दो विकेट) और वैभव अरोड़ा (29 रन पर दो विकेट) की धारदार गेंदबाजी के सामने नियमित अंतराल पर विकेट गंवाए और टीम नौ विकेट पर 153 रन ही बना सकी। नौवें नंबर पर बल्लेबाजी करने उतरे कुलदीप यादव (26 गेंद में नाबाद 35, पांच चौके, एक छक्का) दिल्ली की ओर से शीर्ष स्कोरर रहे जबकि उनके अलावा कप्तान ऋषभ पंत (20 गेंद में 27 रन, दो चौके एक छक्का) ही 20 रन के आंकड़े को पार कर पाए।लक्ष्य का पीछा करने उतरे नाइट राइडर्स को सॉल्ट ने तूफानी शुरुआत दिलाई। उन्होंने लिजाड विलियम्स की पहली गेंद पर चौके से खाता खोला और फिर इसी ओवर में लगातार गेंदों पर छक्का और चौका मारा। नारायण ने भी इसी ओवर में चौके से खाता खोला।अगले ओवर में सॉल्ट हालांकि भाग्यशाली रहे जब खलील अहमद की गेंद पर विलियम्स ने उनका कैच टपका दिया। सॉल्ट ने इसका फायदा उठाते हुए विलियम्स के अगले ओवर में लगातार दो छक्के मारे।
नारायण ने रसिक सलाम पर लगातार दो चौकों के साथ पांचवें ओवर में टीम के रनों का अर्धशतक पूरा किया। सॉल्ट ने खलील पर छक्के से सिर्फ 26 गेंद में अर्धशतक पूर किया। नाइट राइडर्स ने पावर प्ले में बिना विकेट खोए 79 रन बनाए।

स्कोरबोर्ड

दिल्ली कैपिटल्स: साव का सॉल्ट बो अरोड़ा 13, फ्रेजर-मैकगर्क का वेंकटेश अय्यर बो स्टार्क 12,पोरेल बो राणा 18, होप बो अरोड़ा 06,पंत का श्रेयस अय्यर बो चक्रवर्ती 27,पटेल बो नारायण 15,टब्स का सॉल्ट को चक्रवर्ती 04,कुशाग्र का सॉल्ट बो चक्रवर्ती 01,कुलदीप यादव 35,सलाम का श्रेयस अय्यर बो राणा 08,विलियम्स नाबाद 01,**अतिरिक्त:** 13,**कुल:**20 ओवर मे नौ विकेट पर:153 रन, **विकेट पतन:**1-17, 2-30, 3-37, 4-68, 5-93, 6-99, 7-101, 8-111, 9-140,**गेंदबाजी:** स्टार्क 3-0-43-1,अरोड़ा 4-0-29-2,राणा 4-0-28-2,नारायण 4-0-24-1,चक्रवर्ती 4-0-16-3,रसेल1-0-10-0

कोलकाता नाइट राइडर्स: सॉल्ट बो अक्षर 68,नारायण का फ्रेजर-मैकगर्क बो अक्षर 15, रिंकू का कुलदीप बो विलियम्स 11, अय्यर नाबाद 33,वेंक्टेश नाबाद 26,**अतिरिक्त:** 04,**कुल:**16.3 ओवर मे तीन विकेट पर: 157 रन, **विकेट पतन:**1-79, 2-96, 3-100, **गेंदबाजी:** विलियम्स 3-0-38-1,खलील 3-0-28-0,रसिक2.3-0-30-0,अक्षर 4-0-25-2, कुलदीप 4-0-34-0

टी-20: राष्ट्रीय चयनकर्ता मंगलवार को अहमदाबाद में बैठक करेंगे

भाषा। नई दिल्ली

अजीत अगरकर की अगुवाई वाली राष्ट्रीय चयन समिति अमेरिका और वेस्टइंडीज में होने वाले आईसीसी टी20 विश्व कप की 15 सदस्ईय भारतीय टीम को अंतिम रूप देने के लिए मंगलवार को अहमदाबाद में भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) के सचिव जय शाह से मुलाकात करेगी लेकिन टीम की आधिकारिक घोषणा एक दिन बाद हो सकती है।बीसीसीआई सचिव सीनियर चयन समिति (पुरुष) के संयोजक हैं और उनके अपनी राजनीतिक प्रतिबद्धताओं में व्यस्त होने के कारण यह समझा जाता है कि बैठक अहमदाबाद में होगी। दूसरे विकेटकीपर का स्थान और टीम में ऑलराउंडर हार्दिक पंड्या का स्थान चयन बैठक में चर्चा के दो महत्वपूर्ण बिंदू होंगे। ऐसा समझा जाता है कि लोकेश राहुल (आईपीएल में अब तक 144 के स्ट्राइक रेट और 378 रन) और संजू सैमसन (161 के स्ट्राइक रेट से 385 रन) के बीच दूसरे विकेटकीपर के स्थान के लिए अब भी संघर्ष चल रहा है। राजस्थान रॉयल्स के कप्तान सैमसन ने एक दशक से भी अधिक समय में पहली बार अपनी आईपीएल टीम के लिए लगातार अच्छा प्रदर्शन किया है लेकिन तीसरे नंबर पर बल्लेबाजी के आधार पर उन्हें भारतीय टीम में जगह नहीं मिल सकती। एक अन्य धारणा यह है कि 25 टी20 अंतरराष्ट्रीय मुकाबलों के दौरान सिर्फ 20 के औसत और लगभग 135 के स्ट्राइक रेट से रन बनाने वाले सैमसन को केवल एक अच्छे आईपीएल सत्र के आधार पर टीम में शामिल नहीं किया जा सकता।

टी20 विश्व कप के लिए न्यूजीलैंड टीम का ऐलान, विलियमसन को कमान

आकलैंड। केन विलियमसन चौथी बार टी20 विश्व कप में न्यूजीलैंड की कमान संभालेंगे जबकि अंगूठे की चोट से उबर रहे सलामी बल्लेबाज डेवोन कोंवे को भी जून में अमेरिका और वेस्टइंडीज में होने वाले टूर्नामेंट के लिए 15 सदस्ईय टीम में शामिल किया गया है। कोंवे अंगूठे की चोट के कारण इंडियन प्रीमियर लीग से बाहर है। टीम में गेंदबाज मैट हेनरी और बल्लेबाजी हरफनमौला रचिन रविंद्र ही दो खिलाड़ी हैं जो पहले टी20 विश्व कप नहीं खेले हैं। विलियमसन छठी बार टी20 विश्व कप खेलेंगे। वहीं टिम साउदी का यह सातवां टी20 विश्व कप होगा। न्यूजीलैंड क्रिकेट के केंद्रीय अनुबंध से बाहर रहने वाले ट्रेंट बोल्ट को पांचवीं बार टी20 विश्व कप टीम में जगह मिली है। तेज गेंदबाज बेन सीयर्स भी टीम के साथ कवर के तौर पर रहेंगे। टखने की चोट के कारण एडम मिल्ने बाहर हैं जबकि काइल जैमीसन कमर की चोट के कारण टीम में नहीं हैं।

वेलावन सेंथिल कुमार ने बाश ओपन स्क्वाश जीता

पेरिस। भारत के वेलावन सेंथिल कुमार ने बाश ओपन चैलेंजर टूर्नामेंट जीत लिया है जो प्रोफेशनल स्क्वाश एसोसिएशन टूर पर उनका आठवां खिताब है। दुनिया के 58वें नंबर के खिलाड़ी सेंथिल कुमार ने फ्रांस के मेलविल स्क्यानिमानिको को 11-6, 11-9, 11-6 से हराया। सेंथिल ने जीत के बाद कहा , मेलविल ने बेहतरीन खेल दिखाया। मुझे शुरू ही से सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करना पड़ा और मुझे खुशी है कि मै ऐसा कर सका।

दीक्षा एलईटी ऑर्डर ऑफ मेरिट में शीर्ष 10 में

केपटाउन। भारतीय गोल्फर दीक्षा डागर इन्वेस्टेक दक्षिण अफ्रीका महिला ओपन में एक और अच्छे प्रदर्शन के बाद लेडीज यूरोपियन टूर (एलईटी) के ऑर्डर ऑफ मेरिट के शीर्ष -10 मे पहुंच गईं।दीक्षा अब 455 अंकों के साथ एलईटी मे नौवें स्थान पर है। इंग्लैंड के ब्रोटे लॉ शीर्ष पर है। प्रणवी उर्स अपने पहले वर्ष मे 25वें स्थान के साथ अगली सर्वश्रेष्ठ भारतीय है। दीक्षा का आगामी पेरिस ओलंपिक खेलो मे भाग लेना लगभग तय है जो तोक्या में पहली बार ओलंपिक में भाग लेने के बाद उनका दूसरा ओलंपिक होगा। वह अदिति अशोक के साथ खेलेंगी, जो अपने तीसरे ओलंपिक मे खेलेंगी।

आर्सनल और मैनचेस्टर सिटी जीते, खिताब की दौड़ कड़ी

लंदन। आर्सनल ने टोटेनहम हॉट्सपर को 3-2 से हरा दिया जबकि गत चैम्पियन मैनचेस्टर सिटी ने नॉटिंघम फॉरेस्ट को 2-0 से शिकस्त देकर प्रीमियर लीग फुटबॉल खिताब की दौड़ को रोचक बना दिया है। आर्सनल ने एक बार 3-0 से बढ़त बना ली थी लेकिन आखिरी 20 मिनट मे दो गोल गंवा दिए। पियरे एमिली एच के आत्मघाती गोल और साका तथा केइ हेवटर्ज के गोल के दम पर आर्सनल को बढत मिली लेकिन दूसरे हाफ मे क्रिस्टियन रोमेरो और सोन हियुंग मिन ने टोटेनहम के लिए गोल कर दिए।

गेंदबाजों से एक कदम आगे रहते हैं गायकवाड़ : हस्सी

चेन्नई। चेन्नई सुपर किंग्स के बल्लेबाजी कोच माइकल हस्सी ने कहा कि गेंदबाजों से एक कदम आगे रहने की क्षमता के कारण ही रूतुराज गायकवाड़ को आईपीएल के मौजूदा सत्र में इतनी सफलता मिली। पिछले मैच में नाबाद 108 रन बनाने के बाद चेन्नई के कप्तान गायकवाड़ ने सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ 98 रन बनाए। हस्सी ने कहा , गायकवाड़ इतना शानदार खिलाड़ी है। मै उससे पूछता रहता हूं कि उसके शानदार प्लेसमेंट का राज क्या है क्योंकि उसे हमेशा फील्डर के बीच मे जगह मिल जाती है।

मुंबई पर जीत से पिछला गम भुलाने उतरेगी एलएसजी

●लखनऊ और मुंबई के मुकाबले में नजरें राहुल पर

लखनऊ । प्लेऑफ में आसानी से पहुंचने के लिए लखनऊ सुपरजाइंट्स को अपने घरेलू मैदान में हर हाल में जीतना होगा। पिछले मैच में राजस्थान से हार का गम भुलाने के लिए लखनऊ मंगलवार को मुंबई इंडियंस के खिलाफ जीत से अपने शहर वालों को खुश करने की कोशिश करेगी। वहीं टी20 विश्व कप के लिए भारतीय टीम के चयन से पहले केएल राहुल के लिए दूसरे विकेटकीपर के रूप में चयन का दावा पुख्ता करने का एक और मौका होगा जब उनकी कप्तानी वाली लखनऊ सुपर जाइंट्स इंडियन प्रीमियर लीग के मैच में मंगलवार को मुंबई इंडियंस से खेलेगी। टी20 क्रिकेट में राहुल का स्ट्राइक रेट चिंता का सबब रहा है। पावरप्ले में फील्डिंग पाबंदियों के बावजूद राहुल आईपीएल में धीमी शुरूआत करते आए हैं। उन्होंने हालांकि इस सत्र में इसमें बदलाव किया। अभी तक वह 2024 सत्र में 144 . 27 की औसत से 378 रन बना चुके हैं। वैसे ऋषभ पंत का स्ट्राइक रेट 160 . 60 और संजू सैमसन का 161 . 08 रहा है। पंत की जगह टी20 विश्व कप टीम में लगभग पक्की है चूंकि विकेटकीपिंग और बल्लेबाजी दोनों में उन्होंने शानदार प्रदर्शन किया है। वहीं राजस्थान रॉयल्स के लिए आक्रामक पारियां खेलकर संजू ने भी अपना दावा मजबूती से रखा है। ऐसे में राहुल को अधिक आक्रामक खेलना होगा ताकि उनकी टीम बड़ा स्कोर बना सके और वह भी अपना दावा मजबूत कर सके। लखनऊ को पिछले मैच में राजस्थान रॉयल्स ने सात विकेट से हराया था। अब क्विंटोन डिकॉक, मार्कस स्टोइनिस और निकोलस पूरन पर तेजी से रन बनाने की जिम्मेदारी होगी। उनके सामने मुंबई का गेंदबाजी आक्रमण है जिसे दिल्ली कैपिटल्स के बल्लेबाजों ने रविवार को मैदान के चारों ओर धुना था। युवा जैक फ्रेसर मैकगुर्क के स्ट्रोक्स का मुंबई के गेंदबाजों के पास कोई जवाब नहीं था। जसप्रीत बुमराह जैसे विश्व स्तरीय गेंदबाज ने भी 19 रन पहले ओवर में दे डाले। ल्यूक वुड और हार्दिक पंड्या तो काफी महंगे साबित हुए। मुंबई की टीम अंकतालिका में नौवे स्थान पर है और प्लेआफ की दौड़ में बने रहने के लिए उसे सारे मैच जीतने होंगे। भारतीय कप्तान रोहित शर्मा और टी20 में नंबर एक बल्लेबाज सूर्यकुमार यादव से उम्दा पारियों की उम्मीद होगी। इस सत्र में बल्ले और गेंद दोनों से नाकाम रहे हार्दिक को विश्व कप टीम में जगह बनाने के लिए अच्छा प्रदर्शन करना होगा।

लखनऊ में दिखा रोहित का क्रेज

मयंक फिटनेस परीक्षण में सफल, कल टीम में शामिल होंगे: मोर्कल

लखनऊ। भारत की नई तेज गेंदबाजी सनसनी मयंक यादव पेट के निचले हिस्से मे खिंचाव से पूरी तरह उबर गए है और उम्मीद है कि मंगलवार को यहां मुंबई इंडियंस के खिलाफ लखनऊ सुपर जाइंट्स के घरेलू आईपीएल मैच मे उन्हें अंतिम 12 मे शामिल किया जा सकता है।लगातार 155 किमी प्रति घंटा से अधिक की रफ्तार से गेंदबाजी करने वाले मयंक को पहले दो मैचों में मैच के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी का पुरस्कार मिला लेकिन तीसरे मैच मे एक ओवर फेंकने के बाद उन्हे खिंचाव का सामना करना पड़ा।ह 21 वर्षीय तेज गेंदबाज तीन सप्ताह के रिहैबिलिटेशन के बाद दोबारा फिटनेस के शीर्ष स्तर पर पहुंच गया है।ुपर जाइंटस के गेंदबाजी कोच मोर्ने मोर्कल ने मैच से पूर्व प्रेस कांफ्रेंस मे कहा, मयंक फिट है और उसने अपने सभी फिटनेस परीक्षण पास कर लिए है और हम कल संभावित 12 खिलाड़ियों मे उसकी वापसी को लेकर उत्साहित है। मयंक ने अब तक तीन मैच मे छह विकेट लिए है।

हमेशा से बल्लेबाजों का खेल रहा है टी20, इस आईपीएल में एक कदम और आगे : कमिंस

चेन्नई। सनराइजर्स हैदराबाद के कप्तान पैट कमिंस का मानना है कि टी20 प्रारूप हमेशा से बल्लेबाजों के अनुकूल रहा है और इंडियन प्रीमियर लीग के मौजूदा सत्र मे तो यह एक कदम और आगे चला गया है। सनराइजर्स को चेन्नई सुपर किंग्स ने रविवार को 78 रन से हराया। आईपीएल के इस सत्र मे छह बार 250 से अधिक का स्कोर बन चुका है और 200 रन बनाकर भी जीत की गारंटी नही है। इससे पहले आईपीएल के इतिहास मे दो ही बार 250 से अधिक का स्कोर बना था। कमिंस ने मैच के बाद कहा , टी20 हमेशा से बल्लेबाजों का खेल रहा है और इस सत्र मे तो यह एक कदम आगे चला गया। हमारे पास गेंदबाजी के अधिक विकल्प नही है और आक्रामक बल्लेबाजी करके ही हम जीत सकते है। चेन्नई से मिली हार पर उन्होंने कहा , कोई एक कारण नही बताा जा सकता। कुछ भी हमारी योजना के अनुरूप नही रहा। हम लक्ष्य का पीछा कर सकते थे लेकिन कर नही सके। हमे इस पर काम करना होगा।

तीरंदाज दीपिका कुमारी टॉप्स में फिर शामिल

नई दिल्ली। शंघाई मे हाल ही मे हुए विश्व कप मे रजत पदक जीतने वाली दुनिया की पूर्व नंबर एक तीरंदाज दीपिका कुमारी को पेरिस ओलंपिक से पहले टारगेट ओलंपिक पोडियम स्कीम (टॉप्स) मे फिर शामिल किया गया है। दिसंबर 2022 मे मां बनने के बाद पिछले साल पूरे सत्र मे बाहर रही दीपिका ने हाल ही मे वापसी की है और घरेलू तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अच्छा खेल रही है। तीन बार की ओलंपियन रिकर्व तीरंदाज दीपिका ने इस साल एशिया कप मे भी पदक जीता। अभी तक पुरूषों के व्यक्तिगत वर्ग में सिर्फ धीरज बोम्मादेवरा ओलंपिक के लिए क्वालीफाई कर सके है। आखिरी क्वालीफाइंग टूर्नामेंट तुर्की के अंताल्या मे 15 और 16 जून को होगा। खेल मंत्रालय द्वारा जारी बयान के अनुसार तीरंदाज मृणाल चौहान को भी टॉप्स विकास ग्रुप में शामिल किया गया है जबकि प्रवीण जाधव को विकास से कोर ग्रुप में डाला गया है। पैरा पावरलिफ्टर अशोक को भी कोर ग्रुप मे रखा गया है। मिशन ओलंपिक सेल (एमओसी) ने 133वीं बैठक में स्क्वाश खिलाड़ी अनाहत सिंह, अभय सिंह और वेलावन सेंथिल कुमार को भी टॉप्स विकास ग्रुप मे रखा है ताकि वे 2028 लॉस एंजिलिस खेलो की तैयारी कर सकें।

बादाम से बढ़ सकती है इम्युनिटी और फिटनेस

कानपुर। मौसम बदलने के साथ ही अपने इम्युन सिस्टम (रोग-प्रतिरोधक प्रणाली) को मजबूत करने और सही आकार में बने रहने के लिये सेहत से भरे और संतुलित आहार लेने पर ध्यान देना महत्वपूर्ण हो जाता है। इससे आप फिट भी रहते हैं। शीला कृष्णास्वामी, न्यूट्रीशन एवं वेलनेस कंसल्टेंट ने कहा अपने रोजाना के भोजन में बादाम, मौसमी फलों और सब्जियों जैसे प्राकृतिक आहारों को शामिल करने से शरीर की बीमारियों से लड़ने के लिये जरूरी ताकत बढ़ सकती है। हम उन 4 प्राकृतिक आहारों के बारे में बता रहे हैं, जो आपकी इम्युनिटी में सहयोग दे सकते हैं और मौसमी बुखार तथा बीमारियों को दूर रखने में मददगार हो सकते हैं। इम्युनिटी बढ़ाने वाले 4 प्राकृतिक आहार हैं बादाम, सिट्रस फल, लहसुन और हरी पत्तेदार सब्जियाँ । बादाम केवल स्वादिष्ट नहीं होती है, बल्कि इसमें विटामिन ई, ज़िंक, फोलेट और आयरन जैसे पोषक-तत्व भी होते हैं, जो इम्युन फंक्शन के लिये मायने रखते हैं। रोजाना स्नैक के तौर पर मुट्ठीभर बादाम खाएं या अपने सुबह के नाश्ते में उन्हें शामिल करें। इससे पौष्टिकता बढ़ेगी। सिट्रस फल सिट्रस फल, जैसे कि नारंगी, नींबू, मौसम्बी और अंगूर में विटामिन सी की अच्?छी मात्रा होती है। यह पोषक-तत्व श्वेत रक्त कणिकाएं बनाने के लिये आवश्यक है, जोकि संक्रमणों से शरीर की रक्षा करती हैं। लहसुन के चिकित्सकीय इस्तेमाल का एक लंबा इतिहास है। उसे जीवाणुरोधी गुणों के लिये जाना जाता है, जिसका कारण एक प्राकृतिक यौगिक एलिसिन है। अपने भोजन में लहसुन को शामिल करने से न सिर्फ उसका स्वाद बढ़ता है, बल्कि सूक्ष्मजीवों से लड़ने में मदद भी मिलती है। हरी पत्तेदार सब्जियाँ, जैसे कि पालक, सूरजना की पत्तियाँ, अमरंत पत्तियाँ, पुदीना और अन्य में ऐसे विटामिन और एंटीऑक्सीडेंट होते हैं, जिनकी इम्युन फंक्शन में भूमिका होती है।

कर्स्टर्न का लक्ष्य अपने दो साल के कार्यकाल में कम से कम एक आईसीसी ट्रॉफी जीतना

कराची। पाकिस्तान के नवनियुक्त मुख्य कोच गैरी कर्स्टन ने राष्ट्रीय क्रिकेट टीम के लिए एक सामान्य लक्ष्य रखा है कि उसे अगले तीन साल में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) के तीन टूर्नामेंटो मे से कम से कम एक ट्रॉफी जीतनी होगी। अब और 2026 के बीच होने वाली प्रमुख प्रतियोगिताओ मे 2024 (अमेरिका और वेस्टइंडीज) और 2026 (भारत) मे दो टी20 विश्व कप के साथ-साथ 2025 एकदिवसीय चैंपियंस ट्रॉफी भी शामिल है जिसकी मेजबानी पाकिस्तान करेगा। भारत की विश्व कप विजेता टीम के मुख्य कोच रह चुके कर्स्टन चाहते है कि बाबर आजम और उनकी टीम कम से कम एक टूर्नामेंट जीते। वर्तमान मे आईपीएल टीम गुजरात टाइटंस के मार्गदर्शक (मेंटर) कर्स्टन को रविवार को वनडे और टी20 अंतरराष्ट्रीय के लिए पाकिस्तान का मुख्य कोच नियुक्त किया गया।दक्षिण अफ्रीका के पूर्व बल्लेबाज कर्स्टन के पाकिस्तान के इंग्लैंड दौरे से पहले 22 मई से अपनी नई जिम्मेदारी संभालने की उम्मीद है।

कुछ ऐसा बनने की कोशिश मत करो जो तुम नहीं हो: गिलेस्पी का पाकिस्तान टीम को संदेश

लाहौर। पाकिस्तान के नए मुख्य कोच जेसन गिलेस्पी चाहते है कि उनके प्रतिभाशाली खिलाड़ी वास्तविक बने रहे और किसी विशिष्ट पद्धति के अनुरूप अपने खेल मे बदलाव नही करे। उनका कहना है कि टेस्ट क्रिकेट मे आगे बढ़ने के लिए उन्हे केवल सकारात्मक और आक्रामक रहने की जरूरत है। पाकिस्तान ने रविवार को ऑस्ट्रेलिया के पूर्व तेज गेंदबाज गिलेस्पी को पुरुष टेस्ट टीम का कोच नियुक्त किया जबकि सफेद गेंद के प्रारूप मे कोच की भूमिका दक्षिण अफ्रीका के पूर्व बल्लेबाज गैरी कर्स्टन को सौपी गई है जिनके मार्गदर्शन मे 2011 मे भारत ने एकदिवसीय विश्व कप जीता था। वर्ष 2014 और 2015 मे यॉर्कशर को काउंटी चैंपियनशिप खिताब दिलाने वाले 49 वर्षीय गिलेस्पी ने पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) के साथ दो साल के अनुबंध पर हस्ताक्षर किए है।

पीसीबी ने चैम्पियंस ट्रॉफी के लिए लाहौर, कराची, रावलपिंडी को चुना

लाहौर। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड ने अगले साल चैम्पियंस ट्रॉफी के लिए कराची, लाहौर और रावलपिंडी को चुना है। भारत की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए हाइब्रिड मॉडल की अटकलों के बीच पीसीबी ने कहा है कि टूर्नामेंट पाकिस्तान मे ही होगा। पिछली बार इंग्लैंड मे 2017 मे हुई चैम्पियंस ट्रॉफी अगले साल फरवरी मार्च मे हो सकती है। भारत ने अभी तक अपनी भागीदारी की पुष्टि नही की है और ऐसी अटकलें है कि आईसीसी हाइब्रिड मॉडल का उपयोग करके भारत के मैच तटस्थ स्थान पर करा सकता है, अगर भारतीय टीम को सरकार से यात्रा की मंजूरी नही मिलती है तो। आईसीसी ने साफ तौर पर कहा है कि वह किसी सदस्य देश को उसकी सरकारी नीति का उल्लंघन करने को नही कहेगा। पीसीबी अध्यक्ष मोहसिन नक्वी ने कहा , हमने आईसीसी चैम्पियंस ट्रॉफी के मैचो के लिए शेड्यूल भेज दिया है। आईसीसी के सुरक्षा दल से बैठक अच्छी रही। उन्होने इंतजामात का जायजा लिया और हमने भी उन्हे सारी जानकारी दी। पिछले साल एशिया कप का आयोजन भी हाइब्रिड मॉडल पर किया गया था।

थॉमस कप : इंग्लैंड को 5-0 से हराकर भारत क्वार्टर फाइनल में

चेंगडू (चीन)। गत चैम्पियन भारत ने इंग्लैंड को 5-0 से हराकर थॉमस कप बैडमिंटन के क्वार्टर फाइनल में प्रवेश कर लिया। भारत ने पहले मैच में थाईलैंड को 4-1 से हराया था। एच एच प्रणय ने हैरी हुआंग को 21-15, 21-15 से हराकर भारत को बढत दिलाई। सात्विक साइराज रंकीरेड्डी और चिराग शेट्टी की जोड़ी ने बेन लेन और सीन वेंडी को युगल मुकाबले में 21-17, 19-21, 21-15 से हराया। दुनिया के पूर्व नंबर एक खिलाड़ी किदाम्बी श्रीकांत ने नदीम दलवी को 21-16, 21-11 से हराकर भारत को 3- 0 से बढत दिला दी। दूसरी युगल टीम एम आर अर्जुन और ध्रुव कपिला ने रोरी ईस्टन और एलेक्स ग्रीन को 21 -17, 21 -19 से हराया। आखिरी मैच में किरण जॉर्ज ने चोलान कायान को 21-18, 21-12 से मात दी। भारत का सामना आखिरी ग्रुप मैच में 14 बार के चैम्पियन इंडोनेशिया से होगा।

पेरिस में हिस्सा लेंगे सात भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ी

नई दिल्ली। पूर्व विश्व चैंपियन पीवी सिंधू सहित सात भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ियो ने अपनी ओलंपिक खेल क्वालीफिकेशन रैंकिंग के आधार पर चार वर्ग मे पेरिस खेलो के लिए आधिकारिक तौर पर क्वालीफाई किया। सिंधू और शीर्ष एकल पुरूष खिलाड़ी एचएस प्रणय और लक्ष्य सेन ने बहुत पहले ही ओलंपिक मे जगह पक्की कर ली थी और इसकी औपचारिक्ता सोमवार को पूरी हुई जो अंतरराष्ट्रीय बैडमिंटन महासंघ (बीडब्ल्यूएफ) द्वारा निर्धारित कट ऑफ तारीख थी। पात्रता नियमो के अनुसार कट ऑफ तारीख पर ओलंपिक खेल क्वालीफिकेशन रैंकिंग के आधार पर पुरूष और महिला एकल मे शीर्ष 16 बैडमिंटन खिलाड़ी ओलंपिक के लिए क्वालीफाई करते है। पूर्व विश्व चैंपियन और ओलंपिक रजत तथा कांस्य पदक विजेता सिंधू 12वें स्थान पर रही जबकि पुरूष एकल मे प्रणय और लक्ष्य क्रमशः नौवें और 13वें स्थान पर रहे। सात्विकसाईराज रंकीरेड्डी और चिराग शेट्टी की पुरूष युगल जोड़ी ओलंपिक क्वालीफिकेशन चक्र के अंत मे तीसरे स्थान पर रही और बैडमिंटन में देश के लिए सर्वश्रेष्ठ पदक उम्मीदों मे से एक के रूप मे ओलंपिक मे जाएगी। महिला युगल मे तनीषा क्रास्टो और अश्विनी पोनप्पा की भारतीय जोड़ी ने क्वालीफिकेशन चक्र के अंत मे 13वें स्थान पर रहकर क्वालीफाई किया। त्रीसा जॉली और गायत्री गोपीचंद की महिला युगल जोड़ी हालांकि क्वालीफाई करने से चूक गई।

डब्ल्यूएफआई ने इस्तांबुल में ओलंपिक क्वालीफायर टीम में नहीं किया कोई बदलाव

नई दिल्ली। भारतीय कुश्ती महासंघ (डब्ल्यूएफआई) ने नए ट्रायल के लिए समय की कमी के कारण अगले महीने इस्तांबुल में अंतिम ओलंपिक क्वालीफाइंग टूर्नामेंट के लिए लगभग उसी टीम का चयन किया है जिसने बिश्केक में एशियाई क्वालीफायर में भाग लिया था। इस्तांबुल में नौ से 13 मई तक होने वाले विश्व ओलंपिक खेल क्वालीफायर में एशियाई क्वालीफायर की टीम में शामिल तीन पहलवानों 2018 एशियाई खेलों की स्वर्ण पदक विजेता विनेश फोगाट (50 किग्रा), अंशू मलिक (57 किग्रा) और अंडर 23 विश्व चैंपियन रितिका (76 किग्रा) को शामिल नहीं किया गया है क्योंकि इन्होंने पिछले महीने बिश्केक में कोटा स्थान पक्का कर लिया था। पता चला है कि डब्ल्यूएफआई बिश्केक में भारतीय पुरुष टीम के खराब प्रदर्शन से नाखुश था और अंतिम ओलंपिक क्वालीफाइंग प्रतियोगिता की टीम का चयन करने के लिए नए सिरे से ट्रायल आयोजित करने की योजना बना रहा था। लेकिन डब्ल्यूएफआई के एक सूत्र ने कहा कि बिश्केक में एशियाई ओलंपिक क्वालीफायर और इस्तांबुल प्रतियोगिता के बीच बहुत सीमित समय के कारण उसे नए सिरे से ट्रायल आयोजित करने के विचार को टालने के लिए मजबूर होना पड़ा। सूत्र ने कहा कि अगर महासंघ के पास एशियाई प्रतियोगिता और इस्तांबुल में आगामी विश्व ओलंपिक खेल क्वालीफायर के बीच एक महीने का समय होता तो भी वह पेरिस खेलों के आखिरी क्वालीफायर के लिए नए सिरे से ट्रायल आयोजित कराता। नए सिरे से ट्रायल आयोजित करने के लिए शायद ही कोई समय था।

भारतीय टीमः फ्रीस्टाइलः अमन (57 किग्रा), सुजीत (65 किग्रा), जयदीप (74 किग्रा), दीपक पूनिया (86 किग्रा), दीपक (97 किग्रा), सुमित (125 किग्रा)। ग्रीको रोमनः सुमित (60 किग्रा), आशु (67 किग्रा), विकास (77 किग्रा), सुनील कुमार (87 किग्रा), नितेश (97 किग्रा), नवीन (130 किग्रा)। महिला कुश्तीः मानसी (62 किग्रा), निशा (68 किग्रा)।

यूनाइटेड वी प्ले ट्रायल में खिलाड़ियों ने दिखाया दम

लखनऊ। अग्रणी टायर निर्माता अपोलो टायर्स के प्रमुख जमीनी स्तर के फुटबॉल कार्यक्रम यूनाइटेड वी प्ले-यूडब्ल्यूपीके लिए ट्रायल सप्ताहांत में लखनऊ में आयोजित किया गया था, जहां 380 से अधिक युवा फुटबॉलरों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। अंत मेंए ट्रायल में से 30 प्रतिभाशाली युवाओं को कार्यक्रम के अगले दौर के लिए चुना गयाए जो अगले महीने आयोजित किया जाएगा। ट्रायल गोमतीनगर एक्सटेंशन में टेक्ट्रो फुटबॉलअकाडेमी में आयोजित किए गए थे, जहां अंडर-14 और अंडर-17 श्रेणियों में लखनऊ और आसपासके क्षेत्रों के युवा उम्मीदवार अपने कौशल का प्रदर्शन करने और निर्णायकों को प्रभावित करने के लिए बड़ी संख्या में आए थे। यूनाइटेड वी प्ले कार्यक्रम एक जमीनी स्तर का प्रशिक्षण और प्रतिभा विकास पहल है जो भारत के 16 शहरों और एशिया प्रशांत मध्य पूर्व और अफ्रीका एपीएमईए के प्रमुख देशों में चल रही है, जो युवा फुटबॉल प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने और उन्हें अपना प्रदर्शन करने के लिए एक मंच देने के लिए मैनचेस्टर यूनाइटेड द्वारा समर्थित है और महत्वाकांक्षी फुटबॉलरों को खेलना जारी रखने के लिए प्रेरित करने और उन्हें वैश्विक प्रशिक्षण पद्धतियों से परिचित कराने के उद्देश्य से अपने कौशल का प्रदर्शन करने के लिए मंच प्रदान करता है । यह किसी भी उभरते हुए फुटबॉलर के लिए एक बहुत बड़ा अवसर हैए और मैं युवा फुटबॉलरों की अगली पीढ़ी को प्रेरित करने और विकसित करने के लिए इस शानदार अवसर को बनाने के लिए अपोलो टायर्स को धन्यवाद देना चाहता हूं। प्रतिभागी न केवल मैनचेस्टर यूनाइटेड के तरीके से खेलना सीखेंगेए बल्कि टीम वर्कए अनुशासन और दृढ़ संकल्प जैसे मूल्यवान जीवन कौशल भी सीखेंगेए जो भविष्य में उनकी मदद करेंगे।

बृजेश, सागर और सुमित के पदक पक्के

● एशियाई अंडर 22 मुक्केबाजी

भाषा। अस्ताना (कजाखस्तान)

भारत के बृजेश तामता, सागर जाखड़ और सुमित ने एशियाई अंडर 22 और युवा मुक्केबाजी चैम्पियनशिप के सेमीफाइनल में प्रवेश करके पदक पक्के कर लिए। बृजेश (48 किलो) ने उजबेकिस्तान के साबिरोव सैफिद्दीन को हराया। दोनों मुक्केबाजों ने एक एक दौर जीता लेकिन तीसरे दौर में भारतीय मुक्केबाज ने 4-3 से जीत दर्ज की। सागर (60 किलो) और सुमित (67 किलो) ने क्रमश: थाईलैंड के कलासीरम टी और कोरिया के होंग सियो जिन को 5-0 से हराया। जितेश को 54 किलोवर्ग में कजाखस्तान के टी नूरासिल ने 5-0 से मात दी। भारत के अब युवा वर्ग में आठ पदक पक्के हो गए हैं चूंकि पांच महिला मुक्केबाज अन्नु (48 किलो), पार्थवी ग्रेवाल (66 किलो), निकिता चंद (60 किलो), खुशी पूनिया (81 किलो) और निर्झरा बाना (प्लस 81 किलो) सेमीफाइनल से अपने अभियान का आगाज करेंगी। पेरिस ओलंपिक के लिए क्वालीफाई कर चुकी एशियाई खेलों की कांस्य पदक विजेता प्रीति (54 किलो) कल उजबेकिस्तान की उक्तामोवा निगिना से खेलेगी। भारतीय मुक्केबाजी महासंघ ने इस टूर्नामेंट में 50 सदस्ईय टीम भेजी है। इसमें 24 देशों के 390 से अधिक मुक्केबाज 25 भारवर्गों में भाग ले रहे हैं।

सनराइजर्स के बल्लेबाजों के सामने संयम रखना जरूरी था : तुषार देशपांडे

चेन्नई। सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ इंडियन प्रीमियर लीग के मैच में चार विकेट लेकर चेन्नई सुपर किंग्स की जीत के सूत्रधार बने तेज गेंदबाज तुषार देशपांडे ने कहा कि पावरप्ले में बेहद आक्रामक खेलने वाली सनराइजर्स के खिलाफ संयम रखना जरूरी था। चेन्नई ने पहले बल्लेबाजी के लिए भेजे जाने पर तीन विकेट पर 212 रन बनाए। जवाब में टूर्नामेंट में अब तक दो बार सर्वोच्च स्कोर का रिकॉर्ड बना चुकी सनराइजर्स 18 . 5 ओवर में 134 रन पर आउट हो गई। तीन ओवर में 27 रन देकर चार विकेट लेने वाले देशपांडे ने कहा , यह बेहतरीन प्रदर्शन था। हमारा एक ही लक्ष्य था कि सनराइजर्स जैसी टीम के सामने संयम रखना है क्योंकि वे पावरप्ले में काफी खतरनाक होते हैं। पावरप्ले में उस लैंग्थ से गेंदबाजी करना अहम था।

सीएमवाईके प्रिंटेक के लिए तथा उसी की ओर से मुद्रक एवं प्रकाशक शोबोरी गाँगुली द्वारा टिन टिन प्रिंटेक प्रा.लि. सी-33 अमौसी इंडस्ट्रियल एरिया, नादरगंज लखनऊ से मुद्रित एवं चौथी मंजिल, सहारा शापिंग सेंटर, फैजाबाद रोड, लखनऊ (फोन: 0522-4036600) से प्रकाशित। प्रधान सम्पादक: शोबोरी गाँगुली, स्थानीय सम्पादक: विजय प्रकाश सिंह। पाठकों को सुझाव दिया जाता है कि इस अखबार के किसी भी विज्ञापन पर प्रतिक्रिया करने से पहले पूरी तरह उसके बारे में दिए गए दावों, शर्तो और तथ्यों की जांच कर लें। पायनियर ग्रुप के मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक या उसका कोई भी कर्मचारी विज्ञापनदाता द्वारा उनके किसी उत्पाद तथा सेवा हेतु किए गए किसी दावे की सच्चाई का आश्वासन या उत्तरदायित्व नहीं लेता है। ऐसे विज्ञापनों के बाद किसी आर्थिक क्षति के लिए वे जिम्मेदार भी नहीं हैं।